बोरिस एदर

विदेशी भाषा प्रकाशन गृह

मास्को

अनुवादक – शकर गौर

चित्रकार–ग०, निकोल्स्की

БОРИС ЭДЕР

МОИ ПИТОМЦЫ

विषय - सूची

भूमिका

शेर, चीते, तेंदुए और सफेद रीछो के कटघरो में घुस जाना, उनके साथ खिलवाड करना या सरकस रिंग के ऊपर भरे रीछो को नचाना सालो साल यह मेरा रोज़ का धधा रहा है। केवल यह जानने के लिए कि मैंने इन वन्य पशुओ को कैसे साधा और इन क्रूर जन्तुओ से कई बार अपने-आपको कैसे बचाया, उन दिनो मेरे पास ढेरो ख़त आया करते थे।

पहले पहल तो मैंने सब पत्रो का उत्तर निहायत ईमानदारी और सचाई से देने की कोशिश की, पर जब मेरी डाक का थैला भारी होने लगा, तो इन जिज्ञासुओ को विस्तृत उत्तर देना सभव न रहा। बरबस, तत्सबधी पुस्तको की ओर मुझे उनका ध्यान आकृष्ट करना पडा। मै यह ख़ूब जानता था कि इन पुस्तको में मेरे पेशे के बारे में अधिक सामग्री नही मिलती और कई बार तो उनमें गलत बातें भी दी होती है। सरकस-विषयक पुस्तको मे प्राय पशु-शिक्षरण के बारे में बहुत सक्षेप में दिया होता है। मसलन, हैम्बर्ग के मशहूर चिडियाघर के सरक्षक और अन्तर्देशीय पशु व्यवसायी कार्ल हैगनबेक की सुपरिचित पुस्तक मे पशुओ की ट्रेनिंग के बारे मे निजी अनुभव बहुत थोडे दिये गये है। हा, एक पुस्तक इसका अपवाद अवश्य है—एल्फ्रेड ब्रेहम द्वारा लिखित 'पशु-जीवन'। यह कृति तथ्यो से भरपूर है परन्तु यह पुस्तक इतनी

बडी है कि सर्वसाधारण इससे लाभ नही उठा सकते। साथ ही ब्रेहम ने वन्य पशुओ के प्रशिक्षण की विशेष चर्चा नही की है।

तव मुझे यह लगा कि वन्य पशु सबधी ज्ञान मैं केवल पत्रव्यवहार द्वारा ही प्रसारित न करू, वल्कि उन सभी लोगो तक अपनी जानकारी पहुचाऊ जिन्हें सरकस से प्यार है या जिन्हे जानवरो से दिलचस्पी है। मेरी यह मन्शा विल्कुल नही थी कि मै कोई 'प्रदर्शिका' जैसी पुस्तिका लिख दू। मेरा उद्देश्य तो केवल लोगो को अपने अनुभव और वन्य पशुओ के प्रशिक्षण और प्रदर्शन के सोवियत सिद्धात वताना था।

पुराने समय में, यह धधा खान्दानी हुआ करता था—वाप का काम वेटा सभाल लेता था। हा, कभी कभी नये लोग भी इस काम में आ जाते थे—पशु-सरक्षक, शिक्षक, आदि। इन व्यक्तियो को भी पशुओ के सपर्क में आने के अवसर मिल जाते थे।

अपने विषय में मैं इतना वता दू कि जगली जानवर के कटघरे में सवसे पहली वार मेरा जाना अनायास ही हुआ था। वैसे, जगली जानवरो को ट्रेन करने का विचार पहले भी मेरे मन में आया था।

वचपन से मेरा सवध सरकस से रहा है। वाद मे मै झूले का कलावाज वन गया। मुझे वे करतव भी करने पडे जिनके लिए वहादुरी, चुस्ती और दम-खम की जरूरत होती है—यही गुण जगली जानवरो को ट्रेन करने वालो में होने आवश्यक हैं।

मुझे ऐसे लोगो से रश्क रहा है। पशु-मास्टर वनने की मेरी सदा से लालसा रही है। पर जानवरो की खरीद और उनके रख-रखाव के लिए काफी धन की आवश्यकता होती है। यह मेरी सामर्थ्य की वात न थी।

होते होते एक दिन, सन् १९२८ मे भाग्य की देवी मुझपर भी रीझी। मेरा एक सरकसी मित्र था—अनातोली दुरोव। यह एक प्रसिद्ध विदूषक का पुत्र था। दोस्ताना वातचीत में एक दिन मैंने उससे अपने दिल

की बात कह ही दी। थोडा सोचकर अनातोली दुरोव बोला "निश्चय ही, तुमसे यह काम खूब बन पडेगा। मै तुम्हारे लिए कुछ जानवरो का प्रबध करूगा।"

दुर्भाग्य से, एक मास पश्चात् ही अनातोली दुरोव शिकार दुर्घटना में मारा गया। इस प्रतिभाशाली सरकस-मास्टर की दुखद मृत्यु के कारण मेरा यह सपना एक ज़माने तक पूरा न हो सका।

उन दिनो हमारे देश में जगली जानवरो का एक मात्र सोवियत मास्टर था न० प० ग्लदीलश्चिकोव। बाद मे मैंने भी इस काम को अपनाया। इसका अर्थ था, एकदम नये सिरे से श्रीगणेश करना और नये नये परीक्षण कर अपनी कार्य-प्रणाली निश्चित करना। मैंने यह फैसला किया कि पहले जगली जानवरो को पालतू बनाने का काम शुरू किया जाये। मैंने उनकी आदतें व स्वभाव, यानी उनके व्यक्तित्व को समझने की कोशिश की। मै अपने जगली दोस्तो के कटघरो में इतनी इतनी देर तक रहता कि हम एक दूसरे के आदी हो गये और हमारे मनो का डर निकल गया। इन्हे समझने-बूझने के लिए बस इसी बात की आवश्यकता थी। सरकस के जिन साथियो ने मेरे रिहर्सल या करतब देखे, वे मेरे बारे में बहुत चिन्तित हो उठे। उनकी यह भविष्यवाणी थी कि मेरा अत अच्छा न होगा।

पर मैंने अपनी ही अक्ल से काम लिया, नये नये तजुर्बे जारी रखे। और, मेरी मेहनत का फल भी मुझे मिलना आरभ हो गया।

ट्रेनर लोग आम तौर पर एक तरह के जानवरो तक ही अपने आप को सीमित रखते है। लेकिन मैंने शेर, चीते, तेंदुए, सफेद और भूरे रीछ आदि सब ट्रेन किये है। इस प्रकार न केवल मेरा कार्य एव अनुसधान क्षेत्र ही विस्तृत हुआ, वरन् इससे यह भी सिद्ध हो गया कि पशुओ को सधाने का मेरा 'नरम' तरीका रिवाजी हिसक तरीके से कही अच्छा है।

मेरा काम कठिन और खतरनाक जरूर था, पर था दिलचस्प। पशुओ को ट्रेन करते करते मैं खुद भी ट्रेन हो गया—मेरी निरीक्षण शक्ति और सूझ-बूझ विकसित हो गयी। इस कार्य से मैंने सकट काल में शात रहने और पेचीदे मौको पर भी बाल बाल बच निकलने की क्षमता प्राप्त की।

मेरा काम आश्चर्यों से भरपूर था। आखिर, मेरा वास्ता भी तो जगली जानवरो से था। फिर भी मैं समझता हू, कि केवल डडे और डर के बल पर जानवरो को साधनेवाले ट्रेनरो की बनिस्बत मेरा काम कम जोखिम का था। बल-प्रयोग से हम पशुओ का विश्वास खो बैठते है, और दोनो पक्षो क सबधो में सदा के लिए दरार पड जाती है। पशु अपने ट्रेनर से भय तो खाता है, पर साथ ही उससे द्वेष भी रखने लगता है, और फिर सदा इसी ताक में रहने लगता है कि कब मौका मिले और वह कब हमला कर बदला ले।

पशुओ की दृश्य एव श्रव्य स्मरण-शक्ति प्राय अच्छी होती है। इस कारण उनका अपने ट्रेनरो के साथ शीघ्र ही अच्छा सबध स्थापित हो जाता है। अपने कई वर्षों के अनुभवो के आधार पर मैं इस परिणाम पर पहुचा हू कि इन विचित्रताओ को दृष्टि मे रख कर ही जानवरो को ट्रेन करना चाहिए।

यदि ट्रेनर पशु को यह किसी तरह समझा या याद करा सके कि उससे क्या अपेक्षा की जाती है, तो उसकी सफलता निश्चित है। फिर तो पशु स्वय उस कार्य को करने की कोशिश करेगा, और कुछ रिहर्सलो के बाद वह उस करतब को बहुत खूबी से करना सीख जायेगा।

इस काम की कठिनाइयो को कम मत समझिये। वन्य पशु हिंसक और घातक जीव होता है। जीवन निर्वाह के लिए इसे हत्या करनी ही पडती है। यह इसका स्वभाव है। फिर भी यदि उन्हे छोटी उम्र में ही पकड लिया जाय, तो अधिकतर वन्य पशुओ को पालतू बनाया जा

सकता है। यदि पकडे हुए जानवर को मारा-पीटा जाय, या उसे सताया, चिढाया जाय, तो वह भी उतना ही खूख्वार और दगाबाज़ बन जाता है, जितने कि जगल मे घूमनेवाले उसके भाई-बधु। यह तो स्पष्ट ही है कि बडे जानवरो को ट्रेन करना कठिन काम है, और इसके लिए ट्रेनर को बडे सयम से काम लेने की आवश्यकता है। साथ ही उसे इन वन्य पशुओ की प्रकृति से भी पूरी तरह परिचित होना चाहिए। इन पशुओ के साथ भी सद्व्यवहार का परिणाम अच्छा ही निकलता है।

वन्य पशुओ को सरकस के योग्य बनाने के लिए उनमे असाधारण कौशल का विकास करना आवश्यक होता है। उदाहरण के लिए, अफ्रीकी शेर को बॉल पर सवारी करना, बगाल के चीते को फदे मे से छलाग मारना और तेंदुए को रस्से पर चलना सिखाया जाता है। लेकिन ये अनोखे करतब जानवर तभी कर पाता है, जब यह इनके स्वभाव के अनुकूल पडता है। होशियार ट्रेनर को इन पशुओ की सहज प्रवृत्तियो से अनुचित लाभ नही उठाना चाहिए। अर्थात् सरकस सबधी क्षमता का अनुमान लगाने के लिए उसे इन पशुओ की प्रवृत्तियो और चेष्टाओ का अध्ययन कर लेना चाहिए।

प्रत्येक पशु का अपना व्यक्तित्व होता है। ट्रेनर तभी सफल हो सकता है जब वह पशुओ की चरित्र-सबधी विचित्रताओ को खूब समझकर सरकस में उनका उचित उपयोग कर सके।

कई पशुओ के साथ मुलायमी बरतना ठीक रहता है, मगर कइयो के साथ कडाई भी बरतनी पडती है। स्मरण-शक्ति के बारे मे भी यही बात है। कई जानवर तो बडी जल्दी बात को पकड लेते है, और कई देर में समझ पाते है। इसी तरह इनके मिजाजो में भी फर्क होता है। कई जानवर मद बुद्धि होते है, और कई बडे चुस्त-चालाक, कई सुस्त और कई फुर्तीले।

कहने का मतलव यह है कि ट्रेनर को पशुओ के चरित्र, स्मरण-शक्ति, मिज़ाज और अन्य विशेषताओ का अध्ययन करने के वाद ही सधाने का काम हाथ में लेना चाहिए।

एक वात और कह दू। सीखे हुए पशु का अनसीखे पशु पर वडा अच्छा प्रभाव पडता है। इससे ट्रेनर को सहायता मिलती है। नया जानवर हडवडाया और घबराया हुआ होता है। वह अपने मास्टर से सहमा रहता है। या तो उससे वचकर रहना चाहता है, या फिर उसपर हमला ही कर वैठता है। यदि उसके पिजडे मे सधाये हुए पशु हो, तो वह झट शात हो जाता है, और अपने साथियो की तरह सीधा वन जाता है।

कटघरे में वद पशु एक दूसरे के साथ कैसा वर्ताव करते है? सव का एक जैसा व्यवहार नही होता। कई पशुओ का व्यवहार मैत्रीपूर्ण होता है, कइयो का शत्रुवत्, और कई अलग-अलग रहना पसद करते है। पर, सधानेवाले को उनके पारस्परिक सवधो की जानकारी परमावश्यक है, क्योकि न जाने कव एक जानवर दूसरे जानवर पर हमला कर वैठे। ऐसी कई घटनाए हो चुकी है जव एक खूख्वार जानवर ने दूसरे जानवर की आते तक वाहर निकाल ली। ऐसे मौको पर दमकल से पानी फेककर ही उन जानवरो को छुडाना ठीक रहता है।

कई वार यह जानवर आलस की वजह से मुश्किल करतव करने से इन्कार कर वैठते है। मगर, जानवर सधानेवाला तो अपना काम रोक नही सकता। अत वह कुछ खिला-पिला कर, या कोडे का मजा चखा कर अपना काम निकाल लेता है। लेट जाने, सीढियो पर चढने, या टव में छलाग मारने वग़ैरह करतव करने के लिए उन्हें मजवूर कर लेना है। जव पशु को कोई पेचीदा करतव सिखाने होते है, तव उसे लवे रस्सो से काम लेना पडता है। ऐसे रस्से उनके पजो में वाव कर वह उन्हें कावू मे रखता है। उसे सावधानी, धैर्य और सयम से काम

लेना पडता है। गोश्त या दूसरी मन पसद चीज़ो का लालच देकर उन्हे उत्साहित करता हैं, ताकि जानवर न तो बुरा माने और न अधीर हो।

जानवरो को कठिन काम सिखाने के लिए ये सब बाते बडी जरूरी हैं।

जबानी हुक्म से काम लेना भी निहायत जरूरी है, क्योकि इसका जानवर पर बहुत अच्छा असर पडता है। अक्सर, जानवर सुनी हुई बात को खूब याद रखते हैं। अगर ट्रेनिग मास्टर ऊची-नीची आवाज़ में हुक्म दे तो जानवर इसे खूब समझते और याद रखते हैं।

हा, हुक्म छोटा होना चाहिए, मगर साफ और रोबदार आवाज में दिया जाना चाहिए। इसके विपरीत, हौसला बढाने के लिए जो शब्द कहे जाये, वे बडे मधुर हो, और शात स्वर में कहे जाने चाहिए। यह बडा आवश्यक है कि चाहे हौसला बढाने के लिए हो, चाहे महज़ हुक्म हो, जो कुछ भी कहा जाय, वह साफ साफ और निश्चित स्वरो में कहा जाये। इससे ध्वनि और स्वर के उतार-चढाव को याद करने में जानवर को बडी आसानी होती है।

हिसक पशुओ को आज्ञाकारी और विनम्र बनाने का एकमात्र यही उपाय है। तब ही वे अपने मालिक को समझते और उसके इशारो पर नाचने लगते हैं। सधानेवाले को और चाहिए भी क्या? यही उसका सबसे बडा इनाम है।

तमाशाई यह कभी अदाजा नही लगा सकते कि सरकस मास्टर को कितने धैर्य और चातुर्य, कितने कठोर आत्म-नियत्रण से काम लेना पडता है। इस पुस्तक में मैं इन्ही बातो की चर्चा करूगा। यह पुस्तक मैं अपने इस असाधारण व्यवसाय को समर्पित करता हू।

सरकस-व्यवसाय का श्रीगणेश

कृष्ण सागर के किनारे किनारे वसा हुआ छोटा-सा एक सुन्दर नगर। समुद्र की लहरो से धुली हुई पुरानी पहाडिया। ताडो और ववूलो वाली गलिया। शहर के छोर पर तेल साफ करने का एक कारखाना, जिसके चारो ओर मजदूरो के घर। वस, इसे समझिये वतूमी।

मेरा जन्म यही सन् १८६४ में हुआ। मेरे जीवन की आरभिक स्मृतिया तेल और समुद्र की गध से महमह हैं। या फिर दक्षिणी प्रदेश की धूप से शरावोर है। वहा की मद मद वयार और भयकर तूफान आज भी मेरे कानो में वजते है।

मेरे पिता, अफानासी एदर तेल शोधने के कारखाने मे मिस्त्री थे। वे भारी-भरकम मगर ठिगने कद और मीठे स्वभाव के आदमी थे। शाम को जव वह घर आते, तो पेट्रोल और मिट्टी के तेल की बू भी साथ ले आते। हम पिता-पुत्र वास्तव में घनिष्ठ मित्र थे। मेरी वहुत-सी शरारतो पर वे पर्दा डाल देते और कइयो में तो वह खुद भी शरीक हो जाते। पर मेरी मा, नदेज्दा अलेक्सान्द्रोव्ना इतनी मुलायम तवीयत की न थी। पिता उनकी हर एक वात मानते, वल्कि सच तो यह है, वे उनसे कुछ कुछ डरते भी थे।

हम वडे मामूली तरीके से रहा करते थे, क्योकि वाप की आमदनी से मुश्किल से रोटी चल पाती थी।

मैं शहर के प्राइमरी स्कूल मे भर्ती किया गया। यह स्कूल कैसा था, यह बताने के लिए, मैं एक घटना का जिक्र करना चाहता हू। हमारे मास्टर प्योत्र ग्रिगोरेविच ने हमे क्रिलोव का 'मुर्ग और मोती' नाम का किस्सा ज़बानी याद करने को कहा। मुझे किस्से-कहानियो से प्रेम था, और मैंने जल्दी ही इसे याद कर लिया। दूसरे दिन उस्ताद ने हममें से एक को ब्लेक बोर्ड पर आने को कहा। लडका पहली लाइन पर ही गच्चा खा गया, और मास्टर जी ने तमाचा जड दिया। दूसरे लडके के साथ भी यही बात हुई। तीसरे नबर पर मेरी बारी आयी। मास्टर के मज़बूत हाथो का इतना डर मेरे दिल में वैठ गया कि मेरी जबान से एक शब्द भी न निकला। मुझे भी तमाचा रसीद किया गया और एक कोने मे मुर्गा बनने को कहा गया। क्लास खत्म होने के वाद मैं घर आया तो मैंने माजी से अपना दुखडा रोया। उन्होने प्रेम से मुझे वही किस्सा सुनाने को कहा, और मैंने पूरा किस्सा तोते की तरह कह सुनाया। महज़ खौफ की वजह से मैं इसी किस्से को क्लास-रूम में न सुना सका था।

उन दिनो की याद करके, जब हमें सब कुछ रटना पडता, और मार पडा करती, आज मुझे कोई खुशी थोडे ही हो रही है। लडके भी खराव थे—आपस मे वही मार-पिटाई और गाली-गलौज। जब हम लोग गुत्थमगुत्था होते, तो मास्टर जी ही बीच बचाव कर पाते। यदि किसी लडके ने कभी मास्टर से शिकायत कर दी, तो उल्टा उसे ही मार पडती। नतीजा यह होता कि हम लोग अपने शिकवे-शिकायत अपने तक ही रखते।

वचपन में मुझे खेल-कूद का बडा शौक था। दौडने-भागने, तैरने और पेडो पर चढने में मुझे बहुत मज़ा आता था। कारखाने के अहाते मे से मैं धातु की पाइप का टुकडा उठा लाया था और उससे मैंने अपने लिये हैंड-वार वना ली थी।

जगली जानवरो से पहली मुलाकात मुझे अब भी याद है। एक दिन–तब मैं कोई ११ वरस का रहा होऊंगा–मै अपने जिगरी दोस्त कोल्या सिरचेन्को के साथ समुद्र के किनारे तैरने के लिए गया। कोल्या, भट्टी में कोयला झोकनेवाले मज़दूर का बेटा था। वह मेरा परममित्र और मेरे भले-बुरे का साथी था। यहा तक कि शैतानियो मे भी मेरा साथ देता था। एक दिन समुद्र तट को जाते समय हम रेलवे के मालगुदाम के हाते से गुजरे, जहा ढिमरी, पेच, रस्सिया, और न जाने क्या क्या चीजे पडी हुई थी। सब से दिलचस्प हमारे लिए मालगाडी के डिव्बे थे, जिनके पायदानो मे चढकर हमने सवारी का मजा लूटा। हम अक्सर ही स्टेशन जाया करते, मगर सच तो यह है कि हमसे स्टेशनवाले खुश नही थे।

जिस दिन का ज़िक्र मैने किया है, उस दिन स्टेशन के अहाते में हम आश्चर्य से अवाक् रह गये। हम दूर से ही भाप गये कि वहा कुछ बात हो रही है। वहा से चिघाडने, दहाडने की आवाजे आ रही थी। हम जो दौडकर वहा पहुचे, तो हैरान रह गये। मालगाडियो के खुले डिव्वो मे अनेक वडे वडे कटघरे रखे हुए थे। उनमें वद थे तरह तरह के पशु-पक्षी–रीछ, भेडिये, वनैली साहिया, वदर, तोते, और बाज–जिन्हे हमने अभी तक पुस्तको मे ही देखा था। अब हम समझ गये कि सफरी चिडियाघर वतूमी आ गया है।

वहा कोई रखवाला न देख, हम दोनो मित्र डिव्वो पर चढ गये, और भौचक्का हुए एक के बाद एक कटघरे का मुआइना करने लगे। जो जानवर खतरनाक नही लगे उन्हे हमने पुचकारने की कोशिश की। लेकिन वदरो के पिजडो से हटने को तो हमारा जी ही नही हुआ। हमने उनसे छेड खानी शुरु कर दी, तो एक बदर लोहे की छड की ओर लपका। मैं उछलकर एक किनारे हुआ तो जैसे ताड से गिरकर खजूर मे अटक गया। अनजाने मे मेरी पीठ एक रीछ के कटघरे के जगले से

जा लगी। भालूराम ने भी मेरी खूब खातिर की। उन्होंने अपना पजा निकाल मेरी जाघ पकड ली। मैंने जैसे-तैसे अपनी जान बचायी। मगर फिर भी रीछ के तीखे पजो ने मेरी जाघ पर अपना निशान छोड ही दिया। इससे भी बुरी बात यह हुई कि मेरा एक ही एक सूट भी बरबाद हो गया। भला, उस दिन तैरने की कौन सोचता? मै कोल्या के घर अपनी पतलून की मरम्मत कराने चला गया। कोल्या की माता ने जैसे-तैसे पतलून को सी-सा दिया। उस दिन मै कोई आधी रात गये डरते डरते घर पहुचा। मै खूब समझता था कि मा रीछ को दोषी न ठहरायेगी। सच मानिये, जगली जानवर से उस पहली मुठभेड की याद आज तक मेरे दिमाग में ताजी बनी हुई है।

यह कहना तो अतिशयोक्ति होगी कि बचपन से ही मै सरकस के ख्वाब देखा करता था। सच तो यह है कि बारह बरस तक मुझे सरकस की दुनिया के बारे में कुछ जानकारी ही न थी। उसी साल पहली बार मै एक सफरी सरकस कपनी का खेल देखने गया था। और बस, पहली नज़र से ही मै सरकसी मुहब्बत का शिकार हो गया।

एक दिन मेरे साथी हाफते हाफते मुझे यह बताने आये कि आज एक सफरी सरकस कपनी का खेल होने जा रहा है। हम सब सरकस देखने चल पडे। एक चौक मे हमे बडा तबू दिखाई दिया। इसके प्रवेश-द्वार पर मसखरो मदारियो और तरह तरह के जानवरो की तस्वीरे बनी हुई थी। कपनी के खिलाडी तरह तरह के करतब और कलाबाजिया कर लोगो का ध्यान सरकस की ओर खीच रहे थे। यानी बतला रहे थे कि लोगो को क्या कुछ अजूबा देखने को मिलेगा। हम दग हुए यह सब तमाशा देख रहे थे। लेकिन किस कबख्त के पास एक फूटी कौडी भी हो। सरकस का मालिक मक्खी मार रहा था कि मै और मेरा दोस्त उसकी आख बचाकर, तबू मे दाखिल हो ही गये।

जो कुछ मैंने उस दिन देखा, उसने मुझे अचभे में डाल दिया। कलावाज़ो को देखकर तो मैं मत्र-मुग्ध ही हो गया। किस ख़ूबसूरती और चुस्ती से वे अपने वदन को तोड मरोड सकते थे! मै इतना मस्त हो गया कि स्कूल जाना ही भूल गया। स्कूल से खिसककर सरकस भाग जाना, अव मेरा रोज़ का धधा हो गया।

सरकसवाले भी मुझे पहचानने लगे। मै हर रोज़ वहा पहुच जाता, और छोटे-मोटे कामो मे हाथ वटाकर उनका कृपा-पात्र वनने की कोशिश करता। काम भी कैसे? झाडू-वुहारी करना, सौदा-सुलफ ला देना, आदि, आदि।

उन्हे मेरे शरीर व मेरी फुर्ती देख कर यह अदाज़ हो गया कि मै अच्छा कलावाज़ वन सकता हू। एक दिन मसख़रे ने मुझे निमत्रण दे ही दिया "कहो, क्या सलाह है? इसी घाट उतरोगे?"

पहले तो मै यह समझा कि यह भी उसका एक मज़ाक है। लेकिन, वाद मे जव मुझे विश्वास हो गया कि उसने यह दावत सजीदगी से दी है, तो मेरी ख़ुशी के क्या कहने! मैंने अपने आपसे कहा—कहो, वेटा वोरिस एदर! क्या इरादे है? आप भी कलावाज़ और सरकस मास्टर वनने के ख़्वाव देख रहे है? वह दिन भी आयेगा एक दिन, क्या ख़्याल है? यह सव मुझे सपना लगा। ख़ैर, उन्हें अपने निमत्रण को दोहराने की आवश्यकता न पडी, क्योकि मैंने झट हा कर दी। और जव इस सरकस कपनी ने वतूमी से ओजुरगेति नाम के जार्जियाई गाव के लिए प्रस्थान किया तो मैंने भी वतूमी को हाथ जोड लिये। पर, अफसोस! यह मौज मेला देर तक न चल सका! मेरी अक्ल दुरुस्त हो गयी। एक दिन ओजुरगेति का पोलिसमेन मेरी गर्दन थाम कर मुझे थाने ले गया। वात यह हुई कि मेरे वालेदेन ताड गये कि मै सरकस कपनी के साथ फरार हो गया हू। उन्होंने मेरी तलाशी की रपट पुलिस में दर्ज करा दी।
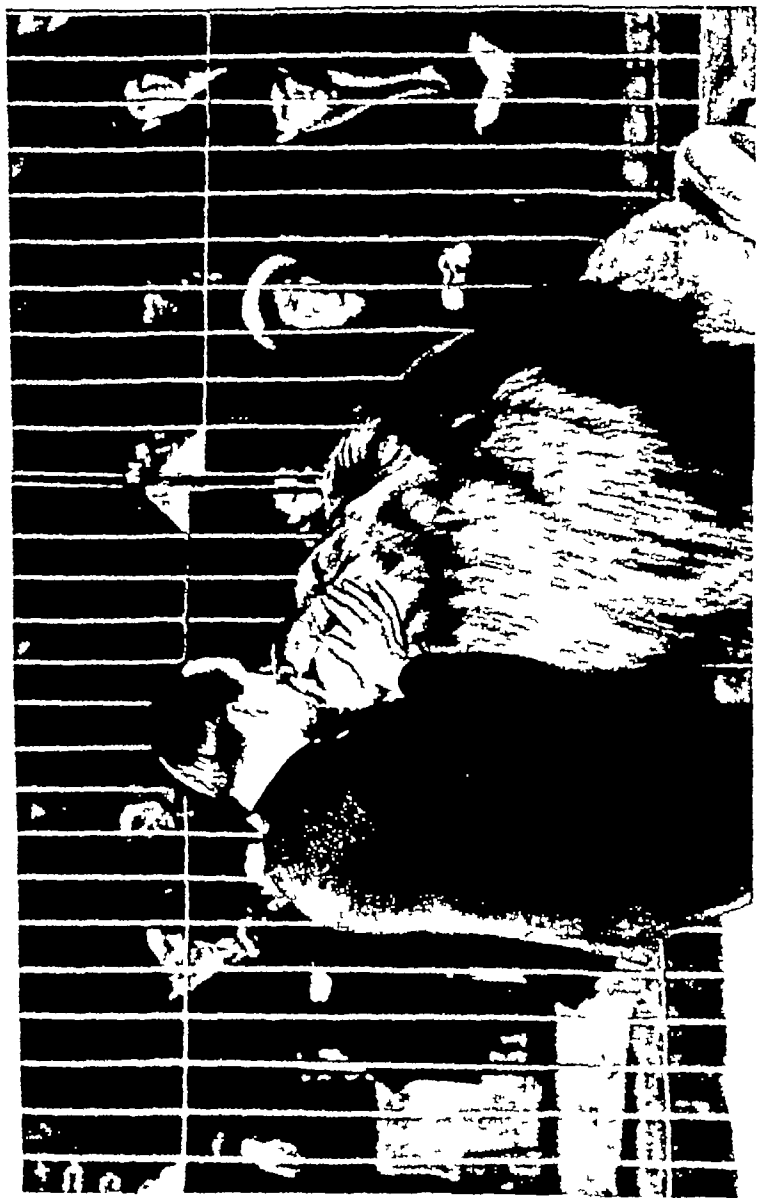
"आओ, मिल्ली हो जाय, अली!"
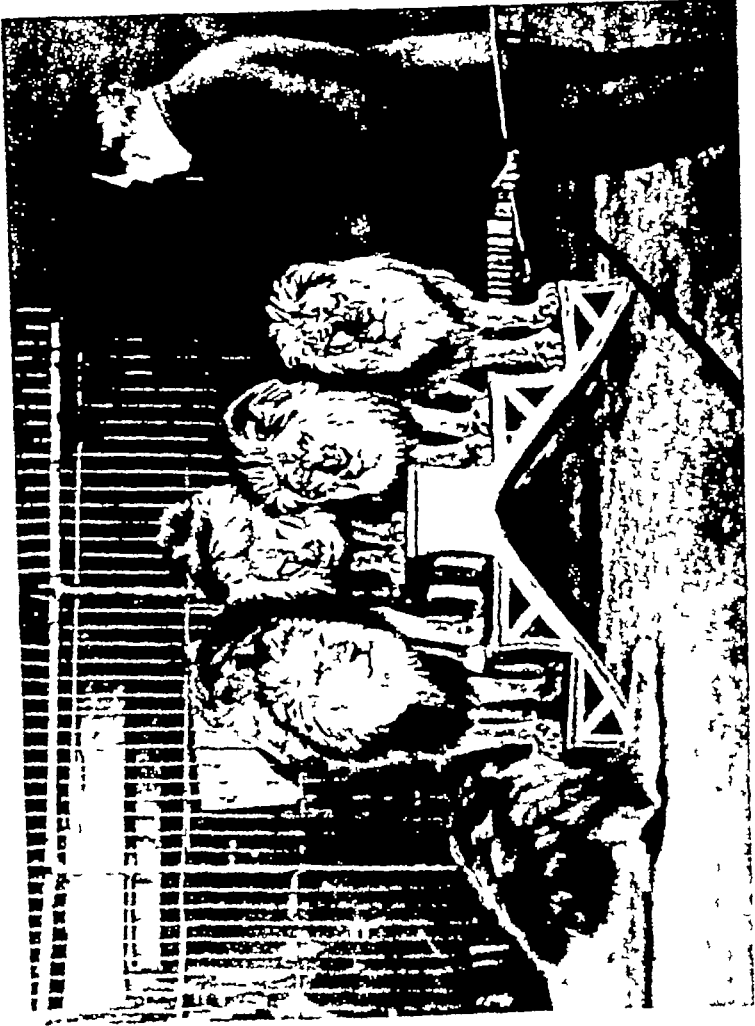
"सावधान।"

घर पहुँचने पर मेरी अच्छी खासी मरम्मत हुई। खैर, मैने माता जी से साफ साफ कह दिया कि अब मै स्कूल तो बिल्कुल न जाऊगा, हा, किसी काम पर लगना चाहूगा। बस, मै अपनी बात पर अड गया। आखिर, माता जी इस बात पर राज़ी हो गयी कि मै पिता जी के सहायक के रूप में काम करने लग जाऊ। मैने सोचा, यह भी दिलचस्प ज़िदगी होगी कि सारे दिन पिता जी की वर्कशाप मे बैठे बैठे, बडी बडी टकियो से जहाज़ो तक पेट्रोल और मिट्टी का तेल पहुचानेवाले, बडे बडे पपो की देख-भाल करता रहूगा। इस प्रकार पाच महीने मैने पिता की वर्कशाप में बिता दिये। मेरा काम था कि उनकी मशीनो के पीतल के हिस्सो को चमकाते रहना।

इसी समय एक दूसरी सरकस कपनी बतूमी आयी। इसका मालिक एक जार्जियाई, ग्वसालिया था। बडी अनुनय-विनय के बाद पिता ने मुझे सरकस देखने की अनुमति दी। इन लोगो मे भी मै जल्दी ही घुलमिल गया। मै ग्वसालिया के आगे-पीछे दौडने लगा। मैने उससे मिन्नत की कि वह मुझे अपने सरकस में भर्ती कर ले।

सरकस का खिलाडी बनने की मेरी इच्छा इतनी तीव्र थी कि कोई भी अब मेरे आडे न आ सकता था। एक मास बाद मै इस सरकस कपनी के साथ कुतईस भाग गया। ओज़ुरगेती के कूट अनुभव की याद से कुतईस में मै बडा सशकित रहने लगा। शायद ही कभी मै तबू से निकलता, और अजनबियो से तो मै कन्नी ही काटता। एक दिन पुलिसमेन आम तलाशी लेता हुआ आ ही गया, तो ग्वसालिया ने बडे शात भाव से उसे यकीन दिला दिया कि कपनी मे कोई भी भागा-भूगा लडका नही है। समझिये, कि मेरी जान छूट गयी। कुतईस से जाने के बाद मुझे पुलिस का खौफ नही रहा और मै बेधडक बाहर घूमने-फिरने लगा।

ग्वसालिया के सरकस में मैंने कोई सुख के दिन तो नही काटे। तो भी मै यहा घर से अधिक प्रसन्न था। हर रोज़ मुझे बडा काम करना पडता—घोडो की मालिश करना, ग्वसालिया की गृहस्थी का सामान लाना, सरकस के फर्श की धुलाई-सफाई करना, वगैरह। दिन भर काम करते करते मै इतना थक जाता कि रात को बिना कपडे उतारे ही सो जाता। अगर्चे मै गधे की मानिद काम करता, तो भी कलाबाज़ी के लिए समय निकाल ही लेता। आखिरकार ग्वसालिया ने मेरी उत्सुकता देख निश्चय किया कि मुझे कलाबाज़ बनाना मुफीद ही रहेगा। अब मेरी शिक्षा आरभ हुई, और मैंने पर्याप्त प्रगति की, क्योकि मेरा शरीर इन करतबो के योग्य था।

लगभग दो वरस तक हम सुन्दर एव सुरम्य जार्जिया का दौरा करते रहे—शायद ही कोई शहर या कस्वा वचा हो जहा, हम नही गये। अब हम जार्जिया की राजधानी तिफलिस पहुचे और नगर के वाहर हमने अपना खेमा गाड दिया। अभी भी मेरा शुमार नौसिखियो मे ही होता था, और मुझे इस काम के लिए कोई वेतन न मिलता था।

एक दिन मुझे पता चला कि इसी शहर के वीचो-वीच एक 'सच्चा सरकस' मौजूद है। भला मै क्या जानू कि 'सच्चा सरकस' क्या वला होती है? लेकिन, सवसे यही सुनने मे आया कि यह वाकई नवर एक है—सचमुच का सरकस। इसका और हमारे सफरी सरकस का भला क्या मुकाविला!

स्वभावतया मेरा कुतूहल जाग उठा।

इस सरकस की तडक-भडक, कलावाज़ो की भडकीली पोशाके, शोर-शरावा, और नटो के दिल फडकानेवाले करतव देखकर मैं हक्का-वक्का हो गया। इस सरकस के मुकाविले मे मुझे अपना सरकस इतना टुटपूजिया लगने लगा कि मैंने इस असली सरकस मे शामिल होने का निश्चय कर लिया।

दो तीन दिन के बाद मैंने इस सरकस के दरवान को धर पकडा और पूछ-ताछ की कि क्या उन्हें किसी नये खिलाडी की ज़रूरत है। उसने मुझे रुखाई से टालने की कोशिश की और कहा कि सरकस को तुमसे क्या लेना-देना! पर, भाग्य ने मेरा साथ दिया। मैक्स वैत्समन नाम के खिलाडी ने हमारी वातचीत सुन ली। उसने मेरे पास आकर पूछा "छोकरे, क्या कर सकते हो, तुम ?"

"खास तो कुछ नही, साहब!"

वैत्समन ने मुह वनाया, सिर से पैर तक मुझे देखा, मेरे पुट्ठे टटोले और कहा "अच्छा ठीक है, कल आ जाना। देखेंगे कि तुम क्या कुछ कर सकते हो।"

मैंने जितने करतव सीखे थे, दूसरे दिन वे सब के सव कर दिखाये। वैत्समन ने मेरी अवस्था पूछी। जब मैंने बताया कि मै कुल १४ साल का हू, तो उसने चट मुझे अपना शिष्य बनाना मजूर कर लिया।

ग्वसालिया से बिना कुछ कहे, सुने और बिना अकारण धन्यवाद दिये, मै मैक्स वैत्समन के पास चला आया। यहा भी मुझे नौसिखिया की तरह उस्ताद की चाकरी करनी पडी। उसकी बीबी के साथ सौदा-सुलुफ लेने वाज़ार जाना, समावार गर्म करना, मेज़ लगानी, आलू छीलन आदि आदि नौकरो के सारे काम मुझे करने पडे। हा, यहा यह फर्क जरूर पडा कि मै परिवार के सदस्य की भाति रहता था। और सबसे बडी बात यह थी कि मुझे काम सिखाया जा रहा था। मैक्स वैत्समन हर रोज़ दो घटे मेरी सिखाई पर खर्च करता। कभी कभी तो मडली के अध्यक्ष वैत्समन के पिता आ जाते और मेरा मुआइना करते।

जब मुझे वुनियादी करतव आ गये तो मैक्स ने मुझे झूले के खेल सिखाने शुरू किये। ये भी मै जल्दी ही सीख गया। एक साल के वाद ही मै पहली वार 'चार उडाकू वैत्समन' नाम के खल मे मैदान मे आया। पिता वैत्समन हमें लोकाते और मैंने और उनके वेटो ने करतव दिखाये।

दर्शको ने मेरे खेल को सराहा। खेल खत्म कर जब मै ड्रेसिग रूम मे आया तो बडे वैत्समन ने मेरी पीठ थपथपायी, और कहा "बस, बेटा बोरिस! तुम हो गये, अच्छे एक्टर!"

यह बात १६१० की है। तब मै कोई १६ वर्ष का था। बचपन समाप्त हो गया था। और मै सरकसी अभिनेता बन चुका था।

मै जी जान से अपने काम को सीखने की कोशिश करता, और खतरनाक से खतरनाक करतब सीखने मे भी नही हिचकिचाया। मेरी इच्छा कलाबाजी मे वैत्समन के बेटो से इक्कीस होने की थी। पर यह असभव ही रहा। हमारे दल के नेता बडे वैत्समन, स्वभावतया अपने लडको की ओर अधिक ध्यान देते, और मुझे उनसे आगे न बढने देते। बडे मिया यह भी जानते थे कि अगर मुझसे मुश्किल करतब करवाये गये, तो उन्हें मेरी तनख्वाह बढानी पडेगी। उस समय मुझे कुल २५ रूबल प्रतिमाह मिलते थे। साथ ही उन्हें यह भी डर था कि यदि मै सब करतब जान गया तो दूसरे सरकसो के मालिक मुझे ज्यादा तनख्वाह पर अपने यहा खीच लेंगे। इसलिए उन्होने मेरी तरक्की के रास्ते मे हर तरह के रोडे अटकाये। पुराने ज़माने मे सरकसो में ऐसी बातें अकसर ही हुआ करती थी।

इसी बीच प्रथम विश्व युद्ध छिड गया, और वैत्समन परिवार विदेशी होने के नाते नज़रबद कर दिया गया।

मै कभी का कलाबाजी मे दक्ष हो चुका था। इसलिए नये साझीदार—सिम-मडली—ढूढने मे मुझे विशेष कठिनाई न हुई। इनके विशेष खेल का नाम 'रोमन रिग' था। रोमन चोगे पहने हम अखाडे मे उतरते, और फिर उन्हे उतार कर तरह तरह के जिमनास्टिकी खेल करते।

यह ख़ासी कामयाब पार्टी थी, परन्तु शीघ्र ही मै इनसे भी अलग हो गया। बात यह थी कि उस दल का मुखिया—सिम—घोर शराबी था, और वह कई बार शो मे भी नशे मे आता था। मडली की उन्नति में

उसकी कोई विशेष रुचि न थी। आए दिन एक ही तरह के करतब करते रहना, कोई नयी बात न करना और, तिस पर सिम की शराबखोरी की लत। इन सब का यह नतीजा हुआ कि जो कुछ हम जानते थ, उस मे भी हम लोग गच्चे खाने लगे। बस, मैं इस मडली को छोडने की ताक में रहने लगा।

पुराने सरकसो का ऐसा रिवाज था कि हर सीज़न मे एक न एक शो अवश्य ऐसा होता, जिसमे किसी एक दल को बढ चढकर अपने करतब दिखाने की हिदायत होती। ऐसे मौको पर वह दल कठिन से कठिन कलाबाज़िया दिखाया करता। इन खेलो के टिकट भी कुछ ज्यादा महगे होते। अतिरिक्त आमदनी से कलाबाजो की जेबें भरती। दूसरे, पब्लिक के लोग भी अपने मनपसद खिलाडियो को इनाम-इकराम दिया करते। सिम कपनी ने भी ऐसा ही एक शो कुतईस में किया। खेल के बाद मुझे अप्रत्याशित इनाम व उपहार मिले और सिम महाशय को कुछ भी न मिला। सिम इससे चिढ गया और मुझसे लड पडा। मैं उसका दल छोड कर औजोनिओ के दल मे शामिल हो गया। यह दल 'रोमन ग्लैडियटरो' के नाम से मशहूर था। इसने कलाबाज़ी के अनेक पिरामिडो की रचना की थी।

इस प्रकार, थोडे समय के दौरान में ही मैंने तीन दलो में काम किया।

गमक्रेलिदज़े सरकस को देखकर मुझे अपने बचपन में देखे सफरी सरकस की याद आ गयी। इस सरकस में कुशल खिलाडी स्थायी तौर पर काम करते, और इसका काम था एक शहर से दूसरे शहर घूमना। हा, रास्ते में बडे गाव या कस्बो में भी यह पडाव डाल दिया करता। शहरो में तो हम १५ दिन से दो महीने तक रुक जाते। हरेक एक्टर को दो या तीन किस्म के प्रोग्राम तैयार रखने पडते, ताकि उनमे नवीनता और विभिन्नता रह सके। साथ ही हर एक खिलाडी को मूक-

अभिनयो, सामूहिक नट-प्रदर्शनो व मज़ाकिया खेलो में भी पार्ट अदा करना पडता। कलाबाज़ी के करतबो को 'शारि-वारी' के नाम से पुकारते। इनमें एक प्रकार की कूदने की प्रतियोगिताए हुआ करती। इसके अलावा सब खिलाडियो और उनकी पत्नियो को वैले-नृत्य में भी भाग लेना होता। परिणामस्वरूप, इस सरकस के खिलाडी बहुमुखी कलाकार हो जाते। ये सरकस जब तब दौरा करनेवाले उच्च कोटि के खिलाडियो को भी आमत्रित करता। पर, ऐसा सदा सभव न हो पाता, क्योकि इनकी फीस बहुत अधिक होती। वैसे यह थे भी इने-गिने—दुरोव भ्रातृमडल, बिम-बोम, साइकिल सवार पोल्दी और येफीमोव परिवार, पशु-शिक्षक अ० और प० फरुर्ख, जर्बीलोव और कुछ विदेशी सुप्रसिद्ध खिलाडी—बस। गमक्रेलिदज़े फ्रेंच कुश्तिया खूब करवाता। न केवल नामी पहलवान ही बुलाये जाते, वरन् सरकस के खिलाडियो को भी दगलो में हिस्सा लेना पडता।

गर्मियो में हम वडे शामियानो में या खुले मैदानो में अपने शो किया करते। इतज़ाम तीन करते—अखाडे का, अस्तवल का और दर्शको के लिए बैठने के स्थान का बस इतना ही। सर्दियो मे हम लकडी के बने सरकसो में खेल किया करते, मगर उनको गर्माने का कोई इतजाम नही होता था।

उन दिनो सरकस-खिलाडियो की शिक्षा न होने के बराबर होती। बहुत तो पढ-लिख भी नही सकते थे और शायद ही किसी को देश की राजनीति, या दैनदिन घटनाओ मे कोई दिलचस्पी हुआ करती। यदि कोई खिलाडी दो-तीन जमात भी पढा हुआ होता या अखबार का शौकीन निकल आता तो उसकी गिनती पढे-लिखो मे हो जाती।

मैंने अपने एक साथी—नेस्तर के साथ एक नये हवाई करतब का अभ्यास आरभ किया। इस खेल को 'चौखटा' कहा करते, क्योकि एक साथी एक चौखटे जैसे झूले मे से नीचे को सिर लटका कर झाका करता। दो झूलो को दो फुट के फासले पर रखकर केबलो मे जब बाध दिया

ाता, तो यह चौखटे की ही शकल का लगने लगता। कलाबाज घुटने लटकाकर एक झूले में लटक जाता और अपने पैर दूसरे के अदर जमा लेता। उसका साथी उसके हाथ पकडकर कई किस्म की ख़तरनाक कलाबाजिया करने लगता। मसलन, साथी के हाथ एकदम से छोडकर उलटी कलाबाज़ी खाना और फिर निहायत सफाई से फिर उसके हाथ पकड लेना। दातो के करतब भी उस समय काफी लोकप्रिय थे। 'चौखटे' वाला खिलाडी साज़ का एक छोर दातो में दबा लेता और दूसरा छोर अपने साथी की कमर के हुक में फसा देता। बस उसका नीचे झूलता हुआ शरीर तेज़ी से घूमने लगता। फिर अपने घुटने मोड कर छाती से लगा लेता, जिससे वह हवाई पखे की तरह घूमने लगता। एक और ऐसे ही होश-हवास उडा देनेवाले करतब का भी हम अभ्यास करते। दो रस्से लिये जाते जिनमें ख़ास किस्म की गाठे होती। नीचे का खिलाडी इन रस्सियो को अपने पैरो से बाध लेता और उसका साथी दूसरे छोर को हाथो में ले लेता। नीचे का आदमी गोला-सा लगता, तब गाठे खुल जाती। ज्योही वह गिरने को होता, लबे रस्से उसे पैरो से साध लेते। जल्दी ही हमने यह करतब भी करना शुरू कर दिया। मै 'रोमन ग्लैडियटरो' के खेल मे भी बराबर भाग लेता रहा।

सन् १९१९ में, जब मै व्लादिकव्काज़ नगर में था, तो मै लाल सेना में भरती हो गया। बतूमी के कारख़ाने में काम करने के बाद मशीनो–कलपुर्जो से खेलना मुझे बराबर भाता रहा। अत फौज में मै लॉरी ड्राइवर बन गया।

सन् १९२१ में मेरा दस्ता तोड दिया गया और मैं तुअप्से शहर में चला आया। यहा वूफ नाम के एक पशु-शिक्षक और विदूपक का सरकस ख़ूब चल रहा था। एक हवाई कलाबाज़ बोगतकोव के साथ मिलकर मैंने 'चौखटे' वाला खेल फिर शुरू कर दिया। साथ ही मै एक नये करतब का अभ्यास करने लगा। इस खेल में एक आदमी एक लचीली

छड को अपने माथे पर साध लेता, और दूसरा उसपर चढकर तरह तरह की कलाबाजिया करता। अब मेरा नाम तो हो ही गया था, बस इस कौतुक का नाम 'एदर भाई' रख दिया गया।

बोगतकोव के साथ मैने काफी समय तक काम किया, पर अत मे हम दोनो मे तकरार हो गयी। मेरे दिमाग मे यात्रिक साधनो पर आधारित अनूठे करतब दिखाने की धुन समायी रहती।

मुझे यकीन था कि ये नये तजुर्बे बहुत पसद किये जायेंगे, और ये सभव भी थे। दूसरी ओर, बोगतकोव अपनी पिछली सफलताओ से ही सतुष्ट था। खासकर, इसलिए कि हमारे खेल बडे मशहूर हो गये थे, और हमे बडे बडे सरकसो से बुलावे मिलने लगे थे।

सन् १९२८ में, जब मै लेनिनग्राद में खेल दिखा रहा था, ऐसे ही एक दिन मै खिलौनो की एक दूकान मे चला गया। वहा मेरी नज़र एक अजब खिलौने पर पडी, जिससे मुझे एक नयी बात सूझी। एक तख्ते पर दो बदर थे, और तख्ता एक मस्तूल के गिर्द तेजी से घूम जाता। इस खिलौने ने मेरे दिमाग मे एक नये सरकसी खेल को जन्म दिया।

बाद मे मैने इसका नाम रख दिया—'ईफिल मीनार के गिर्द उडान'। मैने अपने नये खेल की कल्पना इस प्रकार की अखाडे के बीचो-बीच पेरिस की प्रसिद्ध ईफिल मीनार की शकल का एक लोहे का ढाचा खडा किया गया। इसके सिरे पर एक छड जोड दी गयी। इस छड के एक छोर मे एक हवाई जहाज लटका दिया गया। (पहले इसमे बिजली का इजन था जिसकी जगह पर मैने मोटर साइकिल का इजन लगा दिया), दूसरे सिरे मे एक झूला लटका दिया गया, जिसपर कलाबाज अपने करतब दिखलाता और हवाई जहाज मीनार के चक्कर लगाता।

मुराद की हठधर्मी

वैकल के करतब

"शाबाश, पाशा!"

"इतने खफा क्यो होते हो, यार?"

इस नये खेल को चालू करना कोई आसान काम नही था – इसपर काफी रकम और दिमाग लगाना पडा।

साथ ही टेकनीकल सलाह भी लेनी पडी। इसके अलावा मुझे बडे कुशल और सधे हुए साथी की ज़रूरत थी, क्योकि बोगतकोव मेरी स्कीम में न तो शामिल होना चाहता था, और न ही इस योग्य था।

यदि बात आज की होती तो हमे कोई दिक्कत न होती, क्योकि सरकारी सरकस-बोर्ड हर नयी योजना में मदद देने को सदा तैयार रहता है। सच पूछिये, तो आज के कई नये करतबो और खेलो का श्रेय इस बोर्ड को ही है। लेकिन सन् २० के आस-पास यह बात न हो सकती थी। बेचारे सरकस के खिलाडियो को अपना वदोवस्त आप ही करना होता था।

लेकिन अपने नये खेल की सफलता मे मेरा इतना दृढ विश्वास था कि मैंने मन में ठान ली कि कुछ भी हो, मै इसे करके ही रहूगा। इस समय देश में पेचीदा खेल व करतब दिखानेवाले प्राय विदेशी थे। इस लिए इस मामले में मै और भी दृढ सकल्प हो गया।

म तलाश करने लगा, और अत में मैंने वैरेत्तो नाम के एक प्रतिभाशाली खिलाडी को चुन ही लिया। यह एक गभीर और अव्यवमायी व्यक्ति था। जब मैंने उसे अपनी योजनाए वतायी, तो वह तुरत ही मेरा सहयोगी वनने को तैयार हो गया।

कुछ दिनो वाद ही हमने अपना मीनार बनाना शुरू कर दिया। हमसे जो वन सका, हमने किया। हमने एक चतुर फिटर को इस काम पर लगाया और उसने हमे खाका और लागत – दोनो के वारे में वताया। हमारी पूजी तो सामान खरीदने मे ही लग गयी। अत हमने यही निश्चय किया कि इस मीनार को अपनी मेहनत से ही वनायें। लेनिनगाद मे हमने एक छोटी-सी वर्कशाप किराये पर ले ली। हर रात को, खेल खत्म कर वैरेत्तो और मैं काम में जुट जाते। हम टीन की

चादरो की जुडाई करते, वरमो से छेद करते, और इसी तरह के दूसरे काम करते। इसी वहाने हमें फिटर का भी काम आ गया। सुवह सवेरे आठ वजे हमे वर्कशाप से हट जाना पडता क्योकि मालिक खुद काम पर आ जाता। यह खुश किस्मती थी कि फौज में लॉरी-ड्राइवर का काम करने की वजह से मुझ फिटर का काम थोडा बहुत आता था। इस पर भी हमें वहुत कुछ कई कई वार करना पडता था। हम थे जो अनाडी! और हमारा सवसे वडा अभिशाप था नकद नारायण की कमी।

जव हमने आखिरकार मीनार और क्रॉस-पीस वना लिये तो हमने सारा ढाचा इकट्ठा करना शुरू किया। इस काम ने सचमुच हमारी कमर तोड दी। खैर, हमारा मीनार काफी पायेदार रहा और देखने में भी कुछ वुरा न था। 'हवाई जहाज़' लेनिनग्राद के लोकप्रिय सास्कृतिक मनोरजनगृह की वर्कशाप मे सरकस-वोर्ड की सहायता से वनाया गया।

इस कारीगरी मे हमारे दो महीने लग गये। ढाचा जव वन कर तैयार हुआ तो एक और नयी मुसीवत खडी हो गयी। रिहर्सल करने के लिए हमारे पास कोई जगह न थी। उस समय सरकस में मूक-अभिनय चल रहा था। भला, वहा हमारे और हमारे भारी-भरकम 'ईफिल मीनार' के लिए कहा जगह थी ? वहुत तलाश के वाद हम पटेवाजी का एक हॉल ढूढ पाये और हर रोज सुवह ६ मे ९ तक रिहर्सल करने लगे।

यह हॉल वहुत लवा-चौडा था। मुझे याद है, कैसे पहले पहल मैं इस मीनार पर चढा। मिस्तरी 'हवाई जहाज़' मे वैठ गया और क्रास-पीस वाकायदा घूमने लगा। मेरा दिल मेरे साथी से अधिक पक्का था, पर थोडी ही देर मे उसका सिर चकराने लगा। यह चक्कर उससे वर्दाश्त नही हो रहे थे। अत हमें रिहर्सल वद करना पडा। कही दस दिनो वाद वैरेत्तो की झिझक दूर हुई। मगर दुवारा रिहर्सल हम एक मास के वाद ही कर सके।

हमारे पास जो कुछ पूजी बची थी, वह हमने पोशाके और सगीत के साज़ ख़रीदने मे लगा दी।

दो मास बाद, ६ मई, १९२९ को हमने अपना पहला शो लेनिनग्राद के लोकप्रिय सास्कृतिक मनोरजनगृह के बाग में किया। हमारा ४० फुट ऊचा मीनार १० फुट ऊचे पायेदान पर जमा दिया गया। और जब सूत्रधार ने हमारे खेल का ऐलान किया, तो सचमुच मेरे रोगटे खडे हो गये।

शानदार पोशाकें पहने, हम मीनार पर चढकर, अपने अपने स्थान पर बैठ गये। सर्चलाइट की रोशनी हम पर पड रही थी। मिस्त्री जी ने जहाज में बैठकर मोटर चालू कर दी और क्रॉस-पीस हवा में नाचने-घूमने लगा। हम लोग बडे जोश मे थे, फिर भी हमने खेल बहुत सफाई से खतम किया। लोगो मे खूब वाह वाह हुई। बस, हमें अपनी कठोर तपस्या का फल मिल गया।

बाद मे, शनै शनै हमने अपने खेल में और भी तरक्की की। जहाज़ की रफ्तार और अपने करतबो को अधिक रोमाचकारी बनानें में हम समर्थ हो गये।

इस खेल का लोहा हमारे देश क बडे से बडे सरकसो ने भी माना।

कुछ सालो बाद, जब कि मैं बाकायदा पशु-शिक्षक बन चुका था, सोवियत सरकसवालो ने कई नयी उडनेवाली मशीनें ईजाद कर ली। उन्हे तारो के सहारे सरकस छत से लटकाया जा सकता था। इनसे एक लाभ यह हुआ कि उडान की दूरी वे बढा सके, और अब उनका जहाज़ एक सच्चा जहाज लगने लगा। हमारे जिमनास्टिक के साज़-सामान न सिर्फ 'हवाई जहाज़' की शकल के होते बल्कि 'हवाई टोरपीडो' या चित्र-विचित्र पक्षियो की शकल के भी होते थे।

फिर भी मीनार का खेल हमारे लिए कभी कभी सकोच का कारण ही बना रहा। मिसाल के तौर पर, त्बिलीसी में हमें एक पुराने फैशन

के सरकस मे अपना शो देना पडा, जिसमें मेरी जान जाते जाते बची। सरकस की छत लट्ठो पर खडी थी, एक ऐसे ही लट्ठे ने मेरी जान बचायी। अमूमन अपना खेल आरभ करने से पहले क्रॉस-पीस पर खडे होकर जनता को सलामी देने का मेरा कायदा था। जब जहाज़ चलने लगता, तो अपने को साधने के लिए मै एक झोले मे हाथ डाल लिया करता। उस दिन दुर्भाग्य से मै आखिरी बार चूक गया। नतीजा यह हुआ कि केन्द्रीभूत शक्ति ने मुझे दर्शको के ठीक सिरो के ऊपर हवा में दे उछाला। खुशकिस्मती यह हुई कि मै एक लट्ठे से जा टकराया, जिसे मैंने भीच कर पकड लिया। मानो मेरे शरीर मे जान ही नही रही। लेकिन ज़िदगी के प्यार ने मुझे साध रखा। जैसे-तैसे मै नीचे उतरा, मगर मेरी हड्डी हड्डी-पसली पसली हिल गयी थी।

सन् १९३२ में, जब हम वोरोनेज मे अपना खेल दिखा रहे थे, मुझे पता चला कि सरकस-बोर्ड ने जर्मन से कुछ शेर खरीदे है। कार्ल ज़ेम्बाख़ नाम के इस जर्मन को यह नाज़ था कि सिवाय उसके इन शेरो को कोई काबू मे नही रख सकता। इसलिए वह बोर्ड से बहुत अधिक मेहनताना मागनें लगा। उसनें यहा तक धमकी दी कि वह घर लौट जायेगा, और शो ठप हो जायेगा। बोर्ड अब किसी दूसरे व्यक्ति की तलाश करने लगा। पर, यह काम आसान नही था क्योकि हममे से किसी को भी जानवरो को सधाने का तजुर्बा नही था।

मैंने इसको अपने देश के लिए अपमानजनक समझा कि हम इस काम के लिए विदेशियो का मुह ताके और उनकी बेसिरपैर की शर्तें मजूर करे । जोश में आकर मैंने खुद अपने आपको बोर्ड के आगे पेश कर दिया।

यह मै पहले ही कह चुका हूं कि यद्यपि अब तक मैंने केवल कलाबाज़ी और जिमनास्टिक के करतब ही दिखलाये थे, तो भी मेरी प्रवल इच्छा पशु-शिक्षक बनने की ही रही। घोडो से मुझे वैसे ही प्यार था, मसखरो के कुत्ते मेरे दोस्त बन गये थे, और शेर, रीछ, चीता, वदर वगैरह के कटघरो के आगे घटो खडे होकर उनके स्वभाव आदि का अध्ययन करना मुझे बडा भाता था। कई वार, रखवाले मुझे कटघरो में मास के टुकडे डालने देते। मुझे यह प्रतीत होने लगा कि जानवरो को जल्दी ही दोस्त बनाने की हिकमत मुझे आती है। मुझे दुख और क्रोध होता जब मै कई जानवर-मास्टरो को अपने पशुओ के साथ वेरहमी का वर्ताव करते देखता। उन्हें कोडे लगाना, टॉर्च की तेज़ रोशनी से उनकी आखें चोधियाना, या दोशाखो से उनके चेहरो को गोदना, यह सब मुझे खलता था।

यदि कभी इत्तिफाक से मै दहाडते शेर या क्रूर चीते के कटघरे के पास खडा हो जाता, तो मुझे डर नही लगता। उल्टे, मेरे मन मे यह इच्छा होती कि मै इनकी हिसक वृत्ति का शमन करू। और इनको अपने वस मे कर लू, परन्तु डरा-धमकाकर नही, वल्कि प्रेम से, सद्व्यवहार से। मै तो उन्हे अपना दोस्त बनाना चाहता था।

ये थे मेरे सपने! मुझे सपने मे भी यह आशा न थी कि ये कभी साकार होगे।

पर, मुझमे आत्म-विश्वास था। मै यह खूब समझता था कि मुझमें वे सब गुण मौजूद है जो एक जानवर सधानेवाले मे होने चाहिए, यथा—पशु-प्रेम, समझदारी, प्रवल इच्छा-शक्ति, धैर्य, लगन, स्फूर्ति और साहस।

वस, मैंने वोर्ड को अपनी सेवाए अर्पित कर दी। वातचीत करने के लिए मुझे मास्को वुलाया गया। मेरे सकल्प से प्रभावित होकर वोर्ड ने मुझे मौका देना मजूर कर लिया।

मुझे खुशी भी थी, और डर भी लग रहा था। सरकसी ज़िंदगी ने मुझे खतरो का आदी अवश्य बना दिया था, पर यह तो बात ही और थी। ताहम, मुझे अब एक ही धुन थी—अपने सरकस की सहायता करना, और विदेशियो को यह जता देना कि हम उनकी मदद के बिना भी काम चला सकते है। मैने इस कार्य को सम्पन्न करने का दृढ सकल्प कर लिया। पीछे हटना तो मै जानता ही नही था, कि जो होना हो सो हो।

शीघ्र ही वोरोनेज लौटकर मैने 'ईफिल मीनार' और भाई बैरेत्तो, दोनो से विदाई ली।

शेर और तेंदुए

मास्को पहुचकर मै अपने भावी शागिर्दो को देखने गया। यह स्वीकार करने में मुझे ज़रा भी झिझक नही कि जब मैंने 'वनराजो' को पहले पहल देखा तो मेरी कपकपी छूट गयी।

मेरे मन मे विचार आया कि क्या मै इन हिसक प्राणियो को साध सकूगा? यह तो आरभिक अनुभव था। यदि मैं इतना घबरा गया तो आश्चर्य ही क्या!

मेरा परिचय कार्ल जेम्वख से कराया गया। वह मुझे बडा शेख़ीख़ोर और घमडी लगा। हा, उसे अपने पेशे पर बडा फख़र था। जब मै वैंत्समन कपनी में काम करता था, तो मैंने थोडी बहुत जर्मन सीख ली थी। पर, मैंने फैसला कर लिया कि इस बात का मैं ज़ेम्वख को नही पता लगने दूगा, क्योकि मुझे यह आशा थी कि अपने जर्मन सहयोगियो से बातचीत करते हुए शायद वह कुछ काम की बात कह जाये। अत मुलाकात के समय मैंने दुभापिए की सहायता से ही उससे बातचीत की।

"यह है हमारे कलाबाज़ जिन्हें आपको अपने शेर सुपुर्द करने है," दुभापिए ने समझाना शुरु किया। "यह बीस से अधिक सालो से सरकस मे काम करते रहे है, और अब आपके काम का भी ज़िम्मा लेने को तैयार है।"

"जगली जानवरो का आपको क्या तजुर्बा है?" जेम्बख ने मुझसे पूछा।

मेरे यह बताने पर कि मैंने आज तक किसी जानवर के कटघरे में पैर ही नही रखा है, ज़ेम्बख तडाक से बोल पडा "तो आपसे बात करने से कोई लाभ नही। आज तक कही सुना है कि सालो बाकायदा ट्रेनिग लिये बिना कोई सीधा इस काम को हाथ लगा सके?"

फिर मेरी पीठ ठोकते हुए उसने कहा "जवान, किसी भ्रम मे मत रहो। शेरो को सधाना सिर के बल खडे होने से कही अधिक कठिन है। यह हरेक के बस का काम नही। शेर के साथ काम करने से पहले तुम्हे कम से कम ५ या ६ साल उसकी देख-रेख में गुज़ारने चाहिए ताकि तुम उसकी आदतो, उसके स्वभाव आदि से परिचित हो सको। और इसपर भी कोई नही कह सकता कि तुम सफल शेर-मास्टर बन ही सकोगे।"

मैंने दुभाषिए से कहा कि वह जेम्बख महाशय को यह समझा दे कि मुझे अपनी कमियो की पूरी जानकारी है, ताहम मैंने इस काम को करने की ठान ली है।

ज़ेम्बख शरारत भरी हसी हसा। "सुनो भाई, अगर तुम खुद ही मौत के मुह में जाना चाहते हो, तो मै क्या कर सकता हू? शेर या तो तुम्हारी बोटी बोटी नोच डालेगे या तुम हाथ-पैर से लुज-पुज हो जाओगे।"

पर, मै तो कृतसकल्प था। पीछे हटना मै जानता ही न था। "जो होगा, सो देखा जायेगा!" मैंने उत्तर दिया।

जब ज़ेम्बख ने देखा कि मै अपने इरादे से टस मे मस नही हो रहा, तो वह बोला "अच्छा ठीक। कल सुबह ठीक ६ बजे पहुच जाओ। रिहर्सल करेगे।" सरकस-बोर्ड सदस्य सारी बातचीत सुन रहे थे। ज़ेम्बख के चले जाने के बाद वे मुझसे बोले "कोई फिक्र नही। हम तुम्हारी हर तरह मदद करेगे।"
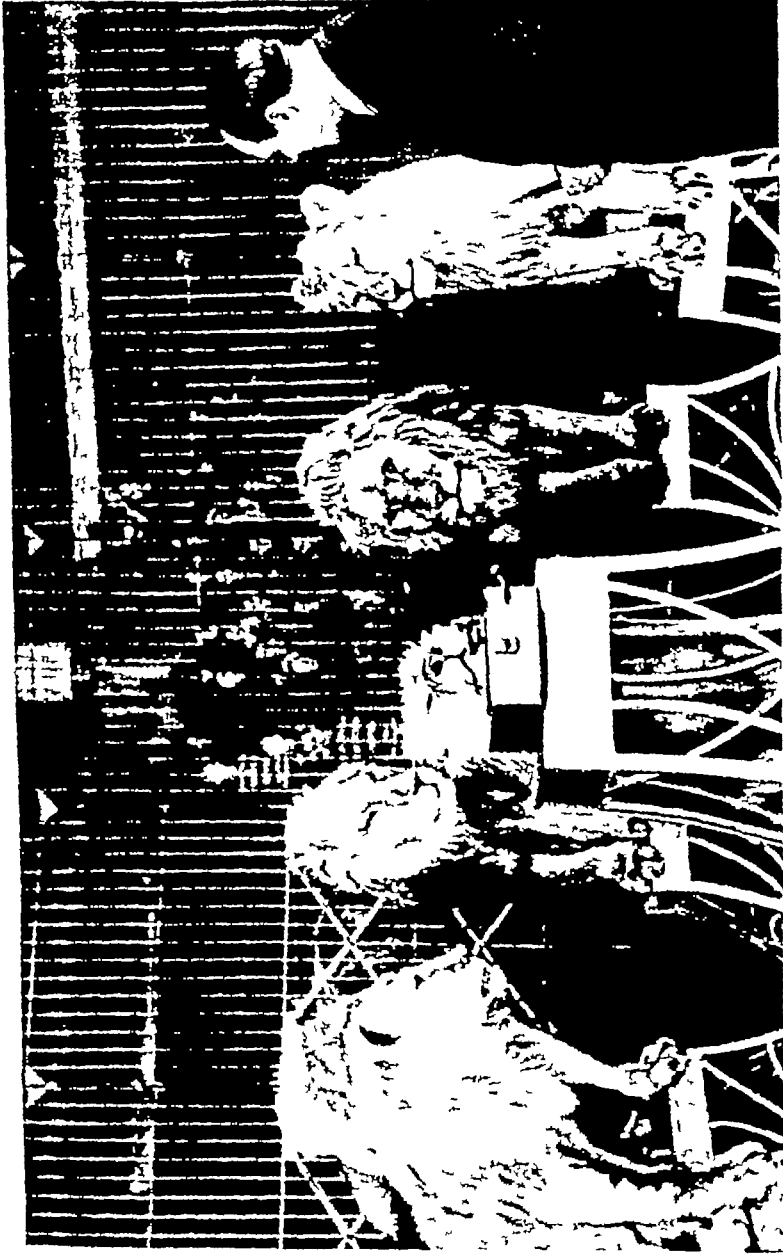
सगीतप्रेमी मडली

पिरामिड

इस प्रकार मैंने कार्ल जेम्वख़ की शागिर्दी शुरू की। दूसरे दिन सवेरे मैं ६ की वजाय ८ वजे ही सरकस पहुच गया। मैं अस्तवल में शेरो के पिजडो तक हो आया। पहली नज़र में मुझे सव शेर एक जैसे लगे, लेकिन मैंने प्रत्येक शेर को अलग अलग वुलाने और उनकी निगाहे और नाम याद करने का निश्चय किया। इस वात में ज़ेम्वख से सहायता मिलने की मुझे विल्कुल आशा न थी। मुझे अपने पैरो आप खडा होना था।

जिस वात की मुझे आशका थी, वही होकर रही। ज़ेम्वख तो साफ मेरा विरोधी निकला। वाद में पता लगा कि उसका विचार अपने शेरो को एक जर्मन साथी, एर्नेस्ट शु को सौपने का था। यह सज्जन भी उस समय सोवियत सघ में खेल दिखला रहे थे। शु के अपने लगभग सभी शेर मर चुके थे। उसे ज़ेम्वख के शेरो का ही भरोसा था। ज़ेम्वख़ का ख्याल था कि उसके अलावा केवल शु ही ऐसा है जो शेरो को साघ सकता है।

जेम्वख़ के दो रखवाले थे। यह कहने की कोई आवश्यकता नही कि मैंने यथासभव खुश करके उनसे पशुओ के वारे मे जानकारी प्राप्त करन की कोशिश की। ज़ेम्वख सचमुच शोपक था। उसने कभी भी अपने सहायको को दुआ सलाम तक न की। उल्टा वह उनपर सदा गरजता रहता, और जवर्दस्ती उनसे जूतो में पालिश या कोट में व्रश करवाता। फ़्रित्स नाम का चौकीदार मेरी जी हुज़ूरी करने लगा, पर मैंने उसे समझाया कि मेरी खुशामद करने की कोई ज़रूरत नही, क्योकि हम दोनो सरकार के मुलाज़िम है। और मै सिर्फ काम के समय तुम्हारा अधिकारी हू। और काम के वाद—साथी। जव मुझे पता लगा कि फ़्रित्स का रहने का इतज़ाम ठीक नही है, तो मैंने उसके रहने के लिए अच्छे कमरे का प्रवध करवा दिया। वह प्राय मेरे साथ खाना खाता और सिनेमा देखने जाता। मेरे भाईचारे का उसपर यह असर हुआ कि वह मेरा दोस्त वन गया, और पशुओ के वारे मे सव कुछ वताने लगा।

मैंने कई राते शेरो के कटघरो के आगे बैठकर गुजारी। मुझे उनकी हरकते देखने मे आनन्द आता। कुछ समय बाद ही मै शेरो को पहचानने लग गया, और उनके नामो से भी परिचित हो गया। मै उन्हे नाम से पुकारता और घटो उनसे बतियाता रहता। अब शेर भी मुझसे वाकिफ हो गये, और उन्होने मुझे अपना दोस्त मान लिया। वे मेरी आवाज़ पहचानने लग गये। यदि मैं किसी शेर को नाम लेकर पुकारता तो वह झट मेरे ओर मुह कर लेता। कई बार मै उनका रुख बदलवा देता ताकि वे मेरी आदेशो के अभ्यस्त हो जाये। पर मेरे लिए सबसे दिलचस्प बात तो जेम्बख का काम देखना था।

ठीक नौ बजे ज़ेम्वख आ धमका। उसने रखवालो को कटघरे और सुरग को तैयार करने की आज्ञा दी। फिर पिजडे मे घुसकर उसने शेरो से छेडछाड शुरू कर दी, ताकि वे उसपर हमला करे। यह सब वह मेरे दिल में शेरो का खौफ बैठाने के लिए कर रहा था, ताकि मैं इस पेशे के खतरो को अच्छी तरह जान जाऊ। मै यह चाल ताड गया, और बडे गौर से उसकी और शेरो की हरकतो को समझने की कोशिश करने लगा। ज़ेम्वख भी यह समझ गया कि मै आसानी से भभकी में आनेवाला नही हू। अब उसने दूसरी तरकीब सोची' वह मुझसे गदे-मदे काम लेने लगा— जैसे कटघरे साफ करना, सिग्रेट खरीदना, कोट लाना, आदि आदि। मैं भी पूरी तरह उसकी फर्मानिबर्दारी करता। मै खूब समझता था कि इसके अलावा कोई चारा नही। मैंने सब कुछ खुशी खुशी पी जाने का फैसला किया।

दूसरे दिन जेम्बख ने मुझसे एक हलफ-नामे पर दस्तखत करने को कहा। इसमें यह लिखा हुआ था कि काम के दौरान में मेरी हिफाजत की जिम्मेदारी उसकी बिल्कुल न होगी। यह भी एक प्रकार से मुझे डरावा ही देना था। अगर्चे मेरे सरकस के दोस्त मुझको मना करते रहे, मैंने चट उस शपथ-पत्र पर हस्ताक्षर कर दिया।

मुझे अभी भी निडर देखकर, ज़ेम्बख ने और भयकर उपाय वरतने की ठानी। अभी हमे काम करते चार ही दिन हुए थे कि वह अचानक कह उठा "अच्छा, जवान, कटघरे में जाना चाहते हो?"

"जैसी आपकी इच्छा।"

"हू, अदर जाओगे या डर रहे हो?"

मै तुरन्त दोशाखा और एक छडी लेकर कटघरे की ओर बढ गया। ज़ेम्बख पहले से ही अदर खडा था। मैने दरवाजा अभी आधा ही खोला था कि तीनो शेर—प्रिमस, रिफी और मुराद—मेरी ओर लपके। मैने झट वाहर से दरवाजा वद कर दिया।

दूसरे दिन मैने स्वय ही ज़ेम्बख से कहा कि मै शेरो के कटघरे में जाऊगा। उसे वात जची। मैं भी हर वात के लिए तैयार था। दोशाखा मेरे हाथ में था, फिर भी मेरा दिल काप रहा था। पर मैने दिल कडा किया और दरवाजा खोल कर कटघरे में घुस गया। प्रिमस और रिफी, दोनो शेर विजली की तरह मुझपर टूट पडे, पर इस वार मैं पीछे नही हटा। उल्टा, आगे वढकर मैंने उनपर हमला कर दिया। हडवडाकर शेर पीछे हट गये। ज़ाहिर था कि वे भी हरान थे। दोनो शेर मेरी तरफ घूरते रहे, और इस ताक में थे कि कव मैं चूकू और कव वे मुझे ले डाले। मेरे साहस से ज़ेम्वख भी उतना ही हैरान था जितना कि उसके शेर। वल्कि वह तो इस तरह हक्का-वक्का हो गया कि जव मै सही सलामत कटघरे से वाहर आया, तो उसने मुह से एक शब्द भी न निकाला।

इस प्रकार दस दिन तक मै लगातार शेरो के कटघरे मे जाता रहा। इतना ही नही। धीरे धीरे मै दरवाज़े से आगे वढकर कभी इस ओर वढता, और कभी उस ओर। अपनी आखें मै सदा इन ज़ालिमो पर ही जमाये रहता। लेकिन एक वार, पल भर को मैने सिर दूसरी ओर किया ही था कि प्रिमस विजली की तरह मुझपर झपटा, और पजा मार वैठा। मेरी पीठ

मे खरोच आ गयी, और कमीज फट गयी। मुझे लगा कि खून वह रहा है। खैर यही हुई कि मेरे होश-हवास ठीक रहे। मैंने उसे मार भगाया, और पूरे १५ मिनट तक कटघरे में ही बना रहा कि जेम्वख और उसके दुलारे शेर यह जान ले कि मैं अब भी ज़िदा हू और मज़े में हू। खैर, इस हादसे से मुझे एक सबक ज़रूर मिला। मै सीख गया कि जब कटघरे में रहो तो पशुओ को आख की ओट न होने दो।

ज़ेम्वख ने सारे दिन रिहर्सल किया और शाम को मास्को सरकस मे अपने शेरो का खेल पेश किया।

उन दिनो सुवह के शो खूब हुआ करते थे। अपनी ट्रेनिग के १६ वे दिन ही मैंने जेम्वख से कहा कि मै सुबह के शो में शेरो का खेल दिखाना चाहता हू।

जेम्वख प्रथम तो वडा क्रुद्ध हुआ। वह लवा चौडा लैकचर झाडने लगा कि इस काम के लिए वडे तजुर्वे और ट्रेनिग की आवश्यकता होती है, पर फिर सहसा ही रुका और कुछ सोचकर वोला—मुझे कोई आपत्ति नही। दिल मे वह अभी भी यही मना रहा था कि शेर मेरे हाथ न आयें और मैं सदा के लिए हिम्मत हार वैठू। इसके वाद वह सरकस-वोर्ड के पास गया, और सफाई पेश कर आया कि यदि मुझपर कोई सकट टूटें, तो उसकी कोई ज़िम्मेदारी न होगी। वोर्ड ने मुझे वुलाया और राय दी कि इस मामले मे मैं जल्दवाजी न करू। पर, मुझे अपने पर पूरा भरोसा था। ज़ेम्वख से जो कुछ सीखना था, मैं मीख चुका था।

दूसरे दिन तडके ही मै सरकस पहुच गया। मैंने शेरो को कुछ खिलाया-पिलाया, उनका मूड समझने की कोशिश की, और फिर खेल के समय का इतजार करने लगा। जब जेम्वख आया तो मैंने उसे अपने इरादे के वारे मे याद दिलाया। उत्तर मे वह कुछ वुदवुदाया और चला गया। पर, मेरे पास तो शेर-मास्टरो की पोशाक तक न थी। सो मैंने किसी

से बिर्रजिस मागी, किसी से मखमल की जाकेट, और यह पहन ऊपर से अपने फुल बूट डाट लिये। उस दिन सरकस के सब कर्मचारी एक साथ तमाशा देखने आये। ज़ेम्बख महोदय सब से आगे बैठे। उनकी मुख मुद्रा से यह साफ साफ झलकता था कि वक्त-जरूरत भी वे मुझे किसी तरह का सहयोग देने को तैयार नही होगे।

मेरा पहला खेल ठीक रहा। शेर विनम्र बने रहे। कभी कभी वे गुर्रा भर देते, पर मै झट उन्हे काबू मे कर लेता। हा, एक शेर ने भूल में, मुझसे आलिगन करते समय पजो से मेरी जाकेट फाड डाली। इसका दर्द मुझे शो में हर क्षरा बना रहा, क्योकि जाकेट अपनी न थी, वेगानी थी।

शो की समाप्ति पर शेरो को उनके कटघरे में पहुचा मै स्वय ड्रेसिग-रूम में चला गया। मेरे सरकस के साथी मुझपर बधाइया बरसाने लगे, और झूम झूमकर मुझसे हाथ मिलाने लगे।

बस, अब मै बाकायदा शेर-मास्टर वन गया। उस दिन से हर सुवह के शो मै करता और रात के शो ज़ेम्बख महाशय।

मुझे अत्यत हर्ष और गर्व था कि मैने ज़ेम्बख का मनगढत सिद्धात और उसके मन के डर सभी गलत सावित्त कर दिये। दृढ इच्छा-शक्ति, धैर्य, साहस, लगन और पशुओ को समझने का सच्चा प्रयत्न—वस इन्ही चीजो के सहारे मैने १७ दिनो में ही इन सिहो को वश में कर लिया।

अव मुझे यह भी समझ में आ गया कि दो मास्टर शेरो के एक ही सेट से खेल करे, इसमें कोई तुक न थी। विशेपकर, जव मेरे और ज़ेम्बख की प्रणाली में इतना भेद था। ज़ेम्बख का तरीका डराने-धमकाने का तरीका था, कोडा, छडी, दोशाखा या जो भी उसके हाथ लग जाता, वह उसी का प्रयोग कर बैठता। खाली कारतूस चलाकर, होहल्लाकर, जैसे भी होता, वह उनसे अपना हुक्म मनवा लेता। शेर

दहाडते, गुर्राते, दौडते और उसे डराने की कोशिश करते। कई दफा तो ऐसा लगता कि उसकी जान अब गयी और तब गयी। और मै था कि शायद ही कभी कोडा फटकारा हो। मै उनसे प्रेम से पेश आता। मीठी मीठी बाते कर उनका दिल बस में करने का यत्न करता। लेकिन ज़ेम्बख की मार-फटकार, उसका दुर्व्यवहार वे इतनी जल्दी कैसे भूल जाते? परिणाम-स्वरूप, मुझे भी उनके सचित कोप का भाजन बनना पडता। मै उनके क्रोध को शमन करने की चेष्टा करता। जब कभी मै कोडा फटकारता, तो वह हडबडाते मेरी ओर उछलते, पर मेरी आज्ञा का पालन ज़रूर करते। पर किस अनमनेपन से वे करतब दिखाते! खेल समाप्त होते होते वे शात हो जाते, और सायकाल को शात एव प्रसन्न सिहो से बरतने का सौभाग्य ज़ेम्बख महाशय को प्राप्त होता। मुसीबत मै उठाता, मज़ा वह लेते। जाहिर था, हमारे मुख्तलिफ तरीको की वजह से शेरो की ट्रेनिग ठीक न हो सकी।

न मै तरीके से काम कर सका, और न ज़ेम्बख।

सरकस-बोर्ड ने यह स्थिति समझी, और नतीजा यह हुआ कि ज़ेम्बख को छुट्टी दे दी गयी। अब सुबह और शाम के शो मुझे ही करने पडते। पर मेरा कार्य सरल हो गया। शेर पहले जैसे चिडचिडे न रहे, उनके करतब भी और निखर गये। हमारे शो भी ज्यादा पसद किये जाने लगे।

प्रसगवश यहा यह बता दू कि कइयो का ख्याल था कि ये पशु विदेशी भाषा के अभ्यस्त हो गये, और यह रूसी नही समझेगे। यह बात भी गलत साबित हुई। एक मास के अदर ही मैने शेरो को रूसी आदेश सुनने-समझने का आदी बना लिया। सच तो यह है कि जानवर भाषा की बारीकियो की बनिस्बत लहजा अधिक समझता है।

खेल के बाद हर शाम को मै शेरो को देखने जाता। मै धीमी आवाज में शेरो के करतबो की तारीफ करता और हर एक को

गोश्त दे देता। वे जगले के पीछे जमा हो जाते। कई वार खेल के समय उनमे से एकाध उग्र हो जाता। मजे की बात तो यह थी कि जो शेर शैतानी कर वैठता, वह खुद इसे महसूस करता, और जब मै मुलाकात करने जाता तो शर्म के मारे कही छुपने की कोशिश करता, मानो उसे सामने आने में शर्म आती हो। जव मैं भले मानस शेरो की तारीफ करता तो नटखट शेर भी धीरे धीरे आकर घुर घुर करने लगते, और उनकी आखो में पश्चात्ताप की झलक होती। यदि मैं कभी काम में कोताही न करनेवाले भले मानस शेरो पर चिल्ला पडता, तो वे जगले से हट जाते और उचित रोष में आकर गुर्राना शुरू कर देते। यदि प्यार से मैं उनके साथ ज़ोर ज़ोर से वातचीत करता, तो वह इसे गलत समझ वैठते, और यदि मै मीठे लहज़े में उनकी भर्त्सना करता, तो वे उसे प्रशसा समझते।

शेरो के खेल में सिद्धि प्राप्त करने में मुझे अधिक समय नही लगा। मैं जल्दी ही सीख गया। अव इस खेल को सुधारने सवारने की चिता हुई। पोशाक का सवाल फिर आ खडा हुआ। मेरे लिए पूर्वीय वेश-भूषा – साफा, शलवार वगैरह का आर्डर दे दिया गया। उस समय पशु-मास्टरो की प्राय यही पोशाक होती। इस पेशे में आने से पहले भी सरकस के लोगो ने मुझे यह वतलाया था कि पशु-मास्टरो की पोशाको से सदा पशु-गध आनी चाहिए। वे तो यहा तक कहते थे कि नयी पोशाक को पहनने से पहले उसे जानवरो के कटघरे के आगे कुछ समय के लिए लटकाये रखना चाहिए।

मैंने सुनी-अनसुनी कर दी और वही पूर्वीय पोशाक पहन पहले एक रिहर्सल और वाद मे शो किया। मैंने अनुभव किया कि 'पशु-गध' के वारे में 'विशेषज्ञो' की यह थ्योरी कोरी वकवास है। पोशाक से वढकर अधिक महत्वपूर्ण मास्टर की आवाज है। पशु उसपर ही अधिक ध्यान देते है।

बाद में 'सरकस' नामक एक फिल्म में मुझे एक पात्र की दोहरी भूमिका अदा करनी पडी। उस अभिनेता के समान ही वेश-भूषा बनाकर मैं शेर के पिजडे मे घुस गया। पहले तो शेर मेरे ऊपर झपटे, पर जब मैंने उनके नाम लेने शुरू किये, तो वे ठिठक गये। मैं उनसे बाते करने लगा, तो उनकी परेशानी खत्म हो गयी।

जब मैं अपने नये खेल की तैयारी करने लगा, तो मैंने पुराना 'पिरामिड' खेल न करने का निश्चय किया। 'पिरामिड' खेल में यह होता है कि शेरो को खास किस्म के टबो और सीढियो पर बैठाया जाता है। मैंने हर शेर को अकेले अकेले करतब करना सिखाया। हमारे दर्शक खतरनाक, हड्डी कपा देनेवाले करतब देखना उतना पसद नही करते जितना कि बहादुरी, हिम्मत और कौशल के खेल। मैंने अपने खेलो मे से रोगटे खडे करनेवाले सब ट्रिक निकाल दिये। मै तो केवल जानवरो को बहलाकर हसी हसी मे उनसे करतब कराना पसद करता।

मेरे पहले दल में ७ शेर थे—प्रिमस, उसका भाई रिफी, अली, क्रिम, मुराद, वैकल और केदिफ। प्रिमस खूखार और चालाक जानवर था, लेकिन बात खूब पकडता और उसे सिखलाने मे कही कम समय लगता।

इसके उल्टे अली आरामतलब, आलसी, नर्म तबीयत और मद बुद्धि था।

प्रिमस दभी नही था। पर, उसके भाई रिफी में एक कमीनी रग जरूर थी। वह दगाबाज़ था। अगर कभी वह मुझे बेखबर पाता, तो हमला करने से कभी न चूकता। यह शागिर्द मेरे लिए एक समस्या था। भडकीले स्वभाव का होने के कारण वह जल्दी तुनक उठता। बिगड कर मुझपर झपट्टा मारता, गुर्राता, दहाडता और उसे दौरा-सा आ जाता। जब तक वह शात न हो जाता, मुझे अपना काम बद रखना पडता।

बैकल भी सुस्त मिजाज था और जब रिहर्सल या अभ्यास-करतब की बात आती, तो उसका व्यवहार ऐसा हो जाता मानो उसे सिद्धातत यह काम पसद ही नहीं। उसे तो बस एक जगह पडे रहना ही पसद था। इन सब बातो के बावजूद उसने बडी जल्दी ही बोतलो पर चलना सीख लिया।

कठिन करतब अली के बूते के न थे। पर, इस प्रेमी जीव के लिए भी मैंने काम ढूढ निकाला। हम एक दूसरे को कसते, चूमते, और मैं उसपर सवारी गाठता। वह अपने साथियो के साथ ज़मीन पर लोट लगाता। अली-सिह बस इतना ही सीख सका।

मुराद क्रूर वृत्ति का परन्तु अध्यवसायी पशु था। गेंद पर बैठकर उसको चलाना, चार चार या पाच पाच गज़ के फासले पर रखे एक टब से दूसरे टब पर छलाग मारना, और दूसरो के साथ लोट मारना, ये सब करतब उसने सीख लिये। वह स्वभाव से धौस जमानेवाला था। वह प्राय दूसरे शेरो से लड पडता। प्रिमस तो उसका जानी दुश्मन था। उसके साथ मुझे खास बरताव करना पडता। रिहर्सल के समय जब तक मै उसे लज़ीज़ गोश्त की बोटी न देता, तब तक वह कोई भी काम न करता। वास्तव मे उसकी भूख शेरो जैसी थी।

इस दल का मुखिया ११ वर्ष का क्रिम था। पर, वह तबीयत का बुज़दिल और बडी ही जल्दी घबरा उठता था। मेरे सामने तो वह बराबर कापता रहता यद्यपि मैंने उसे कभी उगली तक न छुआयी थी। ज़ेम्बख के दुर्व्यवहार के कारण ही बेचारा क्रिम इतना कायर हो गया था। सीखनेवाले जानवर के लिए कायरता से बुरा कुछ नही। बडे परिश्रम के बाद मै उसे केवल अन्य सिहो के साथ उठकबैठक करना या लोट लगाना सिखा पाया। जेम्बख के समय मे क्रिम केवल टब पर बैठना ही जानता था।

मेरे प्रथम दल के 'अभिनेताओ' का यही चरित्र-चित्रण, अथवा परिचय है।

मास्को मे खेल खत्म करने के वाद बोर्ड ने मुझे और मेरे शेरो को पेर्म नगर भेज दिया। यह यात्रा आसान न थी। दिसवर मास था, और ये सिह रूसी जाडे के आदी न थे। मैंने उनके सफरी कटघरो की छतो पर लकडी के वुरादे और फूस की गहरी परत जमायी। फिर उन्हे मोमजामे से ढाक दिया। इसके वाद ही कटघरो को मालगाडी में लादा गया। मार्ग मे शेरो को भोजन देना भी एक समस्या थी। जव गाडी रुकती, तो गोश्त के वडे वडे टुकडे इस होशियारी से कटघरो के अदर फेंके जाते कि जानवरो को कही ठड न लग जाये। इतनी देख-भाल के वावजूद केदिफ को डवल निमोनिया हो गया, और पेर्म में दो सप्ताह मुझे उसकी तीमारदारी करनी पडी। स्थानीय पशु-चिकित्सक से मुझे कुछ भी सहायता न मिल सकी। आखिर, उसके पास ऐसा मरीज़ कव आया था? केदिफ की डॉक्टरी मुझे खुद ही करनी पडी।

पेर्म से हम लोग सारातोव गये। वसत ऋतु का आगमन था—मार्च का महीना। पशु इस मौसम में प्राय वेचैन हो जाया करते है। रिहर्सल के समय प्रिमस भडक जाता। उसका शमन करना कठिन हो जाता। वाद मे उसका भाई रिफी भी उससे मिल गया, और अव एक के वजाय दो शेरो से मुझे लोहा लेना पडा।

इन भाइयो मे से एक ने मेरी वाह पकड ली, लेकिन वडे मिया क्रिम झट से टव मे कूद पडे और दोनो भाइयो की पूछ पकड कर खीचने लगे कि मुझे कटघरे से निकल भागने का मौका मिल जाये। यदि क्रिम ने मेरी मदद न की होती, तो इन दोनो शेरो ने मुझे ले डाला होता।

स्तालिनग्राद मे हम 'जिदा कालीन' नामक खेल रिहर्सल कर रहे थे। इस करतव मे सव शेरो को एक कतार मे लेटना पडता, और रिफी

और मै उनपर लेट जाते। सदा की भाति मैने रिफी का पजा लेकर अपने चेहरे पर रख लिया। दो तीन बार ऐसा करने के बाद मै चुस्ती से बैठ गया, और समझने लगा कि आज मैने विशेष मुहिम मार ली है। इतने में रिफी ने अपने नाखन निकाले और मेरा गाल नोच खाया। खैर, मुझे इससे बडा सबक मिल गया। मेरी समझ मे आ गया कि उठने से पहले शेर का पजा धीरे से हटा देना चाहिए। हिसक पशुओ की अजब आदत होती है। कोई 'शिकार' इनके पजे से जितना ही छूटने की कोशिश करता है, यह उसे उतना ही कसकर पकडते है।

सन् १९३५ मे इवानोवो नगर मे एसा ही एक हादसा हुआ जिसमे मेरी जान जाते जाते बची। मार्च का महीना था और शेर जानलेवा मूड में थे। एक रिहर्सल के समय मै सुरग से निकल रहा था कि इन दो 'डाकू भाइयो' यानी प्रिमस और रिफी ने अचानक मुझपर हमला कर दिया। मै उन्हे इसी नाम से पुकारता था। वहा इतनी जगह न थी कि मै उनपर उल्टा वार कर उन्हे भगा सकू। मै जानता था कि जानवर भयकर मुद्रा में है, इसलिए मै अपने साथ रिवाल्वर रखता था लेकिन कारतूस हवाई होते थे। हा, तो मेरे दाए हाथ में रिवाल्वर था और वाए हाथ मे ५ फुट लवी एक छडी। जानवर सधानेवाले इसे प्राय अपने साथ रखते है, ताकि जानवर उनसे ज़रा दूर ही रहे। पर शेर इसे खूब समझते है, और कोशिश करते है कि किसी तरह से सोटी से बचकर अपने मास्टर पर हमला कर सकें।

रिफी ने पहल की, पर मैने सोटी से फौरन उसे रोक दिया। उसने गुस्से में आकर सोटी को ही अपने पजे से तोड-मरोड डाला और फिर मुझपर झपट्टा मारा। अब मुझे रिवाल्वर निकालना पडा। जब शेर के मुह में खाली रिवाल्वर चला दिया जाता है, तो उसकी आवाज से वह भौचक्का हो जाता है। धुआ उसके गले मे इतनी खराश पैदा कर देता है कि वह झट से पीछे हट जाता है, स्तभित हो उठता है और

फिलहाल अपने शिकार की बात भूल जाता है। बस, उन्ही क्षणो में मास्टर अपने बचाव के उपाय ढूढ निकालता है।

पर, इस बार दुर्भाग्य से कारतूस गीले निकले और रिवाल्वर के चलने से यदि कोई डरा, तो वह मै! जिस हाथ में टूटी हुई सोटी थी, रिफी ने मेरा वह हाथ पकड लिया। तब मैने रिवाल्वर के कुदे से शेर के सिर पर वार किया, लेकिन वह और भी तेज़ होकर मेरे हाथ से लटक गया। उसकी दहाड सुनकर प्रिमस भी वहा आ पहुचा। उसने मेरी दाई बाह पकड ली। अब तो मेरी शामत ही आ गयी। इन दोनो हत्यारो ने मुझे सुरग से कटघरे के अदर खीचना शुरू किया। मै खूब समझ रहा था कि यदि यह क्रूर प्राणी कही मुझे घसीट कर अखाडे मे ले गये, तो वे मेरी बोटी बोटी नोच डालेंगे। इसलिए मैने छड पर अपने पैर मज़बूती से जमा लिये और हम मे बाकायदा रस्साकशी शुरू हो गयी।

बेचारे रखवाले भी कुछ करने मे असमर्थ थे, क्योकि आग बुझान की दमकल तैयार न थी। उन्होने सीखचो में से लोहे की छडें डाल कर शेरो को हटाने की कोशिश की, परन्तु नतीजा कुछ न निकला। इतने मे इनमे से एक को कुछ सूझ आ गयी। उसने झपट कर बाल्टी उठायी और पानी उनके चेहरो पर फेक दिया। वे उछले और मेरे हाथ छोडकर पीछे हट गये। दूसरे ही क्षण, मेरे सहायक ने अखाडे के कटघरे का दरवाज़ा बद कर दिया और मै दाई तरफ हो गया। शेर फिर मेरी ओर लपके, पर अब मै दरवाज़े की ओट में सुरक्षित था। मै अभी सुरग के बाहर निकल ही रहा था कि क्या देखता हू कि दोनो शेर आपस मे गुत्थमगुत्था हो गये। बडी मुश्किल से कही १५ मिनट बाद मै उन्हे उनके दरबो मे ढकेल सका। पर, वे १५ मिनट मुझे कई घटो के बराबर लगे।

आगामी कई मास तो मेरी अपनी तीमारदारी में ही लग गये। अपने घाव ठीक हो जाने के पश्चात जब मै वापिस काम पर आया तो मुझे इन शरारतियो को फिर से सरकस लायक बनाने में बडा समय लगा। ऐसा

लगता था कि इन दोनो कातिलो ने पुराना वैर भुला दिया है ताहम मै उन दोनो हत्यारो पर कडी निगाह रखता क्योकि इन्होंने मेरी जान लेने मे कुछ बाकी न रख छोडा था।

किसी भी शेर-मास्टर के जानवरो का दल जितना बडा होगा उतने ही अधिक आश्चर्य उसके सामने आयेंगे। इनसे जितनी आसानी होती है, उससे कही ज्यादा रुकावट पडती है।

प्रिमस और रिफी अभिन्न मित्र थे। जब कभी एक मुझसे लडता तो दूसरा उसकी मदद को झट पहुच जाता। मै इनमें से एक को आसानी से छोड सकता था। पर, मैंने ऐसा नही किया क्योकि दोनो में ही सरकसी-प्रतिभा बहुत थी।

बहुत समय तक दोनो को देखने-समझने के बाद मै इस नतीजे पर पहुचा कि इन दोनो मित्रो के बीच खुट्टी करा देनी चाहिए। इनके स्नेह की कमज़ोर कडी इनकी भूख थी। बस मैंने दोनो को एक ही पिजडे में कर दिया और मास का एक टुकडा डाल दिया। फिर क्या था, दोनों भाइयो मे ठन गयी। दोनो भूखे रह गये, मगर दोनो ने एक दूसरे को अधमरा कर दिया। तीन दिनो तक मैंने उन्हे खाना इसी तरह दिया। फलत दोनो घोर शत्रु हो गये। अब यदि एक दूसरे की आवाज सुनता तो बजाय उसकी मदद को आने के, उल्टा मुह फेर लेता और कट जाता। अब मै दोनो से अलग अलग निपट सकता था।

जब मास्को फिल्म-स्टूडियो ने मुझे सरकस पर फिल्म बनाने के लिए आमन्त्रित किया तब तो मै पक्का शेर-मास्टर बन चुका था। अपने प्यारे शेरो के साथ फिल्म बनवाना मुझे बहुत प्रिय लगा। मैंने खुशी खुशी फिल्म के डाइरेक्टर-प्रोड्यूसर ग्रिगोरी अलेक्सान्द्रोव से इस फिल्म का सिनेरियो दिखाने को कहा।

सभवत मेरे कई पाठको ने हमारी वह श्रेष्ठ फिल्म देखी होगी और उन्हे उसका ध्यान होगा। इसका एक पात्र स्कर्मेकिन, एक खोया खोया-

युवक है जो सरकस के आस-पास मडराते मडराते भूल मे शेर के पिंजडे मे जा घुसता है। अब जिस अभिनेता को यह पार्ट अदा करना था, उसे शेरो से कभी वास्ता नही पडा था। इसलिए स्टूडियो ने मुझे उसका 'डबल' पार्ट अदा करने को कहा।

यदि मुझे किसी बात की चिता थी तो वह यह कि शेरो को स्पॉट-लाइट भायेगी या नही। खैर, चद रिहर्सलो के बाद शेर भी इस रोशनी के आदी हो गये। इससे फिल्म डाइरेक्टर और कैमरामेन सब बडे सतुष्ट हुए और हम लोग अपनी फिल्म बनाने में लग गये।

बात यह है कि कटघरे में यदि कोई भी नयी चीज़—टब, बैंच, स्टूल आदि रख दी जाये, तो शेर की स्वाभाविक इच्छा उसे तोड फोड डालने की होती है। जब हम यह फिल्म बना रहे थे, तो इत्तिफाक से मैंने दो नयी कुर्सिया उनके कटघरे में लाकर रख दी। इन्हे देखते ही प्रिमस उनपर कूद पडा और लगा उन्हें अपने दातो से चबाने। बाकी साथियो ने भी यही किया और मेरे देखते देखते कुर्सिया चूर चूर हो गयी। हमें शूटिंग बद करनी पडी, और हम शेरो के शात हो जाने की प्रतीक्षा करने लगे।

मैंने सिनेमावालो को बार बार हिदायत कर दी थी कि शेरो के कटघरे से सदा दूर ही रहे, पर एक बार ऐसा हुआ कि असिस्टेंट कैमरामेन कटघरे के बिल्कुल पास जाकर उनकी फोटो लेने लगा। यह देख रिफी का पारा चढ गया, उसने ताव मे आकर कैमरामेन की बाह पकड ली और जगले के पास घसीट कर लगा उसकी खबर लेने। ज्यू ही मैंने यह देखा, मै दौडा और मैंने रिफी को भगा दिया। घायल और डरे हुए कैमरामेन को हम लोग उठाकर ले गये। अच्छी बात यह हुई कि उसके घाव गहरे नही थे, और जल्दी भर गये। खैर, वह यह कहने लायक नहीं रहा कि वह शेर के मुह मे बाल बाल बचकर निकल आया।

शूटिंग इस चतुराई से की गयी कि सभी दर्शको ने एक स्वर मे यही कहा कि सचमुच स्कमेकिन ने शेर की दाढी हिला दी।

फिल्म बनाने के बाद मैं फिर मास्को सरकस में काम करने लगा। अब सरकस मे काम करते मुझे पूरे २५ वर्ष हो गये। ३ दिसबर, १६३५ को मेरे सम्मान में एक शो किया गया, और उसी दिन रूसी जनतत्र की सर्वोच्च सोवियत के प्रधान-मडल ने मुझे सम्मानित कलाकार के पद से सुशोभित किया।

मैं वह दिन कभी नही भूल सकता, जब सोवियत वायु-चालक वलेरी च्कालोव मेरे खेल को देखने आया। इटरवल में वह पर्दे के पीछे आया और उसने मेरे कौशल और शो तथा मेरी कार्य-शैली की तारीफ की। हसी हसी में वह मुझसे बोला "यार यह खतरनाक पेशा तुमने क्यो इख्तियार किया, और बैठे-बैठाये जान हथेली पर क्यो ले ली है?"

"भाई, तुम्हारा पेशा मुझसे कुछ कम खतरनाक तो नही", मैंने उत्तर दिया।

"ना भाई, मैं तुमसे पेशे की अदली-बदली नही कर सकता," उसने जवाब दिया।

यह सच है कि शेर देखी और सुनी बात को जल्दी याद रखते है। मुझे भी इस बात के सबूत मिले। जब मैंने अपना सिह-दल, अपने प्रिय शिष्य और उत्तराधिकारी ग्रेकोव को सौंपा, तो मैंने अली को चिडियाघर भिजवा दिया। मैं नही चाहता था कि यह वृद्ध वनराज जवान शेरो के साथ मारा मारा फिरे।

दो बरस बाद मुझे उफा नगर में एक सफरी चिडियाघर के साथ हूबहू अली जैसा ही एक शेर दिखाई दिया। मैंने उसे पहचान लिया। फिर भी डाइरेक्टर से शका-समाधान करना उचित समझा। जब मैंने उससे पूछा कि क्या यह शेर अली ही है, तो उसने कहा, "नही", और साथ ही मुझे यह भी विश्वास दिलाया कि यह शेर कभी भी मेरे सरकस मे नहीं रहा।

मैंने उसकी बात पर विश्वास नही किया, और मै धीरे से उसके कटघरे के पास चला गया। वह सो रहा था। मैंने उसका नाम लेकर पुकारा, और पहले से ही मीठे स्वरो में बोलने लगा। शेर ने चौंक कर आखे खोली, जगले के पास खडा हो गया और तरह तरह से अपनी प्रसन्नता प्रकट करने लगा। मै उसके जगले से लगकर खडा हो गया। शेर ने जगले में से पजा बाहर निकाल मुझे अपने निकट खीच लिया, और ऐसे मुह बनाने लगा जैसे कि कोई बिलूगडा दूध माग रहा हो। आप समझ सकते हैं कि इस दृश्य का मुझपर क्या प्रभाव पडा होगा। दर्शको ने अपनी आखो पर विश्वास नही किया। मैंने सारा मामला उन्हे समझाने की कोशिश की। भला, इस बात में क्या सदेह रहा कि वह शेर अली ही था।

प्राय ऐसा भी हुआ कि लोग कटघरो के आसपास खडे रहे, और मेरे शेरो ने उनकी ओर ध्यान नही दिया। पर, यदि कभी मै दर्शको में जाकर खडा हो गया, तो यही शेर सीखचो के पास आकर खडे हो गये, और जगले से अपना मुह रगड रगड कर मुझे बुलाने की चेष्टा करने लगे कि मैं उनके पास जाऊ और उनसे बाते करू। वे मेरी एक एक बात, व बोलने के लहजे को खूब समझते।

शेर का भी अपना मूड होता है। और शेर-मास्टर की बुद्धिमानी इसी में है कि वह उसे समझे और उसी हिसाब से काम ले। अगर शेर जोश में हो, तो पहले उसे ठडा करने की कोशिश करे। ऐसे मौके पर उसे बहुत सयम और धैर्य से काम लेना चाहिए। जानवर को हर तरह सतुष्ट और प्रसन्न करने का यत्न करना चाहिए, और कोई भी ऐसी हरकत न करनी चाहिए जिससे पशु चिडचिडा या बदमिज़ाज हो जाये।

सिंहो के स्वभाव, प्रकृति और शारीरिक चेष्टाओ के गभीर अध्ययन से मुझे अपने काम मे बडी सफलता मिली। वैसे यह बात अतिशयोक्ति मालूम देती है कि सरकस के लिए जानवर के डील-डौल का विशेष

चक्कर - हिंडोला
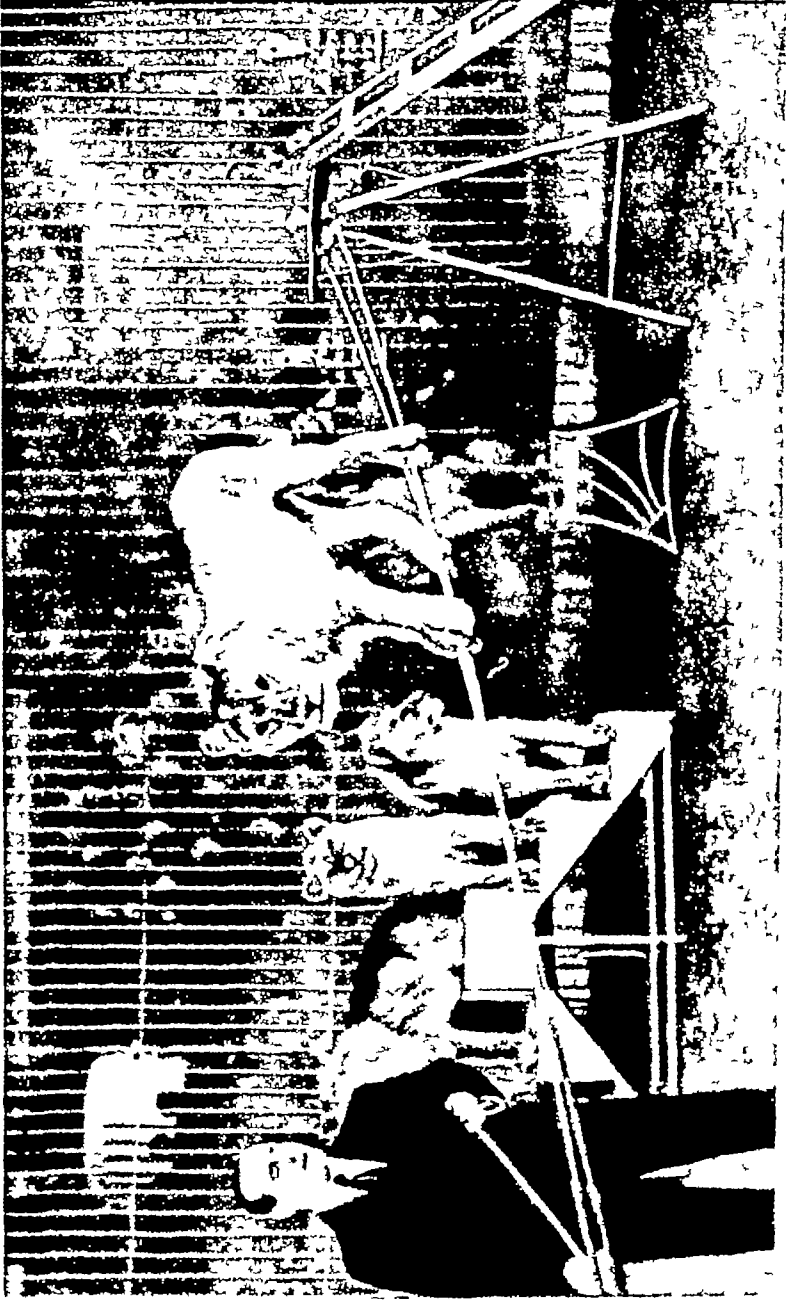
राजा तार का खेल कर रहा है

महत्व नही होता है, पर है यह बिल्कुल सच। मसलन , औसत कद के आगे के छोटे पजेवाले रीछ के लिए हैंड-स्टेंड का काम सीखना आसान है। इसी प्रकार, वडे शेर की अपेक्षा छोटा शेर या चीता चार चार, पाच पाच गज़ के फासले पर रखे हुए टवो पर कूदना-फलागना जल्दी सीख जाता है। और छोटी पिछली टागोवाले रीछ के लिए सीधे होकर चलना, या रोलर स्केट्स पर दौड लगाना कही आसान होता है।

रिहर्सल के दौरान में शेरो को छोटे छोटे चौकोर टवो पर वैठाया जाता है, जिनके ऊपरी भाग १६×१६ इच लवे और १६×१६ इच चौडे होते है। शेर के लिए आरामदेह टब कम से कम २४ इच लवा, और २४ इच चौडा होना चाहिए। लेकिन जान वूझकर छोटा टव रखा जाता है, ताकि वह आराम से वैठने की कोशिश करे और उसका ध्यान अपने मास्टर की ओर से हटा रहे । ऐसे छोटे टब को शेर वहुत खुशी खुशी छोड देता है और अपने ट्रेनर के सकेत-मात्र पर करतव दिखाने लग जाता है।

जैसा कि मैन पहले भी कहा है, पशु शब्द नही, लहजा समझते है। मधानेवाले की हरकते जानवर के लिए और भी अधिक महत्व रखती है , क्योंकि इन्ही इशारो पर शेर नाचता है।

मिसाल के तौर पर, मैं अपने शेरो के एक खेल की चर्चा करता हू। टव पर वैठे हुए शेर को मैं अखाडे के वीचोवीच वुलाता। जव वह आने मे आनाकानी करता, तो मैं उसके पास जाता। वह गुर्राता, मेरी छडी चवा डालता, अपनी जगह से हिलने का नाम न लेता। लेकिन ज्यू ही मैं अपने साथी से वडी छडी लेकर, शेर की ओर झपटता, त्यू ही वह टव से कूदकर फौरन अखाडे मे पहुच जाता और मनचीता करतव शुरू कर देता। यह देखकर दर्शकगण हस पडते। वे समझते कि शेर वडे वेंत से डर गया। पर, वास्तव मे वात यह होती कि शेर मेरी सीख के अनुसार ही काम करता। और मेरे झपटने पर ही टव से कूदकर अखाडे मे आ

जाता। तेजी से उसकी ओर लपकना ही मेरा सकेत होता। शेर को ऐसे इशारे सिखाना वडा कठिन काम है, और इसके लिए घटो जान-मार रिहर्सल की आवश्यकता होती है।

शेर की नज़र वडी तेज़ होती है। प्राय ऐसा लगता है कि शेर को दर्शको मे कोई दिलचस्पी नही होती, पर कोई आदमी कटघरे के नज़दीक आया नही कि उसने झपट्टा मारकर उसे अपनी ओर घसीटा।

मुझे याद है, वतूमी में, मैंने अपने सहायको को सावधान कर रखा था कि लोगो को शेरो के कटघरे से दो कदम के फासले पर ही रखा जाए। एक दिन हमारे एक कर्मचारी ने सोचा कि शेर तो उसे पहचानते ही है, बस वह कटघरो के विल्कुल पास से गुज़रने लगा। एक शेर ने उसे देखा और झट पीछे से हमला कर उसकी वाह अदर खीच ली। भाग्य की वात कि मै दूर न था। उसकी चीख पुकार सुनकर मै तुरत ही उसकी सहायता को पहुच गया।

प्राय जनता मे यह भ्रम है कि सरकसी शेर तो पालतू विल्ले से ही होते है, और कोई भी जाकर उनसे छेडछाड कर सकता है, उन्हे थपथपा तक सकता है। पर वात ऐसी है नही। मुझे ऐसी कई घटनाए याद है, जव सधे हुए पशु वडे ही भयकर सावित हुए। इस लिए अजनवी आदमी इनसे जितनी दूर रहे, उतना ही अच्छा।

मै पहले ही कह चुका हू कि अपने पशुओ से मैने सदा मित्रता का व्यवहार किया है। इस सद्व्यवहार की सफलता का उदाहरण मेरा शेर त्रिम है। पाठको को शायद याद होगा कि जव यह शेर मुझे कार्ल जेम्वख से मिला था, तो यह वडा दब्बू और कायर-सा था। जव मै इसके पिजडे मे जाता, तो यह हडवडाकर इधर-उधर भागने लगता, कभी किसी कोने मे छुपने की कोशिश करता, और कभी जगले मे टकरा जाता, जैसे कि सीखचे तोडकर भागने की कोशिश कर रहा हो। जेम्वख के कुप्रभाव के परिणाम-स्वरूप वह अपने मास्टर से डरना या घृणा करना

ही जानता था। मैंने निश्चय कर लिया कि मैं उसे अपना मित्र बना कर ही रहूगा। बस, मैं घटो उसके साथ व्यतीत करता। उससे बतियाता, और उसे प्यार से तरह तरह के नामो से पुकारता।

मेरे मधुर व्यवहार का क्रिम पर धीरे धीरे प्रभाव पड़ने लगा। पर, अभी भी यदि मैं उसे प्यार करने के लिए हाथ बढाता तो वह उछल पडता और कोने में छिप जाता। पर, जगली शेर तक सद्व्यवहार और सद्भाव सराहते हैं। धीरे धीरे क्रिम ने मुझे दुलराने की अनुमति दे दी। वह मेरे हाथ से लजीज़ बोटिया भी लेने लग गया। लेकिन, अब भी वह मुझे सदेह की दृष्टि से ही देखता। खेल के दौरान में क्रिम मूक-बधिर बना अपने टब पर बैठा रहता। कही कई महीने बाद वह मुझपर विश्वास कर सका। फिर तो वह मुझसे प्यार-दुलार की आशा करने लगा। अब यदि मैं उसका सिर या अयाल खुजलाता, तो उसे कोई उज्र न होता। धीरे धीरे वह इतना निडर हो गया कि बिला किसी उज्र के मुझे अपनी पीठ पर बैठाकर सैर भी कराने लगा।

शेरो के इस दल के साथ मैंने कोई ५ साल तक काम किया। अब मैं इतना आत्मविश्वासी हो गया, जैसे कि मैं जन्म से ही पशु-शिक्षक हू। इस बीच जो दुर्घटनाए मेरे साथ हुई, उनसे मैं डरा नही। उल्टे, उनसे मैंने अपने कार्य में पूर्णता प्राप्त करने की प्रेरणा प्राप्त की।

नया सिह-दल

मेरे शेर अब बूढे होते जा रहे थे, और हमारे खेल की लोकप्रियता घटती जा रही थी।

तब मैंने सोचा कि या तो शेरो का नया दल ही लाया जाये, या फिर, कम से कम, बुड्ढों की जगह जवान शेर भरती किये जायें।

मुझे पहला विचार ही पसद आया। सन् १९३७-३८ में मैं मास्को के गोर्की पार्क में सरकस कर रहा था कि मुझे छ नये शेर दिये गये। उनमें से दो शेर तो साल डेढ साल के बीच रहे होगे। और बाकी चार ३ से ४ के बीच।

एक बार फिर मैंने हर शेर की विशेषताओ का अध्ययन शुरू कर दिया। मैं उन सब को एक बडे कटघरे में छोड देता और घटो उन्हे आपस में खेलते-लडते देखता रहता। हर एक शेर से मैंने व्यक्तिगत परिचय प्राप्त करने की सोची। मैं अलग अलग हर एक के पास जाता उन्हें गोश्त देता, और हुक्म देकर उन्हें अपने पास बुलाता। कई तो झट से आकर मेरे हाथ से मास के टुकडे ले लेते, मगर कई मेरे पास आने से डर जाते। इनमे कई शेर के बच्चे निपट जगली, और कायर थे, और कई कही अधिक बहादुर। वे मेरे पीछे पीछे आते और नाखून तक मार देते। उदाहरण के लिए, उस्मान प्राय मुझे अपने सग खेलने के लिए दावत देता।

यह मनोरजन एक पखवाडे तक चला। हर रोज़ तीन या चार घटे मैं उनके खेल-कूद और पैतरेबाज़ी देखने में बिता देता, और इस तरह उनके चरित्रो की विशेषताए जानने-समझने की चेष्टा करता। उनमें से एक शेर तो मुझे चिडियाघर भेज देना पडा, क्योकि वह बडा डरपोक था, और उसकी ट्रेनिंग पर महीनो ख़र्च करना ज़रूरी था। मगर मेरे पास इतना समय था नही। और सरकसवाले चाहते थे कि मैं उनकी ट्रेनिग आधे समय मे ही समाप्त कर दू। हा, तो चिडियाघरवालो ने मुझे उसकी जगह दूसरा शेर दे दिया।

पद्रह दिन के बाद मैंने तीन और शेर चिडियाघरवालो से बदल लिये। मैं वुद्धू शागिर्दो पर अपना समय नष्ट करना नही चाहता था क्योकि उस हालत मे तो मुझे अपनी योजना ही छोडनी पड जाती।

इस बार नये शागिर्दो को तालीम देते समय मैंने इस बात का विशेष ध्यान रखा कि उन्हें बिल्कुल नये नये करतब और बिल्कुल नयी नयी ट्रिके सिखलाऊ।

एक दिन गोर्की पार्क मे घूमते हुए मुझे बच्चो का चक्कर-हिडोला देखकर विचार आया कि अपने शेरो के लिए भी क्यो न इस मनोरजन की व्यवस्था की जाये।

इस चक्कर-हिडोला का डिज़ाइन मैंने अपने आप ही तैयार किया। अब मुझे यह विचार करना था कि इस दल के शेरो में से किस किसको यात्री और किस किसको चालक बनाया जाय। चार शेरो को मैंने यात्री बनाया, और दो को चालक। उनका काम अपने अगले पजो से चप्पू के माफिक हैंडल को चलाना था। मेरी पत्नी तमारा चक्कर-हिडोले के बीच में खडी होती।

रिहर्सल करने से पहले मैंने एक रूप-रेखा तैयार कर ली। पहला काम था शेरो को अपनी अपनी जगह बैठना सिखाना। मैंने एक ऐसा बडा टब तैयार करवाया जिसमे यह शाही मुसाफ़िर इकट्ठे बैठ सकते। तमारा उनके बीच में खडी हो जाती, उन्हें मास का प्रलोभन देती और इस प्रकार उन्हें अपनी अपनी जगह पर बिठलाने का प्रयत्न करती।

मैंने एक एक शेर के साथ रिहर्सल किया। एक छडी के सिरे पर गोश्त का टुकडा जमाकर मैं उसे शेर के आगे करता और हर शेर को अपनी अपनी सीट पर बैठाने ले जाता। उसे बैठाकर, वही गोश्त की बोटी मै खाने को दे देता। इस तरह वह अपनी जगह भी याद रख सकता। इस प्रकार शेर मेरा इशारा पाते ही चक्कर-हिडोले मे अपनी अपनी जगह संभाल लेते। पर यदि कभी मैं उनके स्थानो का क्रम बदल देता, तो वह धोखा खा जाते और खेल चौपट हो जाता।

पहले पहल मैंने यह अभ्यास एक शेर से आरम्भ किया, बाद में दो से, और जब दो सीख गये, तो तीन के साथ और फिर चारो के

साथ रिहर्सल शुरू कर दिया। अब सवाल था उस चक्कर-हिडोले को चलवाना। यह और भी कठिन कार्य था। साधारणत. कोई भी शेर-मास्टर पहले से नही जान सकता कि कौन-से करतब शेर आसानी से सीख सकते है क्योकि इनके व्यवहार और मूड के वारे मे कुछ भी कहना सरल नही है। ट्रेनिग देनेवाले को अपनी कार्य-प्रणाली में कई परिवर्तन करने पडते है और कई बार तो अपनी योजना तक छोड देनी पडती है।

पहले पहल चक्कर-हिडोला मैने खुद ही चलाया। रस्सी का एक छोर अपनी कमर में बाध, दूसरा एक हैडल के साथ वाध लिया। अपने दोनो हाथ खाली रखे। साथ ही मुझे शेरो को गोश्त भी देना था। यह आसान नही था। जिस किसी ने भी मुझे यह काम करते देखा, उसने यही कहा कि मै अपना समय वरवाद कर रहा हू। मैने इस सव की परवाह न की और दृढ प्रतिज्ञा ही कर अपने कार्य में रत रहा।

अतत मै चारो शेरो को हिडोले पर अपनी अपनी जगह पर वैठाने मे सफल हो गया।

मै दो या तीन चक्कर देता। अब वाकी दो शेरो को इसे चलाना सिखाना था। इसके लिए यह आवश्यक था कि वे अपनी पिछली टागो के वल खडे होकर हैडल पर अपने अगले पजे रखना सीखे।

इस सवध मे मुझे कई परीक्षण करने पडे, तव मै कही यह निश्चय कर पाया कि हैडल का आकार-प्रकार, उसकी लवाई, चौडाई और मोटाई कितनी हो। यदि हैडल उनके लायक न होते तो शेर उन्हे छूते तक नही। पशुओ की ट्रेनिग के लिए यह आवश्यक है कि हर काम उनके लिए सरल से सरल कर दिया जाय।

मै 'ड्राइवर' साहव को हैडल के पास ले गया, और गोश्त का लालच देकर, उन्हे पिछले पैरो के वल खडे होकर हैडल पर अगले पजे रखने पर राजी कर लिया।

जैसे ही उसने हैडल पर पजा रखा कि मैने हिडोले को चलाना शुरू

कर दिया। अब शेरो को यह समझाना था कि आगे से वे खुद इसे चलाया करेगे। उन्हें यह बात बिल्कुल ना पसद थी। खैर, धीरे धीरे मैने उन्हें इसपर भी राज़ी कर लिया। प्रतिदिन मुझे चार चार घटे के दो रिहर्सल करने पडते।

अब सब शेरो का रिहर्सल एक साथ आरभ हुआ। जब पहली बार मैने रस्से की मदद से हिडोले को चलाया तो सारे शेर तितर-बितर हो गये। आखिरकार इसमे भी मै सफल हो गया, पर मैने नया चक्कर-हिडोला माग कर ही यह खेल किया।

ट्रेनिग में तीन महीने इस तरह और लग गये। यह नया चक्कर-हिडोला बॉल-बेयरिग पर घूमता था। इसलिए ऐसा होता कि जैसे ही कोई शेर कूदकर अपनी सीट पर बैठने की चेष्टा करता कि यह चल पडता, और सिह जी लुढक जाते। जब तक सब सिह बैठ न जाये, हम हैडल को पकडे रहते।

जब तमारा चक्कर-हिडोले के बीच मे आकर खडी हो जाती, तो शेर समझ जाते कि इनका नबर आ गया। मास की बोटियो के लालच मे वे चट मे अपनी अपनी जगह बैठ जाते।

इस खेल मे तमारा को भी कई मज़ेदार अनुभव हुए। मास देने के लिए तमारा को हर शेर की ओर मुडना पडता। यदि कभी वह जल्दी न करती और चूक जाती तो दूसरा शेर अपने पजे से उसे अपनी ओर घुमा लेता। एक दिल्लगीबाज़ ने तो उसका पैर ही पकड लिया, और तब तक नही छोडा जब तक कि उसे अपना हक नही मिल गया।

कई बार, मै सुदर क्रिम को ही तमारा के स्थान पर चक्कर के बीच खडा कर देता। "बेटा, क्रिम! आज रात को तुम्हारी बारी है!" मैने इतना कहा नही कि क्रिम साहब अपनी जगह पर पहुच जाते।

यह न समझ लीजिये कि क्रिम मेरी बोली समझता था। वह तो केवल सकेत समझता था। मै किसी भी भाषा मे उससे बोलता, कोई

फर्क नही पडता। मुख्य वात थी चाबुक से उसकी सीट खटखटाकर उसका ध्यान अपनी ओर खीचना। यह खटखटाहट ही उसके लिए सकेत थी।

इस खेल के बाद मैने 'तार का खेल' पर काम करना शुरू किया। यह कठिन काम था। रस्से पर चलने मे शेरो के पजे छिल जाते थे। शुरू शुरू मे मैने उन्हें मोटे रस्सो पर चलना सिखाया। बाद में ज्यो ज्यो वे अपने को साधते गये मै धीरे धीरे पतले से पतले रस्से-रस्सिया काम मे लाने लगा। अत में वे पतले केबलो पर भी चलने लगे। इन केबलो का इस्तेमाल रस्सो पर करतब करनेवाले अक्सर किया करते हैं।

एक वार, एक मित्र के घर पार्टी हो रही थी कि ग्रामोफोन के सुप्रसिद्ध ट्रेड-मार्क 'हिज़ मास्टर्ज़ वोयस' की ओर मेरा ध्यान गया। उससे मुझे एक नयी वात सूझी कि शेरो को ग्रामोफोन के इर्दगिर्द बैठा दिया जाय। ज्यूँ ही ग्रामोफोन वजने लगे, ये अपने अपने टव से कूदकर ग्रामोफोन के आस-पास छोटे छोटे स्टूलो पर बैठ जायें, और गाना, अर्थात् ग्रामोफोन की आवाज को सुनने का नाटक करे।

सवसे पहले मुझे यह विचार करना था कि कैसे शेरो को ग्रामोफोन के पास लाया जाय, और फिर जव ग्रामोफोन वज चुके, तो कैसे वे, विना किसी प्रकट सकेत के, अपनी अपनी जगह वापिस चले जायें।

मैने सारी व्यवस्था के वाद इस खेल का रिहर्सल शुरू कर दिया। पर जैसे ही रिकार्ड वजने लगा, दो सिह ग्रामोफोन पर ही टूट पडे और उन्होने उसके टुकडे टुकडे कर दिये। पहले रिहर्सल का तो यह हश्र हुआ।

दूसरा रिहर्सल इससे भिन्न रहा। मैने एक मेज के वीचोवीच एक वक्स-सा रख दिया जो देखने में ग्रामोफोन-सा लगता था, पर इसके अदर गोश्त की वोटिया रखी हुई थी। मैने एक शेर को इशारे से वुलाकर वनावटी ग्रामोफोन के पास पडी स्टूल पर वैठने का आदेश दिया,

'जिंदा कालीन'

बोरिस एदर और पूपा

बोरिस ग्रौर तमारा एदर 'ग्रार्कटिक' प्रोग्राम दिखा रहे है

बोरिस एदर और सफेद भालू

और जव वह वैठ गया तो मैने वक्स का ढक्कन खोलकर उसमे से गोश्त की एक वोटी निकाली और उसे दे दी। इस तरह मैने शेरो को ग्रामोफोन के निकट वैठना सिखाया। मास हडप जाने के वाद शेर को यह समझते देर न लगी कि अव और हाथ लगना कुछ नही। वस, जैसे ही वह यह भाप जाता, अपने-आप जाकर अपने टव पर वैठ जाता। यह रिहर्सल मैने प्रत्येक सिह के साथ अलग अलग किया। नतीजा यह हुआ कि जव मै इस 'ग्रामोफोन' को मेज पर लाकर रखता, सव शेर दावत की आस में उसके इर्दगिर्द आ वैठते। इतना करने के वाद मैने सचमुच का ग्रामोफोन ला रखा, और मास अपनी जेव से निकाल निकालकर शेरो को देने लगा। जव तक उन्हें गोश्त मिलता रहा, तव तक उन्होने कोई परवाह न की कि गोश्त कौन दे रहा है और क्यो दे रहा है। उन्हे तो जीभ का रस लेना था। अव मैने रिकार्ड वजाने की कोशिश की। पहले तो शेरो ने इसपर आक्रमण करना चाहा, पर मैने फुर्ती से छडी के सिरे पर लगे गोश्त के टुकडे को दिखाकर उनका ध्यान वटा दिया। इस प्रकार धीरे धीरे मैने उन्हे सगीत का भी अभ्यस्त वना लिया। यह खेल खूव जमा। दर्शको को विश्वास हो गया कि इन शेरो को सगीत से वडा प्रेम है।

इस करतव मे मैने एक और नयी वात पैदा करने की कोशिश की। रिकार्ड वजते समय पाशा अपनी मडली के साथ आता और मेज़ पर सिर रखकर वैठ जाता। दर्शक यह समझते कि शायद वेचारे पाशा को वैठने के लिए स्टूल नहीं है। जव रिकार्ड वज चुकता, तव वाकी पाचो सिह तो अपने अपने स्थान पर चले जाते, पर पाशा उसी मुद्रा मे वहा धरे रहते, जैसे कि वह सगीत-विशारद ही हो। मै उससे लौट जाने को कहता, पर वह एक न सुनता। मै कोडा फटकारता। तव पाशा नाराज़ होकर उठ वैठता और ग्रामोफोन को अपने मुह में दवाकर चल देता एक वार वडी मुश्किल से मैने वाजा उससे वचाया।

कई वार, जव पाशा का जी नही होता वह ग्रामोफोन ही तोड-फोड देता। मेरी समझ मे इस शेर ने कम से कम एक दर्जन वाजे ऐसे ही तोड दिये होगे।

शेरो को सधाने मे मुझे वडे वडे अनोखे व रोमाचकारी अनुभव हुए हैं।

मेरे दूसरे दल के शेर वैसे देखने में तो शात स्वभाव के थे, पर असल में थे वडे मक्कार। ज्लूका शायद सबसे अधिक चालाक था। वह हमेशा मुझपर निगाह जमाये रहता, और इस ताक में रहता कि कव मौका पाये और कव मुझपर हमला करे। दूसरी ओर, सीज़र, वडा उग्र और जल्दी भडकनेवाला शेर था। जव देखिये, तभी वह दहाडता और दात दिखलाता। मै इतमीनान से उसकी ओर पीठ कर सकता था, पर उस दुष्ट, दभी ज्लूका के साथ ऐसी गफलत करना साक्षात् मौत को वुलावा देना था। हिसक पशु का पीछे से झपट्टा मारना वडा खतरनाक हो सकता है। क्योकि ट्रेनर को वचाव का समय नही मिलता।

सधानेवाले को भडके हुए शेर से कभी भी कडाई का वर्ताव नही करना चाहिए। ऐसे समय रिहर्सल भी छोड देना उचित होता है, क्योकि जोश मे आया हुआ शेर लडने को वडी जल्दी तैयार हो जाता है। अनुभवी शेर-मास्टर प्यार दिखलाकर या गोश्त की घूस देकर शेर को शात कर लेता है।

यहा यह वता दू कि जगल से पकड कर लाया हुआ शेर कटघरे मे पैदा हुए शेर की अपेक्षा जल्दी सधाया जा सकता है। मसलन पाशा, जगल का जीव था। वह वडा ही अच्छा शागिर्द सावित हुआ, क्योकि उसे सधानेवाले की शक्ति का सदा ध्यान रहता, और वह उससे हमेशा दहशत खाता रहता था। दूसरी ओर, उस्मान कटघरे में पैदा हुआ था, और अपने मास्टर को वचपन से जानता था। इसलिए वह उसका कोई खान रोव नही मानता था। वाहर से पकडकर लाया हुआ शेर परवरिश के चोचलो से नावाकिफ होता है। इसलिए वह इसकी कद्र करता है।

और जो शेर कैदी मा-बाप की औलाद होता है, वह नटखट और गुस्ताख हो जाता है।

कुर्स्क में 'तार पर शेर' नामक करतब दिखाते हुए एक ऐसा हादसा हुआ, जिससे कोई भी शेर-मास्टर शाति और सयम का सबक ले सकता है।

पाशा नाम का शेर, चुपचाप खेल के तार को देखता रहता। खेल समाप्त होने पर तार अखाडे से हटाकर अलग रख दिया जाता। उसके हाव भाव से यह स्पष्ट होता कि तार को वहा से हटाते हुए जो खडखडाहट होती, वह उसे कतई पसद नही आती। एक दिन पाशा साहब एक-ब एक केवल तार पर टूट पडे, और लगे उसे चबाने। किस की मजाल कि शिकार को उसके पजे से छुडाता। वह इतना जोश मे आ गया कि मुझे खेल ही बद करना पडा। पाशा का पारा चढता ही गया।

जब मैंने तार उसके मुह से खीचने की कोशिश की, तो पाशा तार छोडे बिना मुझपर उछल पडा। मैं अकेला इस तार को खीचने में असमर्थ था। इसलिए मैंने कर्मचारियो से दमकल लाने को कहा। पर पानी का भी उसपर कोई असर नही हुआ। फिर मैं एक और चाल चला। फुर्ती से मैं क्रुद्ध शेर के पास पहुच गया और गोश्त का टुकडा दिखाकर लगा उसे फुसलाने, ताकि वह किसी तरह तार छोड दे। थोडी देर मे, उसका क्रोध शात हुआ, और तार छोडकर वह मेरे पास आ गया। गोश्त का टुकडा उसे दे, मैं उससे मीठी मीठी बाते करने लगा। तब कही तार उससे छीना जा सका।

सरातोव मे एक शेर ने मुझे चारो खाने चित ही कर दिया। यह सन् १९३७ की बात है। उस समय मैं अपने पुराने शेरो को एक एक कर दुबारा अपनी मडली में शामिल करने की सोच रहा था। पहले मैंने प्रिंस को वापिस ले लिया, बाद मे अली को, फिर वैकल और प्रिमस को भी। यह कठिन काम था क्योकि शायद ही पुराने शेर नये शेर का पहले-

पहल स्वागत करते हो। उल्टा, उसे खाने को ही दौडते है। सबसे पहली खातिर क्रिम की हुई। मैंने दूसरे शेरो को मार भगाया और उसकी जान बचायी। बाद में वह उनमें घुल-मिल गया, मगर फिर भी मुझे उनपर कडी निगरानी रखनी पडती थी। जब प्रिमस साहब तशरीफ लाये, तो उनका भी बाकी शेरो ने वैसा ही स्वागत किया। सब उसपर टूट पडे। लाठी, और दोशाखा से लैस होकर मै उन दरिंदो को तितर-बितर करने दौड पडा। मज़े की बात तो यह हुई कि उल्टा प्रिमस ही मुझपर टूटा। वह नही चाहता था कि मै उनकी खूनी होली में बाधा डाल दू। तीसरी बार प्रिमस ने अपना सिर इस ज़ोर से मेरी छाती में दे मारा कि मेरे पैर उखड गये। हवा में कलैया खाता हुआ मैं पीठ के बल जगले के पास गिर पडा। मै उठा तो, पर ज़रा देर से। मै जानता था कि पेट पर हमला सबसे खतरनाक होता है। अत मै बिजली की मानिद फुर्ती से दाईं करवट उलट गया। पर शेर ने मेरी दूसरी बगल में दात गडा दिये और पैर में पजे। लेकिन एक चतुर सहायक ने जगले मे से झट मेरे हाथ में खाली पिस्तौल थमा दिया। मैंने बाए हाथ से शेर का सिर टटोला, पिस्तौल की नली उसके जबडो में ठूस दी और घोडा दबा दिया।

धुए से उसका गला जलने लगा, और वह उछल कर एक ओर को हट गया। पर, दूसरे ही क्षण वह फिर लौटा। लेकिन मै अब खडा हो गया और खडे खडे ही उसका मुकाबला करने लगा और उसे पास नही आने दिया। पहले ऐसा लगा कि मुझे कोई खास चोट नही पहुची है, और मै रिहर्सल जारी रख सकूगा। परन्तु, थोडी ही देर में मुझे टागो से खून की धार बहती दिखाई दी। जैसे-तैसे लडखडाता मै कटघरे से बाहर निकला। मैंने शेरो को उनके अपने अपने कटघरो में हाक दिया।

अब जब कभी मुझे नये शेरो के दल में कोई पुराना शेर लाना होता है तो पहले मै उसे दो खानोवाले कटघरे में औरो के साथ बद

कर देता हू, ताकि नये और पुराने, बूढे और जवान एक दूसरे को सूघ-साघ कर जान पहचान कर ले।

रिफी पेट के फोडे से मर गया। कहना चाहिए, वह सूख गया। उसने खाना-पीना छोड दिया। कोई दवा कारगर न हुई, और वीमार होने के दो मास वाद ही वह चल वसा। मास बाद ही मेदे की सूजन ने प्रिमस की भी जान ले ली।

रिफी के दम तोडते समय, मै उसके सिरहाने था। वेचारे को वडा दुख भोगना पडा। वीमार पडने के वाद मै उसे कभी भी अखाडे मे नही ले गया। वह इतना कमजोर हो गया था कि उठकर अपना खाना भी न खा सकता था। हा, हर शाम को जब वाकी शेर अपने अपने कटघरो से निकलकर उछल कूद करते, तो रिफी भी अगली टागो के वल घिसटता हुआ वाहर आने की कोशिश करता। उसपर मुझे वडा तरस आता। पर, मै उसे वाहर नही निकालता। उसे वुरा ज़रूर लगता। यहा तक कि एक वार उसने मेरा हाथ भी नोच लिया।

प्रिमस का भी यही हाल हुआ। जव खेल शुरू हो जाता, तो वह वडे ध्यान से एक एक शव्द सुनता और फिर वडे दर्द से गरज उठता।

मै आपको यह वता दू कि शेर हड्डी समेत गोश्त खाते है। हड्डियो के पतले पतले टुकडो से उनके पेट की दीवाल या आते छिल जाती है। इससे उनके पेट मे फोडे हो जाते है, या आतो में छेद हो जाते है। मेरे दुलारे क्रिम की भी यही दशा हुई।

सुबह वह कुछ ऐसा-वैसा ही खा गया था, जिससे शाम को ही उसकी मौत हो गयी। उस समय मै कही वाहर गया हुआ था। उसकी मृत्यु से सचमुच मुझे वडा धक्का पहुचा। क्रिम ने एक वार मेरी जान वचायी थी, और वह मुझे अपने ढग से प्यार भी करता था। उसे भला मै कैसे भूल जाता?

विदेश से आये हुए बहुत-से शेर पेट के फोडे से मर गये। पर, जो शेर मेरी निगरानी मे पले-वढे थे, उन्हे यह भयकर रोग कभी भी न हुआ, क्योकि मै यह खूब समझता था कि शेरो को ऐसी हड्डी कभी नही देनी चाहिए जिसके टुकडे कटीले हो। मै उन्हे मुलायम हड्डिया और गाठें ही खाने को देता था। शेरो को भी मजा आता। ऐसी हड्डियो से उनके दात मजबूत होते, और नुकसान कुछ न होता।

ये शेर मुझसे बहुत हिल-मिल गये थे। बीमारी में मैंने इनकी बहुत तीमारदारी की थी। इन्हे ऐसा लज़ीज खाना देता—जैसे ज़िदा खरगोश, मुर्गे, बछड़े का गोश्त। दवा के रूप में पेप्सीन और नमक का तेजाब उन्हे पिलाता। वे भी मेरे प्रेम और तीमारदारी को खूब समझते। धन्यवाद देने का तो प्रश्न ही नही उठता। यद्यपि हमारी आपस में झपटे भी हो जाया करती, फिर भी आखिर ६ साल तो हमने साथ साथ गुज़ारे ही थे।

कई दफा मुझसे पूछा गया "अजी, शेरो ने तो आपकी कई वार खूब गत वनायी। कभी आपने भी उनसे वदला लिया?" भला, मै उनसे क्या वदला लेता। वे जगली जीव थे। हिसावृत्ति यानी हमला करना तो उनका स्वभाव था। इसका वुरा मानना क्या?

लोगो ने मुझसे यह भी पूछा "क्यो जी, आपको उनके कटघरे में जाते कभी डर नही लगा कि वह आपकी वोटी वोटी नोच डालेंगे? क्या आप कपडो के नीचे कोई कवच पहना करते थे? यह कवच चमडे का होता था या मोटी रुई का?"

वहुतो ने विश्वास नही किया था कि मैंने पोशाक के नीचे कभी कुछ पहना ही नहीं।

असल में शेर-मास्टर को अपनी चुस्ती, और फुर्ती पर ही भरोसा करना चाहिए। मोटे कपडे तो उल्टे वाधा ही डालते है। दूसरे, यदि कभी कोई शेर अपना पजा चमडे या रुई में गडा दे, तो शेर-मास्टर को अपनी जान छुडाना मुश्किल हो जायेगा। इसके उल्टे, यदि कपडे हल्के होंगे, तो शेर के चगुल से निकलना आसान होगा।

शेरो के कटघरो मे पैर रखते समय मेरे दिमाग में कोई भी हीन भाव नही होता। मै पूरे आत्मविश्वास के साथ शेरो के कटघरो मे पैर रखता हू। और इस दृढ विश्वास के साथ जाता हू कि किसी भी शैतान को खेल बिगाडने नही दूगा। शेर-मास्टर का डर से क्या वास्ता? और यदि वह दिल से डर नही निकाल सकता, तो उसे इन क्रूर प्राणियो से दूर ही रहना चाहिए। नही तो किसी न किसी दिन वह खता खा जायेगा।

किसी जानवर की आदत, और खसलत को समझने मे महीनो नही, सालो लग जाते है। फिर भी कोई सधानेवाला यह दावे से नही कह सकता कि वह अपने जानवर को खूब समझ गया है।

एक बात और आवश्यक है कि सधानेवाला जानवर को कभी भी यह पता न लगने दे कि वह घायल हो गया है। यानी, उसे यह न पता लगने दे कि वह भी उसे हानि पहुचा सकता है। हमलावर जानवर को फौरन काबू मे लाना चाहिए। जगली जानवर बिजली की मानिद तडाक मे हमला कर बैठते है, इसलिए सधानेवाले को इनसे अधिक चुस्त-चालाक होना चाहिए, और किसी भी हालत मे इनसे पस्त नही होना चाहिए। एक बार, अगर उन्होने अपने मास्टर को अपने सामने निरीह अवस्था मे पडा देख लिया, तो फिर वे बेहाथ हो जाते है, और वे उसपर बुरी तरह टूट पडते है।

पशु सधाने का सबसे बडा रहस्य यह है कि उन्हे सदा नियन्त्रण में रखा जाय। टबो पर बैठने का अभ्यास उन्हे कराना चाहिए। यह इस लिए आवश्यक है कि टब पर बैठा हुआ जानवर प्राय न तो अपने उस्ताद के काम मे बाधा डालता है, और न उसपर हमला करता है। वैसे इसके कभी कभी अपवाद भी हो जाते है। जब शेर इधर-उधर टहलता रहता है, तो डर बना रहता है कि वह न जाने कब शेर-मास्टर पर हमला कर बैठे। दूसरे शेरो की ट्रेनिग के समय यह खतरा और बढ जाता है। सबसे खतरनाक वक्त शायद वह होता है जब शेर

अपने अपने कटघरो में से निकल कर बडे कटघरे मे आते है, और उनका मास्टर उन्हे अपनी अपनी जगह पर बैठने का हुक्म देता है। उस वक्त, अक्सर शेर एक दूसरे से खेलने-लडने लगते है। कभी कभी ट्रेनर की खामखा शामत आ जाती है। ऐसे मे शेर-मास्टर को तनिक भी नर्मी नही वरतनी चाहिए, वल्कि अपने कोडे के जोर से उन्हे अपने अपने स्थान पर वैठा देना चाहिए।

कई वार किसी जानवर को मामूली से मामूली खेल सिखाने में कई कई घटे या कई कई दिन लग जाते। अगर्चे मेरे सामने ऐसी समस्या कभी नही आयी, तो भी मैंने जानवर को कभी उच्छृखल नही होने दिया।

साधारणतया दर्शको को ऐसा लगता है कि सधानेवाला मेस्मिरिज़म से काम लेता है। दर असल, वात ऐसी होती नही। शेर वगैरह अपने सधानेवाले की आख के इशारे पर नही, वल्कि उसकी आवाज के उतार-चढाव और उसकी हरकतो पर नाचते है। ट्रेनर, चाहे कितना ही होशियार हो, और जगली जानवर चाहे कितने ही सधे हुए हो, कटघरे मे थोडा वहुत डर वना ही रहता है। मैंने खुद यह देखा है कि कटघरे से मेरे वाहर निकलते ही ये जानवर दरवाज़े की ओर लपकते। मैंने यह अनुभव किया कि ये जानवर इसलिए क्रुद्ध हो जाते कि मै सही सलामत कटघरे से वाहर निकल आता। इस वात की पुष्टि के लिए मै एक वार कटघरे मे फिर दाखिल हो गया। मुझे देखते ही सव जानवर शरीफ वन गये, और अपनी अपनी जगह शाति से जा वैठे, मानो वे भूल ही गये कि एक ही मिनट पहले वे मेरे माथे के दुश्मन थे। इससे यह जाहिर हो गया कि ये जानवर मेरा हुक्म तभी तक मानते, जव तक कि मै उनकी आखो के सामने रहता। मेरे कटघरे से वाहर निकलते ही, अपनी पाशविक वृत्ति के अनुकूल वे हमला करने से वाज नही आते।

‘शूटिंग’

आर्कटिक प्रदेश में नाश्ता

जगली जानवरो के बारे मे कुछ भी ठीक ठीक नही कहा जा सकता। बिना किसी प्रत्यक्ष कारण के ये अचानक ही भडक जाते है और काम करने से इन्कार कर देते है। ऐसी स्थिति का सामना करने के लिए ट्रेनर को पहले से ही तैयार रहना चाहिए। कई बार तो ये जानवर खार से नही, बल्कि अनाडीपन या जल्दबाज़ी में अपने मास्टर को चोट पहुचा देते है। उदाहरण के लिए, एक दफा, मै स्तालिनग्राद मे शो कर रहा था, कि एक शेर ने भूल मे अपना पजा, कधे पर रखने की बजाय मेरे चेहरे पर ही रख दिया।

उस्मान की ही बात ले लीजिये। वह शेर सुदर, सरल और जानदार था, पर था जरा बिगडे दिल। जिस दिन से मैंने उसके कटघरे मे जाना शुरु किया, उस दिन से ही उसका बरताव मेरे साथ सदा शराफत का रहा। वह मुझे दुलराने, पुचकारने देता। मुझसे डरता जरा भी नही। मै भी उसके साथ देर तक रहा करता। मेरा पहला अनुमान ठीक निकला। रिहर्सल मे भी वह चतुर और आज्ञाकारी पशु साबित हुआ। जो कुछ बताया जाता, वह फौरन करता, और ठीक ठीक करता। पर, यदि उसका मूड खराब हो जाता, तो प्यार-दुलार या रिश्वत से भी वह काबू में न आता। वह चुपचाप जाता और लेट जाता। जब वह प्रसन्नचित्त होता, तो मोम-सा मुलायम हो जाता, और रिश्वत का जादू उसपर बडी जल्दी असर करता। खासकर इसलिए भी कि वह बडा पेटू था। कई बार वह चाबुक की फटकार के बिना काम न करता। साधारणतया, वह आज्ञाकारी पशु था। करतब करते समय वह मुड मुडकर मेरी ओर अवश्य देखता जाता, जैसे कि वह मुझसे वाहवाही चाहता हो। उसमें सबसे बडा गुण यह था कि वह बात खूब 'समझता' था। पर था वह आजाद ही। बाकी शेरो पर वह खूब रोब गाठता और वे भी उसका रोब मानते। वह जरा घमडी और आजाद जानवर था। उस्मान की बाकी दो शेरो से सदा ठनी रहती। वह अपने को छोटे शेरो का

नुमाइदा मानता, और क्या मजाल कि कोई बडा शेर छोटो के साथ वदसलूकी कर जाय। रिहर्सल समाप्त होते ही वडे शेरो से लडने के लिए वह सबसे पहले कटघरे के पास पहुच जाता, और घात लगाये बैठा रहता। उस्मान जानता था कि मैं उन्हे अखाडे मे तो लडने दूगा नही।

इन शेरो की आपस की लडाइया कई बार इतनी भयानक हो जाती कि पानी की बौछार से ही उन्हे छुडाना पडता। उस्मान की सदा ही शामत आती। उसने अपने साथी पर आक्रमण किया नही कि उसपर पानी का फुवारा छूटा। उसकी छेडखानी की आदत छुडाने का और कोई तरीका था भी नही। उस्मान भी हमारे तौर तरीको को खूब समझने लगा। जव कभी मैं या मेरा कोई साथी झूठमूठ भी पानी की वाल्टी उठाने के लिए झुकता, तो वह फौरन ही भाग खडा होता।

सरकस में उसके काम होते थे—तार पर चलना, ग्रामोफोन सुनना या फिर चक्कर-हिडोले का आनन्द लेना।

उस्मान का भाई राजा ऐन उसका उल्टा था। वह निरावुद्धू, काहिल, कायर और मूर्ख था। वह शहीदो मे नाम लिखाने के लिए सदा उत्सुक रहता। रिहर्सल के समय वह वडा सुस्त रहता, पर लजीज़ गोश्त या मीठी मीठी वातो से ही फुसलाया जा सकता, और चावुक से नफरत करता। मैं ज़ोर से वोला नही कि वह पेट के वल रेंग कर खिसका। वह वडा मृडी और चिडचिडा था। यदि मैं कभी हल्के-से भी मार वैठता, तो वह सत्याग्रह ही पर आमादा हो जाता।

तार पर चलने के काम मे राजा उस्मान का 'डवल' था। मैं तो कहूगा, कि इस काम में वह उससे इक्कीस पडता था। इसका एक कारण यह था कि वह पेटू था और यह जानता था कि तार के दूसरे छोर पर उसे लजीज़ गोश्त मिलेगा। वैसे वह वडा चालाक और मनगुन्ना जानवर था। अचानक हमला करना उसे खूव आता था। जव मैं उसकी ओर तरता तो वह आखे फेर लेता, मगर मेरे पीठ फेरते ही वह दात

निकालकर गरजने लगता। यदि मै फिर उसकी ओर मुडता, तो वह भीगी बिल्ली बन जाता। चालाक तो वह उस्मान की तरह ही था, मगर था सुस्त।

वह कई कई दिन तक पडा ऊघता रहता, और उसकी मुख मुद्रा मे झलकता कि भाई मुझे मेरे हाल पर छोडो।

राजा या उस्मान से मेरी कभी गहरी झडप नही हुई। और मेरे शरीर पर उनके दातो या पजो के निशान कोई नही है।

पिरत वाकई एक खरा शेर था। चतुर, आज्ञाकारी और चौकन्ना जानवर। उसका शरीर मजबूत, सिर शानदार और चाल मस्तानी थी। अभ्यास के समय उसके साथ काम करना आसान होता। वह बात जल्दी पकडता। लेकिन जरा गर्म-मिजाज और भडकीला था। उससे काम लेने के लिए मास का प्रलोभन देना आवश्यक था। हटर की हल्की मार तो वह बरदाशत कर लेता, पर यदि कही कोडा जोर से पड जाता, तो वह मुह फैला देता। मगर, शागिर्द वह अच्छा था। उसने बोतलो पर चलना तीन सप्ताह मे ही सीख लिया, जब कि बैकल महाशय इसी खेल को ६ मास मे सीख पाये। मैने एक ही बार उसका पजा पहली बोतल पर रखा और वह चट समझ गया कि मै क्या चाहता हू। वह सब बोतलो को फटाफट पार कर गया, पर अत मे थक कर लेट गया। मैने उसकी इस आदत को बढावा दिया, और लाभ उठाया। बाद मे, मै अक्सर उसके इस तरह लेट जाने पर फब्तिया कसता, और दर्शक ठहाका मारकर हसने लगते।

मैने पिरत को एक बडी गेंद पर चढकर उसे आगे पीछे करना सिखाया। यह काम मैने ऐसे किया। अखाडे मे मैने डेढ फुट ऊचा एक टब रखवा दिया। बगल मे गेंद के लिए लकडी की दो पटरिया टिकवा दी। गेंद का व्यास २० इच था।

पहले-पहल मैंने शेर को गेद के ऊपर खडा होना सिखाया। मैंने शेर के टब के निकट गेंद रख दी ताकि पहले वे इससे परिचित हो जाय। फिर मैंने गेद अखाडे में लुढका दी। शेर इसे देखकर चौंक पडा, पर फिर धीरे धीरे पास जाकर उसमें पजे गडाने लगा। गेद छूते ही लुढक जाती, और शेर इधर-उधर बिदक जाता।

यह मज़ाक घटो चलता रहा। आखिर में शेर ने समझ लिया कि गेद कोई नुकसानदेह चीज़ नही।

फिर मैंने शेर को टब पर बैठाया, और मास का एक लोथडा कोई गज़ भर लबी छडी के दूसरे छोर पर बाध कर ललचाया। यह छडी मैंने ज़रा दूरी पर रखी, ताकि शेर अपने अगले पजे गेंद पर रखे। अब प्रश्न था कि उसके पिछले पजे भी गेंद पर कैसे रखवाये जायें। पहली बार जब मैंने गेंद को नीचे लुढकाया, तो वह एकदम उछल पडा। बहुत अभ्यास के बाद शेर यह समझ सका कि गोश्त को पाने के लिए और गेंद से न गिरने के लिए पैर चलाना ज़रूरी है।

इस करतब का रिहर्सल प्रतिदिन दो घटे हुआ करता, और दो तीन महीने तक यह क्रम चलता रहा। दो घटे बीच बीच मे रुक रुककर रियाज़ किया जाता, क्योकि जानवर थक जाता, और उसका दिमाग बिगड जाता। मै जान-बूझकर ढिलाई बरतता, क्योकि मै नही चाहता था कि शेर को गेंद से ही नफरत हो जाय।

पिरत दूसरे करतबो के अलावा चक्कर-हिडोले पर भी सवारी करना जानता था।

पिरत का भाई, सीज़र उसका बिल्कुल उलटा था। वह मनगुत्ता, चालबाज, सुस्त और बडा भडकीला जानवर था। सीज़र की हर एक बात मे आलस की झलक मिलती। वह खुलकर इसका विज्ञापन करता। ख़रामा ख़रामा वह चक्कर-हिडोले पर चढता। बडे आराम मे वह एक टब से दूसरे टब पर कूदता, जैसे कि वह हमे स्पष्ट कह रहा हो कि महाराज मुझपर दया करो, मुझे अपने मे मगन रहने दो। मै किसी काम का नही

हू। मुझे क्यो तग करते हो? हमारी ग्रापस में वनती विल्कुल न थी। वह मुझे ज़ालिम मास्टर मानता था।

सीजर लोभ से नही, मार से वस मे ग्राता। रिहर्सल के समय मैं उसे खूब डराता-धमकाता। वह उछलता-कूदता, ग्रौर कभी सीखचो पर ही चढने लग जाता। वह यह ग्रच्छी तरह जानता-समझता कि मैं ग्रासानी से उसकी जान छोडनेवाला नही। कई वार तो वह टब से मेरे ही ऊपर कूद पडा। एक वार तो उसने मुझे पछाडते पछाडते छोडा। पर मैं कूदकर एक तरफ खडा हो गया।

यह धूर्त पशु पहले से ही भाप जाता कि ग्रव उसकी वारी ग्रायेगी। जहा राजा ने गेंद का खेल खत्म किया कि उसने समझा कि ग्रव मेरी पारी ग्रायी। वह पीठ मोड लेता, ग्राख वचाता, या खामोश होकर इस ग्रास मे वैठ जाता कि मैं उसे पुकारना भूल जाऊगा। "सीजर!", जहा मैंने ग्रावाज़ लगायी कि वह ग्रपने टब मे कूदकर किसी साथी की ग्रोट मे हो गया। वहुत मजवूर होकर ही वह मैदान मे ग्राता, सो भी पेट के वल रेगते रेगते। यह भी कहा का शेर का स्वभाव है। सच तो यह है कि सीजर को ग्रपने सरकसी पेशे का तनिक भी ग्रभिमान न था।

तैमूर निपट नीच, दगावाज ग्रौर वुजदिल था। उसकी दुनिया दुश्मनो से ग्रावाद थी। जैसे-तैसे मैंने उसे चक्कर-हिडोला चलाना ग्रौर छड के ऊपर चलना सिखा दिया। यह ज़रूरी था कि जो कुछ भी उसे सिखलाया जाय, वह उसे खटके नही। उसके साथ वडी मुलायमियत से पेश ग्राना पडता। यदि मैं उसपर चावुक फटकारता, या चिल्ला पडता तो वह थर्रा जाता। ऐसे जानवर का मैं क्या करता? ग्रगर उसे गोश्त से वेहद प्यार न होता, तो शायद मैं उसे कुछ भी न सिखला पाता।

शेर सिहो के प्रसग मे गोर्की पार्क मे घटी एक घटना का वर्णन ग्रौर कर दू। ग्रखाडे में १,००० कैंडल-पावर का वल्व जगमगा रहा था। न जाने कैसे वह सहसा बडी ग्रावाज के साथ फट गया ग्रौर पास के टुकड़े

की हमपर बारिश-सी ही हो गयी। रिफी बेतहाशा दहाड उठा, टब से कूद पडा और कापता हुआ मेरे पैरो में लोटने लगा। मैंने उसे थपथपा कर शात करने की कोशिश की, पर वह मुझसे ही चिपटा रहा। अपनी जगह वापिस नही गया। खेल खत्म होने तक वह सहमे बिल्ली के बच्चे की तरह मेरे ही आस-पास घूमता रहा और काच के टुकडो को दहशत से देखता रहा।

जब मैंने शेरो का बडा कटघरा खोला, तो रिफी सबसे पहले निकलकर भागा, अपने कटघरे में जाकर छिप गया, और कोने में एक चूहे की तरह लेट गया। दूसरे दिन, रिहर्सल के लिए बाकी सब शेर तो अखाडे मे उतरे, मगर रिफी नही आया। भयभीत सिह सबसे निरीह प्राणी हो जाता है। उसके सभी सिहोचित गुणो का लोप हो जाता है। मैंने उसे कटघरे में से निकालने का बडा यत्न किया, यहा तक कि पूछ से घसीटने की भी कोशिश की, मगर सब प्रयत्न निष्फल रहे। तग आकर मैंने उसे पिछली टागो से पकडा, और ठेलेगाडी की तरह चलाकर मै उसे मैदान मे लाया। वह इतना डरा हुआ था कि रिहर्सल मे भाग नही ले सका। प्यार-दुलार, और सेरो गोश्त—सभी बेकार साबित हुए, काम करने का उसका मन ही न हुआ।

उस दिन शाम को वह खेल मे भी शामिल न हुआ। उसकी सूरत ऐसी बनी हुई थी जैसे कि उसने अभी भूत देखा हो। पाच छ दिन तक हमने उसे परेशान नही किया। अखिरकार, बडी मुश्किल से मै उसे यह 'समझा सका' कि भले आदमी, बल्ब हर रोज़ नही टूटा करते। सबसे मजेदार बात तो यह है कि इस कायर सिह के सिवा और कोई भी इतना नही बिचका।

उसके स्थान पर जो शेर मै लाया, उसका भी मैंने यही नाम रखा। लेकिन यह प्यारा जानवर था। बडा मिलनसार और मुहब्बती। कभी किसी से लडा नही, सब को तरह देनेवाला। रिहर्सलो मे भी यह बडा चुस्त और मेहनती रहा। ग्रामोफोन और चक्कर-हिडोले के खेलो मे उसने 'डबल' का काम किया। टब फादना तो यह भी जान गया।

सिहनी पूपा

सन् १९३२ मे, जब पहले पहल मुझे शेर मिले, तो मैंने सरकस-बोर्ड से एक शेर का बच्चा मागा। मेरा विचार था कि यदि मैं किसी शेर को छुटपन से ही पाल सकू तो मुझे सिहो के बारे मे विस्तृत ज्ञान प्राप्त हो सकेगा।

आखिर, मेरी यह इच्छा भी पूरी हुई। मुझे १५ दिन की एक शेरनी मिली। इसका नाम मैंने पूपा रख दिया।

पहले दिन से ही मैंने उसे घरेलू जानवर की तरह पाला। यह बच्ची ६ साल की उम्र तक मेरे साथ रही।

यह मेरे आस-पास ही रहती। मेरे मकान मे खुली घूमा करती और सोती तो मेरे पलग के पैताने।

जब मैं सैर को जाता तो उसे जजीर मे बाध कर साथ ले जाता, ठीक वैसे ही जैसे कोई कुत्ते को सैर कराता है। हम कभी सडको पर घूमते-फिरते, और कभी मोटर की सैर करते। मेरी इच्छा उसे मनुष्य जगत से परिचय कराने की थी, ताकि आगे चलकर वह किसी नयी चीज़ को देखकर न भडके। हिसक पशु अपने वातावरण के प्रति सदा सजग रहता है। यदि कभी किसी चीज से डर जाता है, तो उसे नष्ट करने की चेष्टा करता है। मैं पूपा के स्वभाव से यह दोष निकाल देना चाहता था।

जब मैं घर से बाहर होता, तो पूपा अपनी गेंद वगैरह से खेला करती। उसे खेल पसन्द थे, और खेलते वह थकती कभी नही। हा, मुझे घर में देखते ही वह सब खेल छोड मुझसे खिलवाड करना शुरू कर देती। यदि कभी मैं बहुत रात गये घूमा-भटका आता, तो वह फौरन जाग जाती और मुझे [illegible] दिखाने लगती कि मैं उसे थपथपाऊ। कई बार वह रात में उठकर पास के कमरे से यह जानने की कोशिश करती कि मैं सो रहा हू या जाग रहा हू। यदि मैंने जान बूझकर आंखें बद कर भी ली, तो वह भी

की हमपर बारिश-सी ही हो गयी। रिफी बेतहाशा दहाड उठा, टब से कूद पडा और कापता हुआ मेरे पैरो में लोटने लगा। मैंने उसे थपथपा कर शात करने की कोशिश की, पर वह मुझसे ही चिपटा रहा। अपनी जगह वापिस नही गया। खेल खत्म होने तक वह सहमे बिल्लौ के बच्चे की तरह मेरे ही आस-पास घूमता रहा और काच के टुकडो को दहशत से देखता रहा।

जब मैंने शेरो का बडा कटघरा खोला, तो रिफी सबसे पहले निकलकर भागा, अपने कटघरे में जाकर छिप गया, और कोने में एक चूहे की तरह लेट गया। दूसरे दिन, रिहर्सल के लिए बाकी सब शेर तो अखाडे में उतरे, मगर रिफी नही आया। भयभीत सिह सबसे निरीह प्राणी हो जाता है। उसके सभी सिहोचित गुणो का लोप हो जाता है। मैंने उसे कटघरे में से निकालने का बडा यत्न किया, यहा तक कि पूछ से घसीटने की भी कोशिश की, मगर सब प्रयत्न निष्फल रहे। तग आकर मैंने उसे पिछली टागो से पकडा, और ठेलेगाडी की तरह चलाकर मैं उसे मैदान में लाया। वह इतना डरा हुआ था कि रिहर्सल मे भाग नही ले सका। प्यार-दुलार, और सेरो गोश्त—सभी बेकार साबित हुए, काम करने का उसका मन ही न हुआ।

उस दिन शाम को वह खेल मे भी शामिल न हुआ। उसकी सूरत ऐसी बनी हुई थी जैसे कि उसने अभी भूत देखा हो। पाच छ दिन तक हमने उसे परेशान नही किया। अखिरकार, बडी मुश्किल से मैं उसे यह 'समझा सका' कि भले आदमी, बल्ब हर रोज़ नही टूटा करते। सबसे मजेदार बात तो यह है कि इस कायर सिह के सिवा और कोई भी इतना नही बिचका।

उसके स्थान पर जो शेर मैं लाया, उसका भी मैंने यही नाम रखा। लेकिन यह प्यारा जानवर था। बडा मिलनसार और मुहब्बती। कभी किसी से लडा नही, सब को तरह देनेवाला। रिहर्सलो मे भी यह बडा चुस्त और मेहनती रहा। ग्रामोफोन और चक्कर-हिडोले के खेलो मे उसने 'डबल' का काम किया। टब फाडना तो यह भी जान गया।

सिहनी पूपा

सन् १६३२ मे, जब पहले पहल मुझे शेर मिले, तो मैंने सरकस-बोर्ड से एक शेर का बच्चा मागा। मेरा विचार था कि यदि मै किसी शेर को छुटपन से ही पाल सकू तो मुझे सिहो के बारे मे विस्तृत ज्ञान प्राप्त हो सकेगा।

आखिर, मेरी यह इच्छा भी पूरी हुई। मुझे १५ दिन की एक शेरनी मिली। इसका नाम मैंने पूपा रख दिया।

पहले दिन से ही मैंने उसे घरेलू जानवर की तरह पाला। यह बच्ची ६ साल की उम्र तक मेरे साथ रही।

यह मेरे आस-पास ही रहती। मेरे मकान में खुली घूमा करती और सोती तो मेरे पलग के पैताने।

जब मैं सैर को जाता तो उसे जजीर मे बाध कर साथ ले जाता, ठीक वैसे ही जैसे कोई कुत्ते को सैर कराता है। हम कभी सडको पर घूमते-फिरते, और कभी मोटर की सैर करते। मेरी इच्छा उसे मनुष्य जगत से परिचय कराने की थी, ताकि आगे चलकर वह किसी नयी चीज को देखकर न भडके। हिसक पशु अपने वातावरण के प्रति सदा सजग रहता है। यदि कभी किसी चीज से डर जाता है, तो उसे नष्ट करने की चेष्टा करता है। मै पूपा के स्वभाव से यह दोष निकाल देना चाहता था।

जब मैं घर से बाहर होता, तो पूपा अपनी गेंद वगैरह से खेला करती। उसे खेल पसद थे, और खेलते वह थकती कभी नही। हा, मुझे घर में देखते ही वह सब खेल छोड मुझसे खिलवाड करना शुरू कर देती। यदि कभी मै बहुत रात गये थका-मादा आता, तो वह फौरन जाग जाती और मुझे दुलार दिखलाने लगती कि मैं उसे थपथपाऊ। कई बार वह रात में उठकर चुपके चुपके यह जानने की कोशिश करती कि मै सो रहा हू या जाग रहा हू। यदि मैंने जान बूझकर आखें बद कर भी ली, तो वह भी

झट सो जाती। यदि उसे जरा भी इस बात का भान हो जाता कि मैं जग रहा हू, तो बस हमारा तकिए और कवल का खेल आरभ हो जाता। यह खेल तब तक चलता रहता जब तक कि हम थककर चूर चूर न हो जाते, और सो न जाते।

पूपा को मैं मास्को और लेनिनग्राद के स्कूलो, पायोनियर भवनो, बच्चो के कैंपो और क्लबो में अपने साथ ले जाता। हर जगह लोग उसे कुत्ते की तरह ही दुलराते।

अब मैंने सोचा कि पूपा को सरकस के लायक बनाना चाहिए। पहले मैंने उसे घोडे की सवारी करना सिखाने का निश्चय किया।

एक खास किस्म की चपटी काठी से लैस एक घोडा मैंने सरकस क अखाडे में मगवाया। पूपा घोडे की काठी पर जा बैठी और घोडा चारो तरफ दुलकी चाल से दौडने लगा। थोडी घुडसवारी करने के बाद पूपा काठी से छलाग मारकर मेरे पास आ गयी, मगर मेरे हुक्म से फिर काठी पर जा डटी, और घोडा चालू हो गया। यह बता दू कि यह सब काम बिना किसी जगले या कटघरे के किया गया।

घोडे की सवारी का खेल खत्म होने के बाद मैं पूपा को ज़जीर मे बाधकर दर्शको से मिलाने ले गया। जिसने चाहा, उसने थपथपाया, और पूपा ने भी सब से दोस्ती बढायी।

पूपा वास्तव मे बडी स्नेहमयी थी। वह शात, गभीर, चतुर सिहनी थी। इस वफादार शेरनी को दगाबाज़ी छू तक न गयी थी। वह मेरी आवाज़ के हर उतार-चढाव को खूब समझती, और मैं भी उसकी हर आदत, व हर मूड मे खूब वाकिफ रहता।

मुझे वोरोनेज की एक घटना याद है। पूपा का खेल चल रहा था। खेल करते करते उसे अचानक ख्याल आया कि मैं वहा नही हू। मैं कुछ क्षणो के लिए वहा से चला गया था। झट उसने घोडे मे छलांग लगा दी। जानते है, कहा छलाग लगायी? अखाडे में नही, बल्कि दर्शको के बिल्कुल

बीचोबीच। वहा पहुच जो आदमी सामने दिखाई दिया, उसे ही जा लिपटी। मेरे आवाज़ लगाने पर ही उसने उस भले मानस की जान ~ोडी। इसके बाद दो छलागो मे ही वह मेरे पास आ गयी।

पूपा के साथ मैंने साढे पाच वर्ष तक काम किया। इन जानवरो का छठा साल आश्चर्यों से भरा होता है और कभी कभी यह बडा खतरनाक साबित होता है।

यह सोचकर मै अब पूपा के साथ और भी अधिक समय बिताता। मै उसे सैर कराता, उसके साथ खेलता, गर्ज़ कि हर तरह उसकी दिलजमई करता, ताकि शरीर में परिवर्तन होने के कारण जिन बुराइयो का डर था, वे बचायी जा सके।

पर, सरकस के एक्टर का जीवन कुछ ऐसा होता है कि पूपा के चरित्र का दैनिक अध्ययन करना मेरे लिए कठिन हो गया। हर महीने एक शहर से दूसरे शहर जाना, सदा वातावरण बदलते रहना, और सफर के दौरान में एक दूसरे से अलग रहना, इन सब कारण से हमारे सबध सकट मुक्त न रह सके।

जब पूपा बहुत बडी हो गयी, तब तो उसे सदा साथ रखना सभव ही नही रहा। जिनके घरो में मै रहता था, वे ऐतराज़ करने लगे। मजबूर होकर उसे मुझे सरकस के कटघरो मे रखना पडा। अब वह अकेलापन महसूस करने लगी, चिडचिडी भी होती गयी। उसके स्वभाव मे शीघ्र परिवर्तन होने लगे। ऐसा प्रतीत होने लगा कि मेरी छ साल की ट्रेनिग बेकार हो जायेगी। अब रखवालो को ही उससे डर लगने लगा। वे उसके पास जाते डरते। वह उनसे चिढने लगी। शायद वह यह समझती थी कि हम दोनो की जुदाई का कारण ये ही लोग थे।

सन् १९३७ में लेनिनग्राद के सरकस मे एक ऐसा हादसा हो गया, जिसने हमें समय से सावधान कर दिया। मै पूपा को जजीर मे लिये अखाडे

का चक्कर काट रहा था, कि अचानक वह मुझपर हमला कर बैठी। मेरे गले मे उसके दात चुभते चुभते बचे। मैंने बाया हाथ अपनी रक्षा के लिए बढाया। फिर भी उसने मेरी हथेली और एक उगली चबा ही डाली। मैं जल्दी से उसे लेकर कटघरे में घुस गया। कटघरे में जाते ही वह शात भाव से एक कोने में जाकर बैठ गयी। अपना ज़ख्मी हाथ दिखाकर मैंने उससे कहा "दुष्टा! तुझे लज्जा नही आयी? सोच, मैंने तेरे लिए क्या कुछ नही किया?"

तब सिर नीचा किये हुए वह मेरे पास आयी और मेरा घाव चाटने लगी। मैं जानता था कि उसने जो कुछ किया है, किसी पागलपन की लहर मे किया है, उसे अब स्वय अपने किये पर पश्चात्ताप हो रहा था।

अब मैं यह समझ गया कि हमारे सबध पूर्ववत् न रह सकेंगे। मुख्य कारण यही था कि पहले की तरह लाड-दुलार के लिए अब मेरे पास समय नही था। उन दिनो मेरा अधिक समय सिहो के नये दल की ट्रेनिग मे व्यतीत होता। इसी साल मैंने पूपा को चिडियाघर मे भेज दिया। इस प्रकार मेरा एक सबसे प्यारा दोस्त मुझसे बिछुड गया।

तेदुए

जैसे मैं एक ही दिन मे शेर-मास्टर बन गया था, वैसे ही एक ही दिन मे मैं तेंदुओ को सधानेवाला भी बन गया!

सन् १९३५ की बात है। मै मास्को के गोर्की पार्क मे सरकस कर रहा था। सरकस-बोर्ड ने विदेश से पाच सधे हुए तेदुए खरीदे। और अब वे किसी उचित ट्रेनर की खोज करने लगे। अत मे उन्होंने जानवर मुझे ही सौंप दिये। इनके लिए अलग से एक तेदुए-मास्टर तैयार करने की जिम्मेदारी भी मुझे ही सौंपी गयी।

जो विदेशी इन्हें लाया था, वह सरसरी तौर पर मुझे इन जानवरो से परिचित कराकर, तथा कुल दो बार उनके खेल दिखाकर अपने देश लौट गया।

अब मुझे इन तेंदुओ से माथापच्ची करनी पडी। तेंदुआ शेर से छोटा, परन्तु सुन्दर पशु है। स्वभाव और चाल-ढाल में शेर से विपरीत। तेंदुए को लेकर कोई भी भविष्यवाणी नही की जा सकती। दूसरे ही क्षरण वह क्या कर वैठेगा, यह कोई नही जानता। क्योकि तेंदुआ तो बिजली की तरह टूटता है और बडा ही चिडचिडा जानवर होता है। देखने मे तो यह छोटा-सा होता है, पर बडा ही फुर्तीला और पैने दात और पैने नाखूनोवाला जानवर। इसलिए यह बहुत खतरनाक होता है। बिल्ले की तरह यह सुन्दर जानवर सधानेवाले के लिए एक सिरदर्द होता है। सबसे बडी बात यह है कि शायद ही किसी तेंदुए ने अपने सधानेवाले को पसद किया हो। इस दृष्टि से यह तेदुए क्रिम और पूपा जैसे शेरो से बिल्कुल विपरीत थे।

मिन्स्क मे पहुचकर मैंने अपने सहायक को भी ट्रेनिग के काम में खीच लिया। पहले मै शेरो का खेल करता। इसके बाद मै तेदुओ को मैदान में लाता। इनके कटघरो की छत भी सलाखो से पटी रहती थी, क्योकि यह चुस्त 'बिलौटे' आसानी से जगला फलाग जाते है। यह काम शेर के लिए असभव है। अत इन तेंदुओ के लिए विशेष कटघरे की आवश्यकता थी। पर, इसका प्रबध न होने के कारण शेर और तेंदुए एक ही कटघरे मे करतब करते, और एक ही गलियारे से गुज़रते। इसका नतीजा बुरा निकला। एक दुर्घटना हो गयी।

तेदुओ को सुरग मे से गुज़ारने से पहले हम सीखचो के आगे प्लाईवुड के तख्ते लगा दिया करते, ताकि यह चालाक जानवर कही उनमें से ही न निकल भागें। एक दिन की वात है, हमारे आदमी ने कही तख्ता ठीक तरह नही जमाया। फीफी नाम की मादा तेंदुआ ने यह दरार फौरन ताड ली। तख्ते को खीच वह वाहर निकल भागी।

यदि शेर कभी पिजडे से निकल भी भागे, तो बाहर जाकर कुछ देर तक उसके होश काबू में नही आते। लेकिन फीफी के होश बिल्कुल कायम थे। तीर की तरह उडकर वह पब्लिक की सीटो के नीचे जा घुसी। यहा से वह आसानी से सडक पर जा सकती थी। सोचिये, यदि ऐसा हो जाता, तो पकडे या मारे जाने से पहले वह कितना खून खराबा कर सकती थी!

इसलिए आवश्यक था कि वह जहा भी थी, उसे वहा से निकलने न दिया जाय।

मैंने अपने कर्मचारियो को फौरन सब दरवाजो मे ताला डाल देने का आदेश दे दिया। बाकी तंबुओ को बद करने के बाद हमने सुरग का मुह जनता की सीटो की ओर कर दिया। अब टॉर्च और सोटी लेकर मै उस गलियारे में घुस गया। यह लबा और अधियारा था। कही कही मुझे पेट के बल रेगना पडा।

आखिरकार, मुझे अगारे-सी जलती हुई दो आखें दिखाई दी। मुझे देखते ही फीफी गुर्रायी। उसे देख, अपने हाथ की सोटी भी मैंने फेंक दी। उस तग जगह में सोटी किस काम आती? अब निहत्थे ही मैंने फीफी की तरफ रेगना शुरू किया।

ऐसे घुप्प अधियारे मे भला यहा आता कौन? और मै किसी को आने को कहता भी क्यो? अनाडी आदमी का यहा क्या काम था? नाहक ही बेचारे की जान चली जाती।

मै उससे करीब ३ गज के फासले पर ही रहा होऊगा कि फीफी ने मुझपर हमला कर दिया। मैंने झट अपनी टॉर्च उसके जबडे में घुसेड दी। इस अप्रत्याशित हमले से बिचककर वह पीछे को उछली। मै आगे बढा। उसने मुझपर फिर हमला किया। वह हमला करती, और मै उसके मुह मे टॉर्च ठूस देता। यह खेल बडी देर तक चलता रहा। मुझे एक एक इच के लिए लडना पडा। टॉर्च टूट जाने के बाद मेरा क्या हाल होगा, यह

ख्याल आते ही मेरे रोगटे खडे हो जाते। बिल्लो की नाईं तेंदुए अधेरे मे देख सकते है, पर मै तो चिमगादड की तरह अधा हो जाऊगा, और फीफी मेरी बोटी बोटी नोच डालेगी। शुक्र यही हुआ कि टॉर्च को उसने नही चबाया। बडी कशमकश के बाद मै उसे सुरग मे खदेडने में कामयाब हो गया। जब मैं बाहर निकला तो मेरे सूट की धज्जिया उड गयी थी। यही खैर थी कि मुझे कोई गहरी चोट न पहुची थी। बस, उसी दिन मैंने तेंदुओ के लिए विशेष कटघरे और गलियारो का आर्डर दे दिया।

अपने असिस्टेंट को ट्रेन करने मे मुझे डेढ मास लग गया। बाद में वह स्वतत्र रूप से इन तेदुओ के साथ खेल करने लगा। अत में, सुप्रसिद्ध सरकस खिलाडी अ० न० अलेक्सान्द्रोव को यह तेंदुए सौप दिये गये।

सफ़ेद रीछ

आठ साल शेरो के साथ काम कर और लगभग ३५ जगली जानवरो को सधाने के बाद मेरी इच्छा सफेद रीछो के साथ अपनी किस्मत व हिम्मत आज़माने की हुई।

मेरे शेरो में से आधो को तो चिडियाघर भेज दिया गया और बाकी आधो को मेरे असिस्टेंट को सौप दिया गया।

सफेद भालुओ को ट्रेनिग देने में मेरी दिलचस्पी इसलिए और भी वढ गयी, कि विदेशी विशेपज्ञो के मत से उन्हे सधाना अत्यत श्रमसाध्य एव जोखिम का काम था। मुझे यह मालूम था कि सोवियत सघ मे किसी को इस काम का अनुभव नही है।

एक साल से पाच साल के वीच की उम्रवाले सात सफेद रीछ मुझे दिये गये। कुछ रैंगल द्वीप से और कुछ अरखागेल्सक से लाये गये। जल्दी ही हमारी एक दूसरे से जान-पहचान हो गयी। मैंने इनके नाम भी रख दिये—मीन्या, जक, मोरित्स, पेत्का, वुतुज़, चाली और मीरा।

आरभ मे मै यही समझता था कि इनमे और शेरो में कोई खास भेद नही है। वाद में मुझे विश्वास हो गया कि ये अन्य वन्य-पशुओ की अपेक्षा कही अधिक मक्कार, चालवाज, दगावाज, मजवूत और तेज निगाहवाले होते है।

मसलन, शेरो के मूड की बावत बडी जल्दी जाना जा सकता है। जब शेर हमला करने को होता है तो इसके कान सिर से चिपक जाते है, पूछ टागो मे घुस जाती है और यह काप उठता है। अपने उस्ताद पर हमला करने से पहले यह आखे फाड फाडकर देखता है। फिर नीचे झुककर गुर्राता है। पर सफेद भालू में ये लक्षण नही दिखाई देते। उसके साफ सपाट चेहरे को देखकर उसके मूड का अदाजा लगाना कठिन ही है। उसके सफेद चेहरे पर सिर्फ तीन काले धब्बे नजर आते है – नाक और आखें। सफेद रीछ अचानक ही हमला कर बैठता है। बस, उसे सधानेवाले के लिए सबसे बडी जटिल समस्या यही है।

'आर्कटिक प्रदेश की बर्फ में' नाम के अपने खेल की मैने एक रूप-रेखा तैयार की।

कहानी इस प्रकार थी आर्कटिक प्रदेश में आये हुए एक अभियान दल की भेंट कुछ सफेद रीछो से हो जाती है। ये ही इस निर्जन धवल प्रदेश के एक मात्र निवासी है। आखिर को इस खोजी दल की रीछो से दोस्ती हो जाती है। सरकस के अखाडे को बरफ के गाले की तरह सजाया जाता है। चारो ओर अधेरा है। बर्फ पड रही है। हवा साय साय कर रही है। चादनी रात में खोजियो का खेमा दूर से चमकता है। मास्को रेडियो का कॉल सिगनल सुनाई देता है। इधर-उधर डोलते हुए सफेद रीछ इस ध्वनि को सुनकर पहले तो अपनी पिछली टागो के बल खडे हो जाते है, और फिर लाऊड स्पीकर के पास जाकर मास्को के स्वर सुनते है। "यह मास्को है। अब समाचार सुनिये। हमारे खोजी दल ने उत्तरी ध्रुव पर डेरा डाल दिया है।" अब तमारा और मै सरकस के अखाडे में दाखिल होते हैं। स्पॉट लाइटे खोल दी जाती है। अखाडा जगमगा उठता है। रीछ हमारा स्वागत करने दौडते है। मीरा मेरी कमर मे बाह डाल देती है, और बुतुज तमारा का आलिगन करता है। हम भी 'हैलो' करते है, और मछलियो का तोहफा उन्हें पेश करते है।

फिर मैं कहना शुरू करता हू "मित्रो! कहो, कैसी गुज़र रही है?"

तब मूक अभिनय के द्वारा रीछ हमें अपने जीवन की कहानी सुनाते है। एक रीछ वर्फ-सी सफेद गेद पर चढ जाता है। दूसरा, बर्फ की लडियो की तरह लटकती हुई एक धन्नी के सहारे चलना शुरू कर देता है।

इसके बाद हम इन रीछो को नाश्ते के लिए दावत देते है। ये बडे प्रसन्न होते है। एक रीछ दौडकर बर्फ की एक सिल उठा लाता है। यह मेज का काम दे जाती है। दो दूसरे रीछ वर्फ के वडे वडे ढोके उठा लेते है। ये हो गयी हमारी कुर्सिया। बस, अब हम सब इस फर्ज़ी टेबल के चारो ओर वैठ जाते है। मीरा अपनी मछलिया जल्दी जल्दी गटककर और लेने के लिए अपनी प्लेट आगे वढाती है। अव मैं मेहमानो के लिए तमारा से शराव की वोतल लाने को कहता हू। तमारा खेमे से वोतल लेकर लौटती है और मेज पर रख देती है। एक रीछराज अपनी वारी की प्रतीक्षा में मेज के चारो ओर चक्कर काट रहे है। वे चुपके से वोतल ले उडते है। अव यह महाशय जगले के पास वोतल खाली कर देते है। दर असल, यह शराव नही है, यह तो मीठा पानी है। तव मैं तमारा को दूसरी वोतल लाने के लिए कहता हू। अब की रास्ते में चाली डाका डाल देता है। पर, वहादुर तमारा, जैसे-तैसे वोतल वचाकर ले ही आती है। हम सब वोतल खाली कर देते है।

नाश्ते के वाद मैंने मीरा को इस मुलाकात की मूवी फोटो उतारने को कहा। मीरा कैमरे के पास जाती है, और उसका हैंडल घुमा देती है। इसके वाद हम रीछो से निवेदन करते है कि हमे हवाई अड्डे तक तो छोड आओ। इतने मे एक स्लेज वहा पर आ जाती है। दो रीछ अपने-आप इसमे जुत जाते है, एक लगाम पकड लेता है, और हम इसमें वैठकर चल देते है। वाकी रीछ हमे पहुचाने आते है।

हिंसक पशुओं मे भी कायरता होती है। यह प्राय तव देखने में आती है, जब उनकी मुठभेड किसी अनजानी चीज मे हो जानी है। ऐसे मौको

"लो, हम चले!"
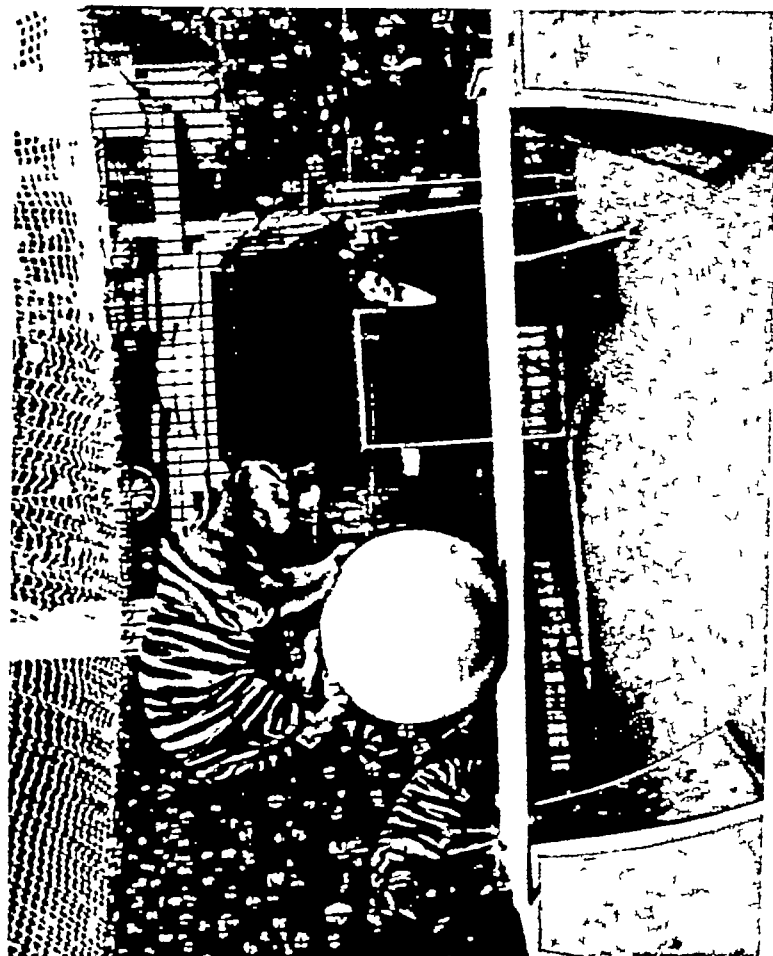
मीजर के करतब

पर, शेर और चीता तो भागकर कही छिपने की कोशिश करता है, परन्तु सफेद रीछ तो सीधे उसी चीज़ पर हमला कर देता है और उसे नष्ट-भ्रष्ट करने की कोशिश करता है। सधानेवाले के लिए यह जानना बडा मुश्किल होता है कि वह कब किस चीज़ से विदक उठेगा।

मुझे याद है कि एक दिन मेरा सीधा हाथ ही जाते जाते बचा। खेल के दौरान मे जक नाम का रीछ मेरे पास मछली का इनाम लेने आया। मैंने मछली दे दी। उसने मछली गटक ली, पर सहसा ही कबख्त ने मेरा दाया हाथ अपने मुह में रख लिया। मैंने ज़ोर से बाए हाथ से उसे तमाचा मारा। तमाचे से भिन्ना कर वह धरती पर चारो ख़ाने चित गिर पडा। दूसरे ही क्षण वह फिर उठा। मगर अब दोनो पजो से अपना सिर पकडकर लगा छीकने। इसके बाद वह बर्फ के गाले पर चला गया, और लगा छीक पर छीक मारने।

यह सब इतना मज़ाकिया सीन था कि दर्शकगण भी हसते हसते लोट पोट हो गये। शायद उन्होने समझा कि यह सब भी खेल का अग था।

हा, कभी कभी सधानेवाला सफेद भालुओ में भी मैत्री भाव उत्पन्न कर सकता है। लेकिन यह सब कुछ पशु विशेष पर निर्भर करता है। उदाहरण के लिए मै अपने को मीरा का मित्र कह सकता हू। उसे मैंने तब जाना जब वह एक साल की ही थी।

मीरा बडी चतुर रीछ थी। मै तो कहूगा, वह अच्छी ख़ासी मनोवैज्ञानिक भी थी। वह खूब समझती थी कि वह तमारा के साथ, कैसा व्यवहार करे, और मेरे साथ कैसा, वैसे तमारा भी थी अत्यधिक पशु-प्रेमी।

हमने मीरा को स्की का खेल सिखाना चाहा। पहले पाठ के दौरान में, मैंने उसे मछलिया खिलायी और तमारा ने उसक पैर स्की पर सधाने की कोशिश की। ज्यो ही तमारा ने उसका एक पजा पकडकर स्की पर रखना चाहा, मीरा मछली खाना भूल गयी, और तमारा की ओर ऐसे ताकने लगी जैसे यह पूछ रही है "क्यो जी, यह मेरी टाग कौन घसीट रहा

है?" तब झट से उसने तमारा के हाथवाला पैर नीचे रख दिया, और दूसरा पैर ऊपर उठा लिया। "जल्दी से उसी पैर को स्की पर रख दो," मैंने तमारा से कहा। पर, ज्यो ही तमारा ने उस पैर को पकडना चाहा, इस मसखरी ने उसे नीचे धर दूसरा पैर उठा लिया।

तव तमारा की जगह यह ज़िम्मा मैंने लिया, और मीरा का नटखटपन समाप्त हो गया। वह जानती थी कि यह सब मुझे पसद नही।

चाली तवीयत से वडा खिलाडी था। उसे यदि कोई चीज पसद थी, तो खेल। और जव कभी इस दिल्लगीबाज को मौका मिलता, वह तमारा के साथ खिलवाड किये बिना न मानता। आखिर तमारा भी तो उसके भाई वदो को वेहद प्यार करती थी।

एक मजाकिया खेल में चाली ने 'हीरो' का पार्ट अदा किया। खेल के वाद सव रीछ सुरग मे से होकर अपने अपने कटघरो मे चले गये, और तमारा और मै फिर सलाम करने को वापिस लौटे। लेकिन वदमाश चाली गलियारे के वीच में ही छिपकर खडा रहा। उसका इरादा था कि जब तमारा वापिस लौटे तो वह उससे थोडी दिल्लगी कर सके। उसकी दिल्लगी भी अजीव थी। वह तमारा की पिडलियो से खेलना पसद करता। मेरे लाख कहने पर भी वह उसकी पिडली मुह से न छोडता। यदि मै धमकाता, तो वह तमारा की टागे चवाने लग जाता। यह शरारती जानवर मुझे चिढाने के लिए तमारा का पैर अपने मुह में ले लेता, और मेरी ओर ऐसे देखता जैसे कि कह रहा हो

"देखिये, आप ने कुछ कहा नही कि पैर मेरे मुह में।" वस, मैं झक मारकर वैठ जाता, और इस इतज़ार मे रहता कि देखे कव यह पाजी मेरी वीवी का पैर छोडना है।

इस शैतान के हथकडो से निजात पाने की हमने एक तरकीव निकाल ही ली। एक दिन तमारा सवसे पहले सुरग मे दौडकर वीचो-वीच पहुच गयी, और उछलकर ऊपर की छडो मे झूलने लगी। चाली मेरी वीवी के

पीछे पीछे दौडने लगा। और पीछे पीछे मैं उसे खदेडता जा रहा था कि वह और तेज़ दौडे। पर, वहा तमारा को न पाकर वह दग रह गया। और इधर मेरे कोडे उसपर नागवार गुज़र रहे थे। बस, उस दिन से चाली ने शरारत न करने की कसम खा ली। अब खेल समाप्त होने पर सबसे पहले चालीराम तशरीफ ले जाते।

एक और घटना भी सुना दू। इससे पता चलता है कि रीछ में सुनी बात को याद रखने की कितनी क्षमता है। यह बात तब की है जब हम इवानोवो में सरकस कर रहे थे। मेरा 'आर्कटिक' खेल सदा मीठे सगीत के साथ शुरू होता था। और जब रीछ स्लेज लेकर रवाना होने लगते, तभी बैंड पर जोशीला तराना छिड जाता। एक दिन बैंड-मास्टर तराना बदलना भूल गया। दो रीछ, आगे बढकर स्लेज मे जुत गये। आश्चर्य की बात यह है कि वे रवाना नही हुए, बल्कि जुए से निकल सीखचो के पास पहुच कर, अपने पिछले पैरो पर खडे हो गये, और बैंड को इस तरह घूरने लगे जैसे कि वे बैंड-मास्टर की शिकायत कर रहे हो। जब मैंने उनके इस मूक नाटक का अर्थ बैंड-मास्टर को समझाया तो उसने अपनी गलती समझी, और फौरन अपना तराना बदल दिया। अब रीछ भी अपनी अपनी जगह आ गये, चालक रीछ उछल कर अपनी जगह बैठ गया, और सवारी चल दी।

सफेद रीछ बडा जलप्रिय प्राणी है। हमने उनके तैरने के लिए ५ फुट गहरा, २० फुट लबा १० फुट चौडा एक सफरी तालाब बनवाया। यह तालाब उनके कटघरो के पास रखा जाता ताकि फालतू समय में वे जल-विहार कर सकें। गर्मियो में हम इसी तालाब में बर्फ भी डलवा देते थे, जिससे यह जानवर और भी खुश हो जाते। घटो इस तालाब के पास बैठा मैं इन जानवरो के स्वभाव का अध्ययन करता रहता।

तभी मैंने जाना कि यह सफेद रीछ कितने सतर्क, चुस्त और होशियार होते हैं। जक जब कभी किसी को तालाब के पास आते देखता, वह झट

गोता लगा जाता, और थोडी देर बाद जब निकलता तो इस ज़ोर से अपने शरीर को झटकता कि वह बेचारा आदमी भीग जाता।

इस प्रकार ३-५ घटे तालाब में जल-क्रीडा करने के पश्चात् रीछो को कटघरो में बद कर दिया जाता। खेल से तीन घटे पहले ये एक बार फिर जल-विहार करते और जब इनका शरीर सूख जाता तो इनके बदन पर खास पाउडर छिडक दिया जाता, जिससे देखनेवालो को वर्फ के गाले का भ्रम हो जाता।

इन रीछो की खुराक आम तौर पर मछली और रोटी होती।

इनकी तीमारदारी भी एक जानलेवा काम था। वीमार रीछ के कटघरे में आने से सब डॉक्टर डर जाते। प्राय वन्य पशु वीमार हो जाने पर बडे झक्की, और चिडचिडे हो जाते है। दवा लेने से इन्हे सख्त चिढ होती है। हा, यह भी वात है कि जब इनकी हालत नाजुक होती है, तो यह चुप-चाप हर तरह के इलाज के लिए राजी हो जाते हैं।

एक बार कुर्स्क में चाली वीमार पड गया। उसकी भूख जाती रही, वह वडा उदासीन हो गया, और वह उठ नही सका। मेरा निदान था कि उसके गले की गिल्टिया फूल गयी है। डॉक्टरो का भी यही निदान था। वे हैरान थे कि आखिर यह रोग इस रीछ को कहा से लग गया। अपने प्रदेश मे इसको 'सर्द' और 'गर्म' में तमीज़ करने का मौका ही कहा मिलता है? हमारे सफर के दौरान मे यह रीछ मालगाडी के खुले डिव्वो में ले जाये जाते। यह जमे हुए तालाव मे स्नान करने के आदी थे, जब शीतमान ३० डिग्री सेंटीग्रेड से भी नीचे गिरा होता था। और यह थे चाली राम जिन्हें मध्य रूस के प्रदेश मे स्थित कुर्स्क शहर में ही जुकाम हो गया। यहा मौसम भी वहुत वुरा नही था।

खैर चाली की वीमारी का कारण चाहे जो भी रहा हो, हमें उसे वचाना तो था ही। दो हफ्ते तक तो चाली की हालत वहुत वुरी रही। मैं तो समझा कि अव वह चल ही वसेगा। फिर भी हमने इलाज जारी रखा।

उसे सबसे अलग रखा गया। उसके गले में पुलटिस बधी रहती, और बेचारे को लाल स्ट्रेप्टोसाइड की गोलिया निगलनी पडती। मैं पहले ही कह आया हू, कि जो जानवर बीमार होता है, और खास तौर पर जिसका गला खराब होता है, वह दवा खाना बिल्कुल पसद नही करता। इसलिए कोई न कोई जुगत बरतनी ही पडती है। चाली को तो हम गले मे इजेकशन दे देते थे। यह कठिन काम था। इसके लिए कभी कभी हमें घटो इतज़ार करना पडता। चाली ने पुलटिस फाडकर फेंक दी। दुबारा इसे बाधना आसान न था। तमारा ने और मैंने पारी पारी से घटो मानमुनौवल की। खैर, क्वर्त्स लैंप की रोशनी से उसका गला हमने ठीक कर लिया। राज़ी होने के बाद उसने दूने शौक से खेल शुरू कर दिये।

जब तक चाली का बुरा हाल था, वह हमें सब कुछ कर लेने देता। लेकिन ज्यू ही उसकी हालत सुधरने लगी, वह साधारण रोगियो की भाति नखरे करने लगा। ज़ाहिर है, उसने अपने मन में सोच लिया होगा कि अब मुझे डॉक्टरो की कोई जरूरत नही। अब मैं फिर शरारत कर सकता हू।

साराश यह कि सफेद रीछो की मास्टरगीरी भी ज़िदगी का एक दिलचस्प तजुर्बा था। मुझे इस बात पर नाज़ है कि मैंने वह काम किया जो अब तक किसी रूसी ने नही किया। मुझे इस बात की भी खुशी है कि मैंने उन पैगबरो को झुठला दिया जो मुझे डराया करते थे कि "खबरदार सफेद रीछ को नाथने की बेवकूफी मत करना। यह किसी के बस का नही है। यह तो जान लेकर छोडता है।"

मैं तो केवल यह साबित करना चाहता था कि हमारे सरकसवाले हर किस्म के जानवर को सधा सकते है। हमारे सरकस शौकीन भी हमसे यही आशा करते है कि हम अपनी सफलताओ पर सतोष करके न बैठ जायें, वरन नित्य नये नये प्रयोग करते रहें। सफेद रीछो को सधाने मे मैंने जो अनुभव प्राप्त किया, वह आगे चलकर चीतो और भूरे रीछो को सधाने में मुझे बड़ा सहायक सिद्ध हुआ।

इवानोवो नगर में म० द० एल्वोर्ती को सफेद रीछो का दल सौप देने के वाद, मुझे और भी निश्चय हो गया कि स्वाभाविक क्रूरता व दुष्टता के वावजूद ये स्वामिभक्त सावित हो सकते है। दो मास के रिहर्सल के बाद ही एल्वोर्ती और तमारा स्वतत्र रूप से इनका खेल करने लगे। एक दिन एल्वोर्ती मीरा के साथ मज़ाकिया कुश्ती का रिहर्सल कर रहा था। मैंने देखा कि एल्वोर्ती उचित कडाई से काम नही ले रहा था।

मीरा इसे भाप गयी और उसने उसके आदेशो की अवहेलना शुरू कर दी। मै झट से मीरा के कटघरे के पास गया, और कसकर उसे डॉट पिलायी।

मेरी आवाज सुनते ही मीरा चुपचाप एल्वोर्ती के कधो पर अपने पजे रखकर खडी हो गयी। फिर ठोकर से दर्वाजा खोल मै उसके कटघरे में दाखिल हो गया।

एल्वोर्ती को वही खडा छोड मीरा मेरी ओर आने लगी। मैंने तमारा को उसे वही रोकने को कहा। तमारा ने सोटी से उसे आधे रास्ते मे रोक लिया और अपनी जगह पर वापिस जाने को कहा।

लेकिन मीरा ने आहिस्ता से तमारा को धक्का देकर एक तरफ कर दिया, और मेरी तरफ बढी। पास आकर उसने अपने पजे मेरे कधो पर रख दिये और अपनी थूथनी मेरे चेहरे से रगडकर दु ख भरे स्वर मे कराहने-सी लगी। सच कहू, मेरा भी दिल भर आया। मीरा मुझसे चिपक गयी, और हटाये न हटी। लाचार होकर, उस रात रिहर्सल अधूरा ही छोडना पडा। इस 'हिमानीस्नेह' के स्रोत को रोकने का मेरा भी जी न चाहा, और मै मीरा से खेलने लग गया।

अत में यह सब रीछ लेनिनग्राद के चिटियाघर को सौंप दिये गये।

पाच साल वाद, सन् १९४८ में मुझे लेनिनग्राद जाने का इत्तिफाक हुआ। मै अपने पुराने दोस्तो से मिलने चिटियाघर गया। वहा उनके तालाव के पास मैंने लोगो की भीड देखी। दूर से ही उन गोताखोरो मे मैंने वुतुज़

को पहचान लिया और पुकारा। झट उसने जल में से अपना मुह निकाला, कान फडफडाये और चौकन्ना होकर इधर-उधर देखने लगा। मैंने फिर आवाज दी। वह तैरकर तालाब की दीवार तक आ गया, और ढालू चिकनी दीवार पर चढने की कोशिश करने लगा, पर चढ नही सका।

कहना न होगा कि मेरा दिल भर आया। हमें एक दूसरे से बिछुडे पाच साल हो गये थे, और उसे मेरी हवा तक नही मिली थी। पाच साल में तो इन्सान भी अपने दोस्तो को भूल जाता है।

चिडियाघर के मैनेजर ने मुझे बताया कि दुराचरण के कारण पेत्का को सबसे अलग रख दिया गया है। उसने दो रखवालो को नोच खाया था, और अब उस जगली के पास जाने का किसी को साहस नही होता था।

हम उसके कटघरे से थोडी दूर पर रुक गये और उसे आवाज़ देने लगे। वह मुझे फौरन पहचान गया, और झूमता-झामता जगलो के पास आ गया। मैनेजर की चेतावनी के बावजूद मै उसकी तरफ बढा। जितना ही मैं उसके करीब होता जाता था, उतना ही पेत्कादीन खुश होता जाता था। मैंने उसका सिर थपथपाया, और मीठी मीठी बातें करने लगा। इस क्रूर पशु ने मुझे देखकर पजे तक नही निकाले। जब मै वहा से चलने लगा तो पेत्काप्रसाद जगले पर पिछली टागो के बल खडे हो गये, और लगे सिसकिया भरने। जैसे कि मुझसे कह रहे हो कि जरा देर तो और ठहरो।

सद्व्यवहार और सुस्वादु भोजन, एव प्यार-दुलार ने क्रूर भालू को भी मृदु बना दिया। इस घटना से यह और भी स्पष्ट हो गया कि रीछ देखी सुनी बात को खूब याद रखते है, और सद्व्यवहार कभी निष्फल नही जाता।

चीते

चीते सधाना मेरे सरकसी जीवन का अगला कदम था।

यह चीते प्राय बगाली नस्ल के होते। लेकिन जब विदेशी पशु-शिक्षको ने मुझे बताया कि उस्सूरी नस्ल के चीते सधाये नही सधते, तो मेरा ध्यान बरबस उनकी ओर चला गया।

पर, इन्हे प्राप्त करना कठिन काम था। इस जाति के चीतो के बच्चे मिलना असभव-सा जान मैने सयाने चीतो को ही सिखाने का निश्चय किया। प्राय ८—९ वर्ष की आयु के चीते ही विभिन्न चिडियाघरो से मिल सके।

मेरे पास के चीतो में एक चीता दस साल का था। उसका नाम जैक था। वह क्रासनोदार के चिडियाघर से लाया गया था। इस चिडियाघर के मैनेजर ने पहले तो टालना चाहा, पर अत में मजबूर होकर जब उसे भेजना ही पडा, तो उसने मुझे पत्र द्वारा परामर्श दिया कि मै जैक को ट्रेन करने का विचार छोड दू, क्योकि, एक तो वह दस बरस का हो चुका है, और दूसरे बडा वहशी जानवर है। और दो बार इन्सान का लहू इसके मुह से लग चुका है।

इन सब चेतावनियो के बावजूद मैने जैक को ट्रेनिग देने का सकल्प कर ही लिया।

बोरिस एदर श्रौर हैरी
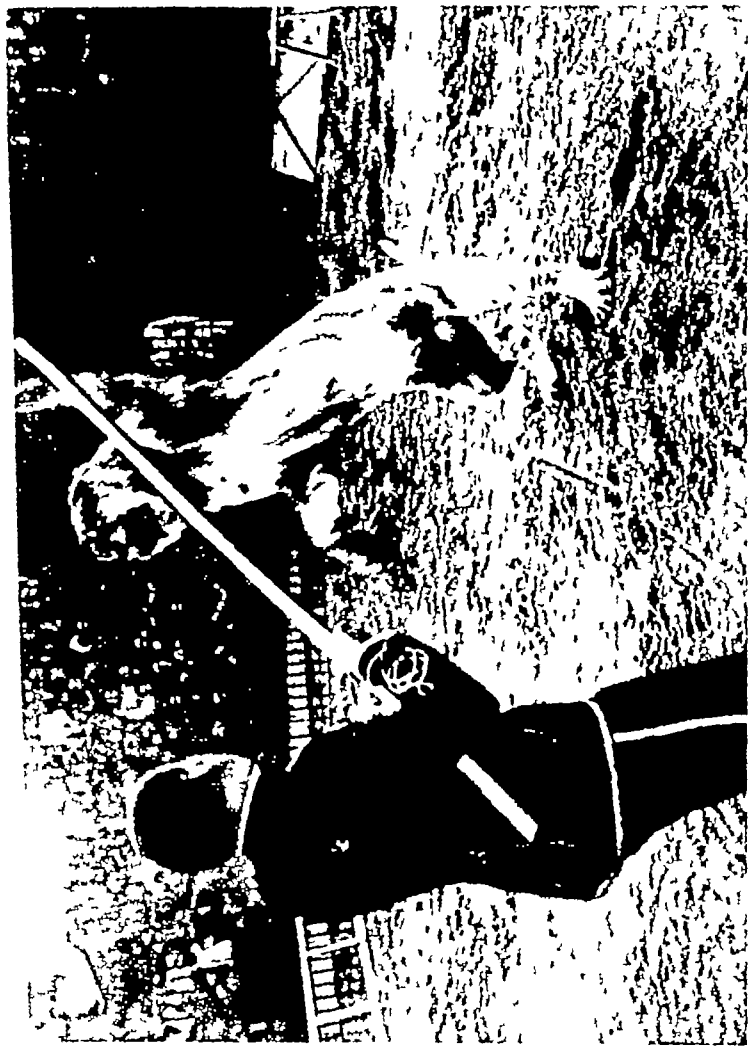
शेरखान, जैक श्रौर सीज़र रिहर्सल के समय

उस्सूरी चीता जैक

मीरा और ततोशा

दूसरा चीता – हसन – मुझे नोवोसिबिर्स्क से मिला। इसकी उम्र नौ साल थी। मेरा तीसरा चीता दोगली नस्ल का था। बाप उस्सूरी नस्ल का चीता, और मा शेरनी।

वह हाथी के समान बलवान, पर स्वभाव से बडा क्रूर था। शुरू शुरू में मैं इस चीते के साथ नाकामयाब रहा।

मेरे दल के अन्य दो चीते बगाली नस्ल के ही थे, और वे रीगा के चिडियाघर से भेजे गये थे। इनकी उम्र कोई दो साल की रही होगी।

ट्रेनिग के पहले सप्ताह मे मैंने उन्हे केवल समझने का प्रयत्न किया। मै घटो उनके कटघरो के पास बैठा रहता, उन्हे खाना खिलाता और कुछ एसा करता कि वे इधर-उधर जाते य् कहिये कि उनकी हर तरह से दिलजोई करता।

हिसक पशुओ के हमला करने का ढग भी अलग अलग होता है। कोई तो अपनी पिछली टागो के बल खडे होकर सीधे सीधे हमला कर देता है, कोई बिजली की तरह कौंधकर टूट पडता है, और कोई धीरे धीरे पेट के बल रेगकर पास आता है, और कदम उखाड देता है। सधानेवाले को इन सब बातो का पूरा इल्म होना चाहिए।

दूसरे सप्ताह में चीतो का सूक्ष्म अध्ययन करने के लिए मैंने उन्हें सरकस के कटघरे में लाना ले जाना आरभ किया। सबसे पहले उस्सूरी वश के जैक और दोगले हैरी को मैंने लिया, और काम इस तरह किया।

जैक को मुख्य कटघरे में हाकने से पहले मने उसमें बहुत सारी चीजें रख दी।

इनसे मैंने सिखाने का काम भी लिया और अपनी आड का भी।

पहले पहल, ज्यू ही जक ने मुझे कटघरे की ओर आते देखा, वह दरवाजे की ओर झपटा।

कवख्त ने दरवाजा तक न खोलने दिया। मै इससे ज़रा भी घबराया नही। मुझे पूरी उम्मीद थी कि दाखिल होने का मौका जल्दी ही आयेगा।

जैक यह समझ रहा था कि उसे दु ख देने के लिए मै कटघरे मे आना चाहता हू। इसलिए, मै बाहिर से ही उसे गोश्त खिलाने और उससे मीठी मीठी बातें करने लगा।

बस, अब जैक के साथ नित्यप्रति एक घटे तक यही व्यवहार चलता। मैने यह क्रम तब तक जारी रखा जब तक कि वह मुझसे हिल नही गया, और मुझे देखकर भडकने की आदत उसने छोड नही दी।

मुझे तो उसे सिर्फ इतना विश्वास दिलाना था कि उसे कष्ट देने का मेरा बिल्कुल इरादा नही है, और मै तो केवल उसकी खातिर करने के लिए ही आता हू। इस प्रकार, हर रोज उसे गोश्त की रिश्वत देते देते एक दिन मैने उसके कटघरे में कदम रखने की जुरअत कर ही ली। यह देख वह सन्न हो गया, और लगा मुझपर गुर्राने, दात दिखाने। आखिरकार, उसने मुझपर हमला कर ही दिया। मैने वहा पडी टब और सीढी जैसी चीजो के पीछे छिपकर जैसे तैसे अपनी जान बचायी।

आरभ में हम दोनो की बिल्कुल नही बनी, परन्तु धीरे धीरे मै जैक के तौर तरीको से वाकिफ होता गया। पर था वह बडा ही खर दिमाग, हठी, और दुष्ट प्रकृति का पशु। हालाकि उस्सूरी नस्ल के चीते 'मनुष्य-भक्षी' होने के नाते काफी बदनाम है, तो भी मेरा यह अटल विश्वास है कि सद्व्यवहार से यह हिसक प्राणी भी अपनाये, और सिखाये जा सकते है।

सात साल का हैरी भी कोई कम जिद्दी, खूखार और दगाबाज न था। एक तरह से वह मेरे लिए जैक से भी बडा सिरदर्द था, क्योकि इस दुष्ट पर घूस का भी कोई प्रभाव न पडता था। यदि मै मास भेंट करता, तो वह उल्टा और अधिक क्रुद्ध हो जाता। पजा मारकर वह छडी परे गिरा देता, और मुझे एक भी कदम अपनी ओर नही बढने देता।

अब मैने उससे मनोवैज्ञानिक ढग से लडाई लडने की ठानी। मैने अपने आगे एक टब कर लिया, और इसे धीरे धीरे खिसकाता, मै आगे बढने

लगा। हैरी ने घबराकर हथियार डाल दिये और मैं बिना हीले-हवाले के उसके पिजडे मे दाखिल हो गया।

लेकिन यह सुलह अस्थाई ही रही। जैसे ही मैं अदर पहुचा हमारी सुलह की मियाद खत्म हो गयी। पिछली टागो पर खडे होकर हैरी ने मुझपर धावा बोल दिया। उसकी आखो से खून बरस रहा था। टब को मैंने ढाल बनायी, दोशाखा हाथ में लिया, और चुनौती स्वीकार कर मैं मैदान में आ गया। अब हमारी लडाई शुरू हो गयी। दोशाखा को सदा उसके आगे रखकर मैं उसे अपने से दूर रखने मे सफल हो गया। फिर मैंने टब जोर से उसके आगे फेंक दिया। हैरी टब पर झपटा, और मुझे अगले कदम के बारे में सोचने का मौका मिल गया।

खैर, इस पहली मुठभेड से हैरी को यह स्पष्ट हो गया कि मेरी सकल्प-शक्ति उससे कही अधिक दृढ है।

कई बार तो छोटी-सी बात पर ही हैरी साहब लाल झडी दिखा देते। एक रिहर्सल के दौरान में उसने सब सामान तोड-फोड दिया। इस जोर के बाद हम दोनो सुस्ताने लगे। इस बीच मैंने कटघरे मे से टूटी-फूटी चीजे इकट्ठी कर अपने बचाव की तैयारिया शुरू कर दी। साथ के उपाहार-गृह से मैंने सोडे की बोतलो की खाली पेटिया मगवा ली।

जब दुबारा रिहर्सल शुरू हुआ, तो पराक्रमी हैरी ने फिर मुझपर हमला किया। मैंने भी झट से पेटी उठायी, और उसके ऊपर फेंक दी। हैरी ने पेटी को बीच में ही रोक लिया, और इस जोर से उसे चीरा कि आवाज़ से वह खुद ही सहम गया, और उछल कर अपने टब पर जाकर बैठ गया।

अब हैरी मेरी ओर ताकने लगा, मानो मुझसे उस भयानक आवाज़ का कारण जानना चाहता हो। पर, पाच-दस मिनट में ही अपना होश सभालकर, वह शैतान मुझपर फिर टूट पडा। मैंने फिर एक पेटी उसको दे मारी। नतीजा वही हुआ। तब से यह हैरी बहादुर खाली पेटियो से डरने लग गये।

इसके वाद मैंने बगाली नस्ल के सीजर और शेरखान नाम के दो दूसरे चीता-वधुओ को लिया। पर इस जोडी से मुझे पूर्ण विश्वास हो गया कि उस्सूरी चीता वाकई बडा ही खतरनाक और दगाबाज जानवर होता है। लेकिन यह बगाली नस्ल के चीते नर्म तवीयत के और आसानी से सधाये जा सकते हैं।

मसलन, मै वहुत जल्दी ही इन दोनो के कटघरे में आने-जाने लगा।

इसके वाद मैंने सरकसी कटघरे का रिहर्सल शुरू कर दिया, क्योकि मेरे पास अधिक समय न था।

इन पाच चीतो मे से तीन प्रौढ थे। उन्हे मैंने दो दलो—वडे और छोटे—में विभक्त कर दिया।

जव मुझे हर एक चीते के गुण, कर्म और स्वभाव का ज्ञान हो गया तो मैंने उनके लिए विशेष खेल भी चुन लिये। हर एक को मैंने अलग अलग से सधाया, और हर रोज पाच पाच घटे मैंने इनसे माथापच्ची की। होते होते यह अपने खेल के मास्टर वन गये।

जैक टवो पर उछाल मारना, झूला झूलना, छलाग लगाना, और पिरामिड मे हिस्सा लेना खूब सीख गया।

हैरी कूदना, झूलना और पिछली टागो पर उल्टे चलना जान गया। सीजर धरती से ७ फुट ऊपर एक गेद पर वखूवी चलता और हैरी और जैक को झूला झुलाता। शेरखान पिरामिड के खेलो में हिस्सा लेता, कूदता और छड के खेल करता। अलग अलग अपने खेल खत्म करने के वाद ये चीते दो पिरामिड वनाते और तव तक साथ साथ वाडो को पार करते।

ट्रेनिंग का दूसरा भाग भी वडा महत्वपूर्ण था। अव समय था कि ये वडे कटघरे मे खेल करते। वैसे पास पास के कटघरो में रहने से इनका एक दूसरे से साधारण परिचय तो हो गया था। अव, इन विभिन्न स्वभावो के जानवरो की एक टीम वनाने का सवाल मेरे सामने था। यह एक विकट समस्या थी, क्योकि यह मेरे चेले आपस मे लडकर न केवल मेरा सारा

खेल चौपट कर सकते थे, वरन् एक दूसरे की जान तक ले सकते थ।

अगर्चे कुछ चीते एक दूसरे से सख्त नफरत करते थे, फिर भी इनकी भेंट सफल रही। बगाली चीता सीज़र देखने में सबसे छोटा था। पर सबसे बड चीते हैरी से घोर घृणा करता था। सौभाग्य से हैरी बुजदिल निकला। जब कभी दाव लगता, सीज़र हैरी पर हमला किये बिना न रहता। बेचारे हैरी को इस छोटे-मोटे गुडे से बचाना मेरे लिए एक बडा काम था।

मैंने आख मोडी नही कि बदमाश ने हमला किया। नौबत तो यहा तक आ गयी कि तमारा को हैरी साहब का अगरक्षिका बनाना पडा। वह सदा उसके साथ साथ रहती कि कही यह बगाली बाबू उसपर वार न कर बैठें। हैरी यह सब 'समझता' और इसी लिए वह तमारा के प्रति अपनी कृतज्ञता का कई प्रकार से प्रदर्शन करता। अब तमारा उसे दुलरा तक सकती।

इसी प्रसग में मै एक दिलचस्प घटना बयान कर दू।

प्राय अखाडे मे सबसे पहले हैरी साहब लाये जाते, और शैतान सीजर सबसे आखीर में।

एक दिन हरी अपने-आप ही अखाडे में भाग आया, पर जब वह इतमीनान से वहा बैठ गया तो उसे महसूम हुआ कि उसकी अगरक्षिका, उसकी त्राता तमारा वहा नही है। उसकी फूक सरक गयी।

और, जब वह शैतान सीज़र अखाडे में उतरा तो उसने यह फौरन ताड लिया। बस, सीज़र ने गरीब हैगी पर हमला कर ही तो दिया। हैरी साहब लगे इधर-उधर दौडने और अपनी जान बचाने।

तभी मै कटघरे मे दाखिल हुआ, और तमारा हैरी के पास पहुच गयी। हैरी ने उसे देखते ही टब की ओर अपने कदम बढाये। मैंने सीज़र को उसकी जगह पर हाक दिया। तमारा को देखते ही हैरी ज़ोर से दहाडा, जैसे कि वह तमारा की भर्त्सना कर रहा हो कि यह ठीक टाइम पर क्यो नही आयी।

चीतो का खेल तैयार करने में मुझे ६ मास लग गये। इनका खेल पहले मैने ओदेस्सा में, और बाद मे मास्को मे किया। मास्को मे उस समय हम नये खेलो का प्रोग्राम तैयार कर रहे थे। ओदेस्सा मे हसन को निमोनिया हो गया, और मेरे लाख जतन करने पर भी उसकी जान न बची। अब मुझे सारा खेल दुबारा तैयार करना पडा। मैने तीन हफ्तो में ही यह काम कर डाला।

अब बारी जैक की आयी। हसन की ही तरह जैक को भी निमोनिया हो गया। मुझे फिर पशु-डॉक्टर बनना पडा। खैर, जैसे-तैसे सुल्फीडीन और गर्म भाप के इलाज से जैक तो बच गया।

जैक के कटघरे को चारो ओर से प्लाईवुड से बद कर, सिर्फ उसमें एक छोटा-सा सुराख रहने दिया गया। इसके द्वारा पानी, टर्पेन्टाइन, सोडा, सूखी घास की भाप कटघरे मे पहुचायी जाती। जैक यही भाप सास के साथ अदर खीचता रहता। उसे विटामिन देने का तरीका यह था कि या तो मास मे मिलाकर नीबू के टुकडे उसके पेट मे पहुचाये जाते या पिचकारी से उसके गले में नीबू का रस डाला जाता। जैक आदर्श रोगी था। उसने वडी शाति से इलाज वरदाश्त किया। वारह दिनो में ही वह विल्कुल चगा हो गया।

जव जैक सफर के लायक हो गया, तो हम मास्को आ गये।

कई वार मेरे मन में विचार आया कि चीतो को दूसरे मास्टर के हवाले कर मै भूरे रीछो की ट्रेनिग अपने हाथ मे ले लू। पर, दुर्भाग्य से, यह दल जल्दी ही टूटने लगा। हैरी और शेरखान मर गये। इसके वाद जैक और सीजर को मैने रूसी जनतत्र के सम्मानित कलाकार अलेक्सान्द्रोव के हवाले कर दिया। जैक थोडे समय वाद मर गया, और अकेला सीजर ही रह गया। यह विचित्र 'जगली विल्ला' आज भी अलेक्सान्द्रोव के दल में अपने करतव दिखलाता है।

भूरे रीछ

दो वर्ष चीतो को ट्रेनिग देने के पश्चात् मुझे भूरे रीछो का एक हवाई करतब करने का ख्याल आया।

मेरे इस विचार से सरकस-बोर्ड के सदस्य भौचक्के रह गये। किसी ने कभी सोचा तक न था कि रीछ भी सरकस के पडाल में काम कर सकते है। जगली जानवरो को कटघरे में रखकर खेल करना तो सब की समझ मे आता था, पर सब लोग हैरान थे कि छत के नीचे जगले से बाहर इन जानवरो पर कैसे विश्वास किया जा सकता है। दूसरे, लोगो का ख्याल था कि ये पशु खुली जगह से प्राय खुद भी डरते है और आखिर, हवाई कलाबाज़ी के लायक ये कब से बन गये?

सरकस-बोर्ड को अपने से सहमत करने में मुझे काफी समय लगा।

अबकी फिर, मेरे पास समय की कमी थी। यह खेल २३ फर्वरी, सन् १९४८ तक तैयार हो जाना चाहिए था, और मैंने तो रीछो को सधाने का काम हाथ मे जून सन् १९४७ में लिया था।

दो दो साल की उम्र के नौ रीछ उस्सूरी तैगा से पकडकर हवाई जहाज द्वारा नोवोसिवीर्स्क लाये गये थे। चार रीछो के बच्चे अर्खांगेल्स्क के जगल से आये थे।

इस नये खेल की रूप-रेखा यह थी

अखाडे से १३ फूट की ऊचाई पर एक सुरक्षा जाल टागा गया था, फर्श से ४० फुट की ऊचाई और एक दूसरे से दस दस गज के फ़ासले पर

दो प्लेटफार्म छत से लटकाये गये थे, जिनके बीच में एक एक फुट की दूरी पर सात सात इच मोटे दो बडे तार बाधे गये थे।

चार भालू-बच्चे अखाडे में आने के बाद, एक नसैनी से सुरक्षा जाल पर पहुच गये। फिर जाल के सहारे एक वास द्वारा प्लेटफार्म पर चढकर आगे वढ गये। मै पहले प्लेटफार्म पर ही था। यहा से रीछ तार पर पिछली टागो के वल चलकर तमारावाले प्लेटफार्म पर पहुच गये। इसके बाद पाच बडे रीछ अखाडे मे लाये गये। वे भी उसी तरह मेरे प्लेटफार्म पर आ गये। बस, अब खेल शुरू हो गया।

पहले एक रीछ ने बास के सहारे खडे होकर तार पर चलना शुरू किया। जब उसने अपना करतब दिखाने से इन्कार कर दिया तो एक छोटा भालू उसकी सहायता को आगे वढा। स्वय उल्टा चलकर वह उसे र । पर चलाने लगा। तत्पश्चात् दूसरे दो रीछ—शारिक और डेज़ी, सामने से आकर तार पर चलने लगे, और जव वीच में पहुच गये, तो शारिक तार पर आडा लेट गया, और डेज़ी उसे लाघकर आगे वढ गया।

मीरा ने यह करतब आख पर पट्टी वाधकर किया। जव मीरा तार के वीचोवीच पहुच गयी तो वत्तिया वुझा दी गयी और मीरा अधेरे में ही चलती रही।

सीज़र ने चारो पैरो पर, एक भालू-वच्चे को अपनी पीठ पर लादकर, तार का खेल किया। मादा-रीछ देवोच्का ने ७-८ खेल तार पर किये। खेल खत्म होने पर वडे भालू एक तिरछे वास से फिसल कर मच के पीछे चले गये, और छोटे रीछ पैराशूटो के सहारे नीचे उतर आये। उनके हाथो में गुडिया थी। पैराशूटो को तार से एक मशीन द्वारा नीचे उतारा गया। हा, यहा यह भी वता दू कि यद्यपि दर्शको के लिए तो ये मज़ाके थी, पर थी ये इस खेल का आवश्यक अग। असल मे वात यह थी कि अगर्चे रीछो को रस्सो से वाध दिया गया था फिर भी ये भोले प्राणी वहुत डर रहे थे। डर के मारे ये प्लेटफार्म से ही चिपक गये। केवल इन्हे
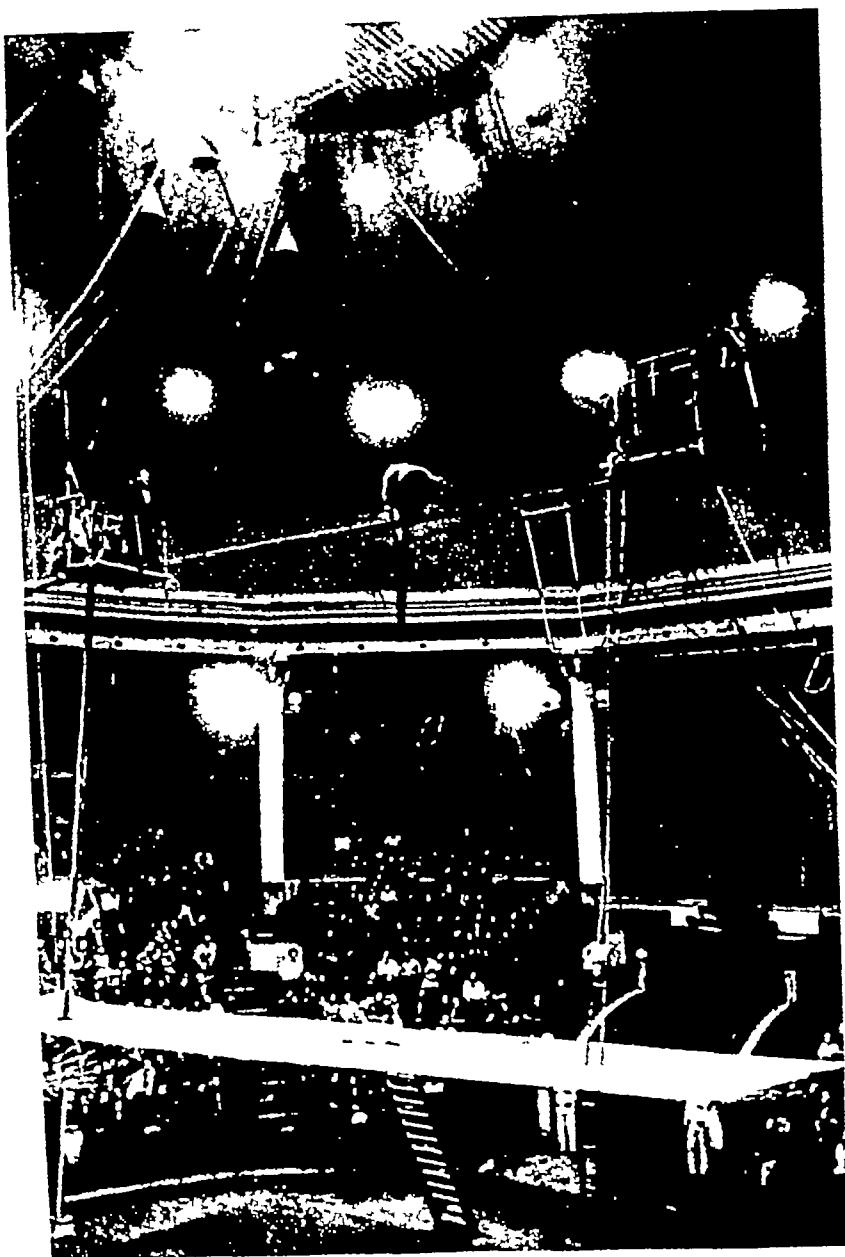
रीछ के करतब

जरा आपकी रोलर स्केटिंग देखिये।

भरोसा देने के लिए ही इनके हाथ मे यह गुडिया थमा दी गयी थी कि "लो यह अपने खेल का इनाम"।

रीछो के स्वभाव आदि का अध्ययन और उनके खेलो के लिए आवश्यक सामान आदि का प्रबध—इन दोनो बातो पर मेरी दृष्टि सदा से ही रही।

यह कठिन कार्य था, क्योकि प्लेटफार्म ७ फुट लबे और ५ फुट चौडे थे और मुझे इनपर ६ भालुओ के साथ खडा होना पडता था। एक दूसरे के साथ मिल-जुलकर काम करना, और तख्तो पर खडे होने की इन्हे आदत डलवाना बडा लाजिमी था। इसलिए प्लेटफार्म पर मै इन्हें एक जत्थे की शकल में ही रखता था। पहले पहल, इनमें काफी तनातनी रहती, मगर मिटाई और फलो की रिश्वत से मै इन्हे शात कर दिया करता। इस ख्याल से कि वे मेरे स्पर्श के भी आदी हो जायें, यदाकदा, मैं उनके नाक, कान, पजे, सिर, छाती, पीठ वगैरह यू ही छू दिया करता था।

अब इन्हें ऊचाई पर खडे होने या करतब करने का भी अभ्यास करना था। अत ओदेस्सा में मै इन्हे एक एक कर सरकस की गैलरी तक ले जाता और इनके पैर अगली सीढी की पटरी पर रख देता। इस प्रकार ये ऊपर से नीचे की ओर देखने के भी आदी हो गये।

सरकस के मच के पीछे मैंने ज़मीन से केवल दो फुट की ऊचाई पर दो समानातर केवलो के द्वारा उनके हर सिरे पर एक एक प्लेटफार्म बनाया। पहले धरती पर करतब कर लेने के बाद मैंने तार पर इनका रिहर्सल शुरू किया।

पत्नी तमारा और ओरेस्तोव, चेवेलो, वोल्गेन्दलेर सहयोगियो के साथ मैं १२–१३ घटे रोज़ काम करता था।

इस सब के बाद ही छत से लटके हुए तारो और तख्तो पर रिहर्सल करने की बारी आयी। पहले, इन्हे बास पर चढकर प्लेटफार्म पर चढना सिखाना था। इस काम के लिए मैंने एक तरकीब सोची। मैंने रिहर्सल के

लिए वास का एक खम्भा खडा किया, और उसपर कीलो से लकडी की पटरिया जड दी, और इस तख्ते पर फल और मिठाइया रख दी। बस, यह प्रलोभन काम कर गया । वे जल्दी ही वास पर चढना सीख गये।

लालच के मारे ये रीछ हर रोज़ दर्जनो दफा वास पर चढते-उतरते। हम धीरे धीरे वास ऊचा करते गये। आखिर में ये ४० फुट की ऊचाई तक चढना सीख गये, और इन्हें इसका पता ही न लगा।

इसी तरह मैने इन्हें तार का खेल भी सिखलाया। हमने धीरे धीरे तार ऊचा किया, और आखिरकार, निश्चित ऊचाई तक पहुचा दिया।

इस काम के करने में जो कठिनाइया, जो मुसीबतें मुझे झेलनी पडी, और जितना मुझे हैरान होना पडा, समझिये मेरे बयान के बाहर है। रीछो को तार पर चलाना सिखाने से पहले हमें खुद उनपर चलना सीखना पडा। कई वार प्लेटफार्म छोडते ही रीछ औंधे गिर पडते थे। फिर तमारा को या मुझे तार पर वही जाकर उन्हे सभालना पडता। कई बार कोई रीछ जान वूझकर वदमाशी करता और फिर कनखियो से मुझे देखता। मैं उसकी ताडना करता। और जैसे ही वह मुझे तार पर कदम रखते देखता, फौरन हुक्म की तामील करने लगता।

जव हमने छत से टगे हुए प्लेटफार्मों और तारो पर रिहर्सल शुरू किया तो शुरू शुरू में मानो रीछो की नानी ही मर गयी। डर के मारे वे तख्तो से ही चिपक जाते, और यदि तख्ते छोडते भी तो छडो से लटक जाते, या हमारे पैरो से ही लिपट जाते। अव इन्हें सिखाने का एक ही तरीका था। तारो पर खुद चलकर इन्हें दिखलाना कि यह कोई कठिन काम नही है। भालू-मडली तख्तो पर वैठ हमें आते जाते देखा करती। हम भी कभी कभी नाम लेकर उन्हें तार पर चलने की दावत दे देते। यह मज़ाक देर तक चलता रहा। तव कही जाकर वे भी तार पर चलने को राज़ी हुए।

शारिक मवमे पहले मैदान मे आया। उसने जोखिम उठाना मजूर कर लिया। तार पर मैं स्वय उल्टा चलता गया, और लगाम पकडकर उमे

आहिस्ता आहिस्ता चलाता गया। हा, मुझे चीनी की रिश्वत जरूर देनी पडी। और जब वह तार पार कर दूसरे प्लेटफार्म पर पहुच गया तो फलो से उसका स्वागत करना पडा। इस प्रकार रीछो को तार के करतब सिखाये गये।

गर्मियो में हमारा खेल कोई ७–८ गज की ऊचाई पर ही होता, क्योकि सरकस के खेमे में स्थान की कमी थी। लेकिन बाद में जब १९५२ में हम मास्को आ गये तब तो वास्तव मे यह खेल हवाई करतब ही हो गये।

जब हमने मास्को में अपना रिहर्सल जारी किया, तो हमे पता चला कि ये रीछ एक बहुत बडी बात भूल गये है। और वह यह कि जब तार पर एक दूसरे के बगल से गुज़रे, तो अपने मन का डर कैसे निकालें। थोडे प्रयोग के बाद ही मैंने देखा कि तुज़िक साहब अब तार पर चलते हुए लडखडाने लगे है और उनके अगले पजे कापने लगे है। मैंने उसे आराम देना ही उचित समझा और तख्ते से नीचे उतार दिया।

नीचे अखाडे में तमारा ने उससे कुछ ब्लॉक का खेल करवाना चाहा, लेकिन चूकि रीछ के पजे इतने काप रहे थे कि उसने सभी ब्लॉक गडबडा दिय। और जब तमारा ने उसे झिडका तो उल्टा वह शैतान गरज पडा।

तमारा ने सारे ब्लॉक फिर टीक-टाक किये, और तुजिक से यह खेल दुबारा करवाना चाहा।

जैसे-तैसे तुज़िक वहा तक गया, और अपने अगले पजे तो उनपर रख दिये, पर पिछले पैर उठाने से नट गया। उसने समझा कि जब तक उसकी टागे कापती रहेंगी, उसमे यह खेल बन न पडेगा।

यह देख तमारा को गुस्सा आ गया। तुज़िक वह खेल भी न करे जो उसे खूब आता था। क्रोध में तमारा ने उसकी गर्दन पर एक हाथ जमाया। भला, एक हाथ से उसका क्या बनता बिगडता? पर, इसपर भी तुज़िक तुनक उठा। "क्या, यह औरत यह भी नही देख सकती कि इस समय मैं यह खेल कर नही सकता, न कि मै नही चाहता।"

सज़ा गलत थी, और गलत थी तो वह क्यो शात रहता? तभी तो उसने गुस्से में आकर तमारा को पकडा और उसका बाया हाथ काट लिया। इसक बाद वडी शान से विजयी की भाति वह चलता वना।

अब हमे रिहर्सल खत्म करना पडा। लेकिन, दूसरे दिन, हमने विचित्र बात देखी कि तुज़िक मन लगा कर खेल सीख रहा है। रह रहकर वह तमारा की ओर ऐसे देखता, जैसे कि पूछता हो "कहिये, आपका गुस्सा ठडा हो गया?" इसपर तमारा हस पडी, और सुलह हो गयी।

अब तो तुज़िक तार पर रिहर्सल को भी तैयार हो गया। मुझे उम्मीद नही थी कि वह कामयाब हो सकेगा, लेकिन मै हैरान हो गया जब मैंने उसे तमारावाले तख्ते से चलकर अपने तख्ते पर खडे ततोशा से मिलने के लिए आते देखा। अभी कल ही तो उसने अपने तख्ते से हिलने से साफ साफ इन्कार कर दिया था।

यहा मै कुछ कठिनाइयो की भी चर्चा कर दू। एक वडे रीछ को नकेल से पकडकर तार पर चलवाने का काम ततोशा को सौपा गया। पर, पहली मुलाकात में ही दोनो एक दूसरे को नफरत करने लगे। यह नफरत खेलो के समय तक जारी रही।

वडा भाई 'समझता' कि उसके दुखो का कारण छोटा भाई है। उसे इस खेल से घृणा हो गयी। अत जव कभी उसका दाव लगता, वह छुटभैये को रस्से पर से धक्का मार नीचे गिरा देता। ततोशा को भी यह खेल पसद नही था। भारी भरकम वडे भैया तार को इतनी ज़ोर से हिला देते कि छोटे साहव के लिए तार पर सधा रहना कठिन हो जाता। सिवाय गुर्राने के ततोशा करता ही क्या? जव मैंने तुज़िक का पट्टा उतार दिया, तो मेरा यार ख़ुशी ख़ुशी तार पर चलकर दूसरी ओर पहुच गया। वह अपने 'दुश्मन' साथी की गुलामी से मुक्त हो चुका था। ठीक यही वात दूसरी जोडी के साथ हुई।

मीरा हमारी मुख्य अभिनेत्री थी। वह भालू-बच्ची कापल्य को पीठ पर चढाकर अपने पिछले पैरो के सहारे तार पार कर जाया करती। बच्चा उसकी पीठ पर बेचैनी से हिलता-डुलता। इस कारण मीरा का काम और कठिन हो जाता। साथ ही दो रीछो के भार से तार भी ढीला हो जाता और मीरा के काम में और बाधा पड जाती।

ग्राइफ नाम का रीछ बडा ही कायर था। इसे प्लेटफार्म से नीचे उतरते समय इतना डर लगता कि यह अपनी आखो पर पजे रख लेता। अत जब कभी खेल के बाद इसे नीचे उतारा जाता तो मै हमेशा कहता "बेटा, ग्राइफ! आखें बद कर लो, अब तुम नीचे ले जाये जा रहे हो। कही डर न जाना!" और ग्राइफ भी झट आखें बद कर लेता, जैसे कि वह मेरी नसीहत पर अमल कर रहा हो। दर्शक इस बात का बडा मज़ा लेते।

एक दिन ग्राइफ अचानक ही प्लेटफार्म से लुढककर जाल में जा गिरा। पर, घबराया बिल्कुल नही। शाति से उसने ऊपर को देखा, और फिर वह बास के सहारे प्लेटफार्म पर पहुच गया। उस दिन की घटना से वह तनिक भी विचलित नही हुआ। इसके उल्टे अब तो वह इतना बहादुर हो गया कि यदि कभी प्लेटफार्म उसके साथियो से खचाखच भरा होता, तो भी वह किनारे पर खडे होने या बैठने मे ज़रा भी सकोच न करता।

रीछ के बच्चे कोकोशा के साथ दूसरा ही मामला हुआ। एक बार प्लेटफार्म पर से जाल मे गिरने के बाद वह इतना डर गया कि हम उसे हवाई खेलो में कभी शामिल न कर सके। पर, उसे कुश्ती का शौकीन देखकर, मैंने उसे कुश्तीगीरी मे ताक करने का निश्चय किया। बात भी ठीक थी, क्योकि वह मृदु और स्नेही स्वभाव का था।

मेरा अनुमान ठीक निकला। कोकोशा शीघ्र ही मल्लयुद्ध में निपुण हो गया। उस समय मै कज़ान में सरकस कर रहा था कि एक खानाबदोशो का सरकस भी वहा आया। इस सरकस के अध्यक्ष, ब्रेस्लेर ने मुझे बताया कि इन्हें अपने नये प्रोग्राम के लिए एक पहलवान रीछ चाहिए। मैंने दूसरे

ही दिन प्यारे कोकोशा को इनके हवाले कर दिया। आज भी वह अपनी पहलवानी के लिए प्रसिद्ध है। हाल में ही उसने 'वीरो का अखाडा' नाम की फिल्म में पार्ट अदा किया है।

सरकस के जानवरो के साथ भी दुर्घटनाए होती रहती है। उदाहरण के लिए, हम रीगा मे थे, कि रखवालो की गफलत के कारण ग्राइफ के अगले पजे पर एक छड आ गिरी, और उसके पजे की हड्डी टूट गयी।

उसे अस्पताल ले जाया गया। यहा उसका इलाज होता रहा। तमारा, मै और रखवाले उसकी दिन-रात तीमारदारी करते रहे। ग्राइफ को पट्टी पसन्द नही थी, और उसने कई बार पट्टी दातो से चीरने की कोशिश भी की। खैर, वाद में वह इस पट्टी का आदी हो गया। तीन सप्ताह वाद वह चगा होकर 'ड्यूटी' पर हाजिर हो गया। फिर भी कुछ समय के लिए वह इतना सावधान रहता कि पजा धरती पर ही न रखता। वाद मे, यह भी भूल गया कि वह कौन-सा पजा था, जिसकी खातिर वह और हम इतने परेशान रहे थ।

१९४७ की अक्तूबर क्राति-जयती के समय मेरे खेल तय हुए, परन्तु मेरा रीछो का शो, निश्चित तिथि से पहले ही रख दिया गया। मैंने प्रोग्राम में कोई काट-छाट नही की, उल्टे कई नये करतव इसमे शामिल कर दिये। इनमे से एक करतव यह था कि एक रीछ आखो पर पट्टी वाधकर तार पर चलता और कलावाजिया खाता था।

६ नववर, १९४७ का दिन मेरे लिए अविस्मरणीय रहेगा, क्योकि इसी दिन मैंने सर्वप्रथम ओदेस्सा मे भूरे रीछो का शो किया था। यह कई मास की कठोर तपस्या का सुखद परिणाम था।

यह खेल मनोरजक रहा, और साथ ही कला और टैकनीक की दृष्टि मे भी विशेष। भूरे रीछो से प्रथम वार ही मुझे वडा सतोष मिला। आज जव मै इस प्रश्न पर विचार करता हू तो मुझे लगता है कि शेरो, चीतो, तेदुओ और सफेद रीछो की अपेक्षा भूरा रीछ सरकस के काम के

लिए अधिक उपयुक्त है। 'रीछ की मानिद भौडा-भदभद' यह उपमा, कम से कम मेरे रीछो ने तो झुठला ही दी है। तार के करतब इन्सानो के लिए भी मुश्किल है, पर मेरे यह रीछ खुशी खुशी कठिन से कठिन करतब किया करते। मिसाल की तौर पर, शारिक मिया, पिछली टागो के बल तार पर चलते और हार्मोनियम 'बजाते'। इसी समय रेडियो से सर्वप्रिय धुनें गूजती।

मैंने इस खेल का रिहर्सल इस प्रकार किया। शारिक के लिए एक आराम-कुर्सी बनवायी, जिसपर उसे बैठना और बैठकर हार्मोनियम पकडना सिखाया गया। रबड के दो छल्लो से हार्मोनियम उसके पजो में सधा हुआ था। एक ओर, भालू हार्मोनियम फैलाता, तो दूसरी ओर अदर के रबड से वह सिकुड जाता। रीछ को यह देखकर बहुत क्रोध आता, और वह उसे खीचने में पूरी ताकत लगा देता। बस, उसमें यही प्रतिक्रिया, उत्पन्न करना मेरा ध्येय था। प्रयोग सफल रहा, और जनता को बहुत भाया।

रीछो की सहज बुद्धि और उनकी भावप्रवणता से मैं स्वय भी कई बार स्तभित रह गया। एक घटना सुनिये।

खेल शुरू होने से पहले हम रीछो को दरवाज़े के बाहर थोडी देर के लिए बाध दिया करते। उनके अखाडे में आने से पहले तमारा और मैं रीछो से थोडी हसी दिल्लगी करते। हम प्राय उन्हें शक्कर की डलिया देते। एक शाम की बात है, तमारा ने मीरा को चीनी की केवल एक ही डली दी, और फिर वह दूसरो को खिलाने में लग गयी। मीरा को लगा कि उस जैसी महान खिलाडी को एक डली देना शान से गिरी हुई चीज़ है। बस, झट उसने तमारा की टागें पकड ली और तमारा से दूसरी डली देते ही बनी। तमारा ने यह सोचकर कि मीरा बददिमाग हो गयी है, उसका मिज़ाज दुरुस्त करने के लिए एक चाटा रसीद किया, और उसे भला बुरा भी कहा। मीरा ने मुह फुला लिया।

इस चीनी-काड का परिणाम यह निकला कि उस सायकाल मीरा खेल मे बिल्कुल न जम पायी। उसका मन उचाट-सा रहा। दूसरे दिन प्रात काल जब मै रिहर्सल के लिए आया तो रखवाले ने मुझे बतलाया कि मीरा तो बीमार पड गयी है। वास्तव में, वह एक कोने मे बैठी बडी गमगीन और उदास लग रही थी। जब मैंने उसे कटघरे से बाहर निकाला, तो वह इतनी अन्यमनस्क रही थी कि उसने मुझसे चीनी की डली भी न ली। तब मुझे ख्याल आया कि असल में कल से मीरा तमारा से रूठी हुई है। मैंने तमारा से कहा कि वह प्यार-दुलार और मीठे बोलो से मीरा को खुश करने की कोशिश करे ।

तमारा ने जब पश्चात्तापपूर्ण स्वर में उससे बतियाना शुरू किया तो वह झट प्रसन्न हो गयी, और बस, पिछले झगडे सब रफा-दफा हो गये। उस दिन रिहर्सल के समय मीरा जी बडी प्रसन्न और पुलकित लग रही थी।

जब हमारा हवाई खेल का प्रोग्राम तैयार हो गया तो मैंने रीछो को और भी नये नये खेल सिखलाने शुरू किये। तुज़िक और कापल्या अपने अगले पजो के बल बडे हौसले और भरोसे से चल सकते थे। और मैंने उनकी इस क्षमता से लाभ उठाया।

अखाडे में चार-चार इच ऊचे दो पायदान रख दिये गये, और दो दो इच ऊचे पाच ब्लॉक उन दोनो पर चुन दिये गये। रीछो से इसपर हाथ की कसरत करायी गयी। उन्होंने एक एक कर पजे से सारे ब्लॉक गिरा दिये।

जब सारे ब्लॉक पायदानो से गिरा दिये गये, तो रीछ अपने पिछले पैरो पर खडे हो कर, इनाम की चीनी की डलिया गटकने लगे, और फिर अपने अपने कटघरो को चले गये।

इस कठिन करतब को करने के लिए मैंने रिहर्सल इस प्रकार किया। पहले, हमने हर एक पायदान पर एक एक ब्लॉक रखा। अब तमारा और मेरे सहायक ने रीछ के अगले पजे उनपर रख दिये। रीछ ने ब्लॉको को

हिलते-डुलते देखकर उनपर अपने पंजे जमाने की कोशिश की, लेकिन हमने उसे ऐसा करने नही दिया। ज्यू ज्यू रीछ का हौसला बढता गया, हम ब्लॉको की सख्या बढाते गये। अब हम रीछ के पजो के बजाय इन ब्लॉको को हाथो से सभालते, कि कही रीछ इन्हें गिरा न दे।

बहुत समय बाद तुजिक और कापल्या ने यह समझ लिया कि यदि वे अपने पजे कायदे से न जमायेगे तो गिर पडेंगे। साथ ही आवश्यक था कि रीछ एक एककर ब्लॉक गिराना भी सीखते।

पहले तमारा सबसे ऊपर के ब्लॉक को हटा लेती और फिर हमारा असिस्टेंट। और मै रीछ के उस पजे को छू देता जिससे उसे ब्लॉक को हटाना होता। शुरू शुरू में रीछ यह काम सहायक की सहायता के बिना न कर सके।

यह दोनो रीछ परिश्रमी जीव थे। इसलिए वे यह खेल जल्दी ही सीख गये। आगे चलकर मेरे सहायको को उन ब्लॉको को पकडने की आवश्यकता न रही। वे केवल उन्हें जरूरत के वक्त मदद देने के लिए पास खडे रहते। लेकिन तुजिक महाशय को न जाने क्यो यह बात पसद न आयी। वह सहायको पर गुर्राता, मानो उनसे यह कहना चाहता हो कि देखो, मेरे सामने से हट जाओ। लेकिन यदि उससे वह ब्लॉक गिर पडते, और असिस्टेंट समय से उसकी सहायता न करता तो वह झट पिछली टागो के बल खडा हो जाता, और उस बेचारे पर हाथ उठा देता। तार पर हवाई करतब दिखलाने के बाद तुजिक और कापल्या ने यह तमाशा किया।

कापल्या अभी बच्ची ही थी—विनम्र, आज्ञाकारी, और भीरु। यदि वह अकेली रह जाती, तो तरह तरह की मुद्राए बनाकर अपनी व्यग्रता प्रदर्शित करती। मेरे पास आते ही वह शात हो जाती, मेरी गोद में कूद पडती और चाहती कि मै उसे प्यार से थपथपाऊ।

मैने उसे एक श्रेष्ठ कलाबाज बनाने का निश्चय किया। मेरा असिस्टेंट, वोलोन्दलेर स्वय एक निपुण कलाबाज़ था। उसने इस काम में मेरी बडी सहायता की।

पहला खेल जो हमने उसे सिखाने का फैसला किया, वह था मेरे सहायक के हाथो पर अपने-आपको साधना, और कसरत करना। वोल्गोन्दलेर अपनी पीठ के बल लेट गया। मैंने कापल्या को सभाला और तमारा ने उसके अगले पजे वोल्गोन्दलेर की उल्टी हथेलियो पर रख दिये। फिर मैंने उसके पिछले पजो को छू दिया। छूने का मतलब था उसे उन्हे ऊपर उठाने का सकेत देना। उसने वैसा ही किया, और तमारा और मै उसे पीछे से सभाले रहे ताकि वह गिरे नही। इस काम के लिए हमे काफी रिहर्सल करने पडे। जब कापल्या हाथ का करतब कर चुकी तो वोल्गोन्दलेर ने अपने हाथ नीचे कर लिये, और अब कापल्या के पिछले पजे उसकी छाती पर आ लगे।

फिर कापल्या को साधे हुए वोल्गोन्दलेर उठकर खडा हो गया। मैंने स्पर्श-सकेत दिये कि कापल्या उसके कधो तक उठ जाय। उसका डर छुटाने के लिए मैंने तमारा को वोल्गोन्दलेर के निकट ही एक स्टूल पर खडे हो जाने को कहा। वह कापल्या से ऊची लग रही थी। अपनी सखी को पास खडा देखकर उसके मन का सारा भय जाता रहा।

तब वोल्गोन्दलेर ने कापल्या के अगले पजे अपने सिर पर जमाने में उसकी सहायता की। उसने अपने सिर पर एक चपटा कडा टोप पहन लिया। इतना करने के बाद वोल्गोन्दलेर ने उसके पजे कसकर पकड लिये और मैंने उसके पिछले पजे छूये। कापल्या 'हाथो' के बल खडी हो गयी। हा, उसे तमारा की सहायता की आवश्यकता अवश्य पडी। हम इस करतब का रिहर्सल कई दिन लगातार करते रहे, और आखिरकार कापल्या इस करतब को तमारा की सहायता के बिना ही करने में सफल हो गयी।

इसी क्रम मे दूसरा खेल यह था। वोल्गोन्दलेर खडा हो, और कापल्या यही हाथ की कलाबाज़ी उसके हाथो पर करे। मै कापल्या को नकेल से सभाले हुए था। वोल्गोन्दलेर ने अपने हाथ उठाये और कापल्या को इशारा किया कि वह अपने अगले पजे उनपर रख दे। यह तो उसके लिए जाना

हुआ काम था। जब कापल्या अपने साथी की पीठ पर चढने का यत्न कर रही थी तो मैंने देखा कि वह किसी चीज़ पर पैर रखकर चढना चाहती है। मैंने झट वोल्गोन्दलेर से अपनी दाईं टाग पीछे कर देने को कहा। कापल्या टाग और मेरा सहारा लेकर झट वोल्गोन्दलेर की पीठ पर चढ गयी। आगे का काम उसे पता था। अब वह पहले से ऊची थी, और इसलिए कुछ अधिक सहमी हुई भी। पर हाथ भी वही थे, और मेरे सकेत भी वही थे। नतीजा यह हुआ कि थोडे ही दिनो मे कापल्या बडी अच्छी कलावाज़ बन गयी।

जब वह करतब करके उतरी तो उसे शाबाशी और चीनी इनाम में मिली। अब तो वह शौकीन कलावाज़ हो गयी। जितनी बार कहें, अपने खेल दिखा देती। थोडी देर का कष्ट और भय, और फिर कितना बडा पुरस्कार एव सद्परिणाम – मिठाई, लाड-प्यार, और लबा आराम! और फिर डर भी काहे का। हम तो सदा उसके पास खडे रहते थे। भला वह गिरती भी कैसे और क्यो?

इस लबी और कष्टसाध्य शिक्षा के बाद इसी खेल में एक छोटा नया ट्रिक भी शामिल कर दिया गया – यानी एक रीछ और एक आदमी का मिला-जुला खेल।

कापल्या ने अपना पार्ट अच्छी तरह याद कर लिया। अब उसे अपने साथी के कधे पर चढने के लिए किसी की सहायता की अपेक्षा न रही। बल्कि, यू कहना चाहिए कि यह कार्य बिल्कुल मनुष्य की ही तरह चुस्ती से करती थी।

मलीश आलसी स्वभाव का था। साथ ही यह बदसूरत और कमज़ोर भी था। तमारा उसका बडा ख्याल करती। वह उससे खेलती, उसे दुलराती, पुचकारती, गर्चे कि हर तरह से उसे खुश रखने का प्रयत्न करती। उसकी देख-रेख का परिणाम यह हुआ कि अब वह सुन्दर रोएवाला मज़बूत पट्ठा हो गया। पर, काम से वह भी जी चुराता। उसे तमारा से बडा स्नेह हो गया था, क्योकि वह सदा उसकी सहायता और तरफदारी करने को तैयार

रहती। अभी तो उसे केवल एक ही करतब आता था मीरा के कधो पर सवार होकर एक प्लेटफार्म से दूसरे प्लेटफार्म की सैर करते रहना। खाली समय मे वह प्लेटफार्म पर बैठकर कोई न कोई शरारत करता रहता। कभी तमारा की टाग घसीटता, कभी उसपर सवारी गाठने की कोशिश करता, या कभी चीनी चुराता, बस इन्ही कामो मे वह अपना समय बिताता।

अब जब वह बडा हो गया, और मीरा पर चढ़ी न गठ सका, तो वह अवारा हो गया। तार पर इधर-उधर डोलने और साथियो के काम मे टाग अडाने के सिवा अब उसे और कोई काम न था। तग आकर मैं उसे पिजडे मे बद कर देता। जल्दी ही मैंने उसे रोलर स्केट्स पर चलना सिखाने की बात सोची।

मैंने स्केटिग-बूटो का एक जोडा खरीदा। रीछ के पजो के लिए मैंने बूटो का अगला हिस्सा खोलकर उनमे रोलर स्केट्स फिट कर दिये। पहले पहल जब उसे कुर्सी पर बैठा, हमने उसके पैरो में रोलर स्केट्स बाधे, तो वह बडा हैरान हुआ हमें देखने लगा। पर, तमारा ने झट प्यार और शक्कर की डली से उसका भय दूर कर दिया।

बूटो के तस्मे कसने के बाद तमारा ने उसका एक पजा पकड लिया, और मैंने दूसरा। अब हमने उसे खडा करके चलाना चाहा, पर, रोलर स्केट्स तो इधर-उधर फिसलने लगे। मलीश ने अपने पैरो को जमाने का यत्न किया, पर अपने को इसमे असफल पाकर ज़मीन पर बैठना चाहा। लेकिन हम उसे पजो से पकडे रहे, और हमारे साथी उसके पिछले पजे सभाले रहे। इसके बाद हमने उसके पिछले पजो पर से अपने हाथ धीरे से हटा लिये। हम यह चाहते थे कि उसे रोलर स्केट्स पर अपने आप खडा होना आ जाय।

पहले रिहर्सल में हमने सिर्फ इतना ही किया। हम उसे बूट पहनाते-उतारते कि वह रोलर स्केट्स का आदी हो जाय, और भडके नहीं। जब उसकी पिछली टागे थक जाती तो हम उसे आराम-कुर्सी पर बैठा देते।

तब हम उसे रोलर स्केट्स पहनाकर सरकस के सीमेंटवाले फर्श पर सैर कराने लगे। तमारा और मै उसके अगले पजे पकडे रहते, और मेरे सहायक उसके पिछले पजो को धकेलने की कोशिश करते। हमारी कोशिश यही रहती कि उसे किसी न किसी तरह यह समझ मे आ जाय कि रोलरो के साथ उसे खुद ही कदम बढाने होगे। यह खेल उसे सिखाते सिखाते तमारा को भी रोलर स्केट्स पर दौडना आ गया। बस, अब तो दोनो एक दूसरे का हाथ पकडकर साथ साथ स्केटिग करते।

एक दिन तमारा कुर्सी से ठोकर खा गयी और मलीश का पजा उसके हाथ से छूट गया। अगर्चे वह अपने पैरो पर खडा रह सकता था, पर मलीश भी गिर गया। मज़े की बात तो यह थी कि वह इस इतजार में था कि कब तमारा उठे, और उसका हाथ पकडकर उसे उठाये। वाकई, यह भी देखने लायक सीन था।

मलीश ने इस खेल को जल्दी ही सीख लिया। अब वह अकेला रोलर स्केट्स पर दौडने लगा।

जब यह हवाई खेल खत्म हो जाते, तो मैं उसे नकेल से पकडकर दर्शक गैलरी और बाडे के बीच सैर कराता। वैसे मलीश एक शात स्वभाव का पशु था, परन्तु यदि वह किसी दर्शक के हाथ मे मिठाई, सेब या ऐसी कोई चीज़ देख लेता तो उसे धमकाने से बाज़ न आता। यह उस आदमी के घुटनो पर अपने पजे रखकर खडा हो जाता, और थूथनी से उस चीज़ को सूघने-साघने लगता। लेकिन मेरा इशारा पाते ही वह तुरन्त उसे छोड अपनी सैर शुरु कर देता। कई बार वह झपट्टा मारता और लपक कर सेब या मिठाई अपने मुह में रख लेता। वह खूब समझता था कि खेल के बाद वह अपनी आराम-कुर्सी पर लेटेगा और इन चीज़ो का जी भर मजा लेगा।

एक बार जब मीरा बीमार पड गयी, तो मैने मलीश से मीरा का पार्ट अदा करवाना चाहा। जल्दी ही यह जाहिर हो गया कि पहले का

आलसी जीव अब होनहार खिलाडी बन गया है। बडी जल्दी ही उसने मीरा के सब करतब सीख लिये—वह बडी आसानी से एक रीछ का बच्चा अपने कधो पर लाद लेता। और आखो पर पट्टी बाधकर तार पर चल लेता। यद्यपि वह पूरे साल भर से हवाई खेल में नही लाया गया था, फिर भी वह अपनी पुरानी शरारते नही भूला। तमारा को दूसरे प्लेटफार्म पर देखते ही वह मिठाई लेने उसके पास दौड जाता। कई बार तो उसने मेरी आख चुराकर मिठाई हडप ली।

१९४७ से १९५१ तक लगातार मीरा ने हवाई खेल मे भाग लिया था। वह बडी बलिष्ट और बडे विनम्र स्वभाव की थी, इसलिए मैंने भी उससे अधिक से अधिक और कठिन से कठिन काम लिया। वह हर एक काम बडी सावधानी से करती। मुझे सदेह था कि वह थोडी डरपोक थी, पर यह मै अवश्य कहूगा कि उसने बहुत लगन से अपने मन का डर निकाला।

एक दिन सायकाल को काम के पश्चात् जब रीछो को खुराक दी जा रही थी, मीरा को अचानक गश आ गया। जल के छीटो के बाद धीरे धीरे उसे होश आया। जब उसने आखे खोली तो वह मेरी पहचान मे न आयी। उसकी आखें हरी और ठस हो गयी थी और उनकी चमक बहुत कम हो गयी थी। जब मैंने उसे धीरे से पुकारा तो उसने सुनी अनसुनी कर दी। खैर, थोडी देर मे वह पूरी तरह होश में आ गयी, और उसने अपना खाना खत्म किया, और ज्यो की त्यो हो गयी।

कुछ दिनो के बाद उसे फिर दौरा पड गया। बुरी बात यह हुई कि ऐसे दौरे उसे बार बार पडने लगे। यह सोचकर कि यदि कही हवाई करतब के वक्त ऐसा दौरा पड गया, तो बुरी बात होगी, मैंने मीरा से यह काम लेना ही छोड दिया। दो मास के पश्चात् उसे दौरे पडने बद हो गये। खैर, अब उसे काम करने की ज़रूरत न रही, क्योंकि मनीश साहब उसकी जगह बखूबी काम कर रहे थे। वैसे भी मैंने सोचा कि

इतने कठोर श्रम के कारण उसका शरीर और मन थक गया है। इसलिए, उसे थोडा आराम देना चाहिए।

रिहर्सल के दौरान में हम तारो का इस्तेमाल करते थे, क्योकि गिरने से जानवर को कडी चोट आ सकती थी। रस्सो या तारो की सहायता से रीछ अपने को आसानी से साध सकते थे।

सायकाल खेल के समय यदि हम उनकी आवश्यकता न समझते, हम इन्हे हटा देते। कई बार ऐसा भी हुआ कि यद्यपि रीछ अपने करतब अच्छी तरह जानता, फिर भी तार के बिना वह अपने ऊपर भरोसा न रख पाता। मैने एक उस्तादी शुरू की। जब मै रीछ की कमर में तार बाधता तो एक खास आवाज होती। जब रीछ इस आवाज़ को सुनते तो उन्हे इतमीनान हो जाता कि अब खतरे की कही कोई बात नही है, और वे बेधडक खेल शुरू कर सकते है। मै जब कभी आवश्यक न समझता, तो झूठ झूठ की वैसी ही आवाज़ कर देता, और रीछ राम यह समझकर कि उसकी पेटी से तार तो बधा ही हुआ है, धडल्ले से अपने करतब शुरू कर देते।

एक बार हार्मोनियम-वादक शारिक फिसल पडा और गिर गया। किसी तरह उसने अगले पजो से तार पकड लिया। उसके अगले पजो में हार्मोनियम सधा हुआ था। अब लटके लटके वह बेबस होकर मेरी ओर देखने लगा, जैसे कि वह मेरी मदद माग रहा हो। मै उसे बचाने के लिए दौड पडा। मुझे अपनी ओर आता देख उसने पिछले पजे भी उठा लिये, और उनसे भी तार पकड लिया। हार्मोनियम की वजह से वह खुद ऊपर न चढ सकता था। इसलिए मेरी राह देख रहा था।

मैंने हार्मोनियम उससे ले ली और तुरन्त सुरक्षा जाल में डाल दी। फिर मैने शारिक की गर्दन पकडी और उसे ऊपर घसीटने की कोशिश की। मुझसे यह काम बन न पडा। मामूली-से दो तारो के सहारे पूरे साढे चार मन के रीछ को ऊपर खीचना कोई आसान काम तो था नही

मैंने उसे धीरे धीरे तमारा के प्लेटफार्म की ओर ढकेलना शुरू किया, यह मुश्किल से दो तीन गज के फासले पर था। थोडा थोडा करके शारिक भी उस तरफ बढने लगा। अब सबसे कठिन काम था तख्ते पर चढना। खैर, तमारा और मैंने उसे मदद दी। प्लेटफार्म के तख्ते पर पहुचते ही, उसने सिर हिलाकर जोर से 'ऊफ' की आवाज़ निकाली। दर्शकगण हस पडे, पर उसके लिए यह कोई मजाक का मामला न था। बडी देर तक वह प्लेटफार्म पर बैठा बैठा नीचे की ओर ताकता रहा। शायद वह यह सोच रहा था कि अगर मुझे बचाया न जाता, तो पता नही क्या होता।

रीछो के खेल का एक झमेला यह था कि हमे आए साल बच्चो के नये जोडे की ज़रूरत होती थी। एक कलाबाजी के लिए और दूसरा तार का करतव करनेवाले बडे रीछ के कधो पर सवार होने के लिए।

एक छोटी बच्ची को हमने दीवचिना का नाम दे दिया। यह कलाबाज़ी करने में बडी चतुर थी। पर, एक बार कलाबाज़ी करते करते उसका सिर प्लेटफार्म के किनारे से टकरा गया। उसके बाद तो वह हमेशा सावधान रहती और सदा यह देख लिया करती कि उसकी कलाबाजी के लिए काफी जगह है या नही। अगर कभी उसे सदेह हो जाता, तो वह उठती, तार के मध्य भाग की ओर कुछ कदम बढती, और देखती कि उसका सिर तो नही टकरायेगा। तभी वह आखिरी कलैया खाती।

तार पर दो रीछो के एक साथ मिलने के लिए यह लाज़िमी था कि उनमें से एक को तार पर लेटना सिखलाया जाय, ताकि दूसरा कदम रख सके। नही तो दोनो में या तो मुठभेड हो जाती या फिर एक को ही पीछे लौटना पडता। पहले मैंने तार को डेढ गज़ नीचे झुकाया, और फिर तमारा और रीछ को इसपर चढाकर कठिनाई हल की। जब तमारा और रीछ आमने-सामने से आते तो तमारा रास्ता रोककर खडी हो गयी और मैंने रीछ को लेट जाने का हुक्म किया। चीनी की रिश्वत देकर मैं उसका रुख

स्कीइग मुलाहज़ा हो

तमारा एदर श्रौर लास्का

ज़ेबरा, शुतुरमुर्ग़ और हाथी

जब सन् १६४५ में मै चीतो को ट्रेनिग दे रहा था, तभी मैने निश्चय कर लिया कि मै जेबरे और शुतुर्मुर्गों को सधाने का प्रयत्न करूगा। यह विचार मुख्यत मुझे इसलिए भाया कि सोवियत सरकस जगत मे यह काम अपने ढग का अनूठा था।

मैने एक ज़ेबरा और दो शुतुर्मुर्ग लेकर श्रीगणेश किया। लास्का नाम की ज़ेबरा-मादा चिडियाघर से आयी थी, और स्वभाव से वडी भडकीली थी। आरभ मे तो यह मुझे मालिश तक के लिए हाथ न लगाने देती। मैने उसे छुआ नही कि वह उचककर एक कोने में खड़ी हो जाती, और वही खडी खडी मुझे सहमी हुई आखो से देखती रहती। पर, आखिर, गाजर और शक्कर की रिश्वत अपना काम कर ही गयी। धीरे धीरे उसने मनुष्यो से डरना छोड दिया। अव यदि किसी को वह आते देखती, तो चट अपने वाडे में से मुह निकालकर देखने लगती, मानो सुस्वादु भोज्यो की प्रतीक्षा में पहले से ही खडी हो। अव वह हमसे हिल ही न गयी थी, वल्कि अपने नाखून तक कटवा लेती और खुर साफ करवा लेती। थोडे समय मे ही वह सरकस के लायक भी वन गयी।

वे दोनो शुतुर्मुर्ग भी चिडियाघर से ही आये थे। मै उनके वाडे मे चला जाता, पर कभी कभी वे मुझपर चोच या लात मारते। मैने उनकी इन हरकतो पर भी कावू पा लिया। कैसे? यह आगे चलकर वताऊगा।

जब लास्का खेल दिखाने लगी तब मैने एक ज़ेबरा और दो शुतुर्मुर्ग और मगा लिये। एक दिन जब मुझे पता लगा कि वे स्टेशन पर आ गये है, तो मै दौडा दौडा वहा गया। पर, मेरे आश्चर्य का ठिकाना ही न रहा, जब मैने इस नये जेबरे को लास्का से बिल्कुल अलग पाया। इसे तो मानसगध तक से घृणा थी। इसका नाम अगस्त था। मुझे देखते ही, उसने कान दबा लिये, अजब ढग से हिनहिलाया और डिब्बे की दीवारो को ही लताडने लगा। उसकी आखो से खून बरस रहा था।

फिर भी जैसे-तैसे मै उसे कटघरे में बदकर लॉरी मे लदवाकर अपने सरकस में ले आया। सरकस मे जैसे ही उसके कटघरे को खोला गया, तो वैसे ही वह झपटकर नये घर में दाखिल हुआ और उसने ऊपर तख्तो में दात गडा दिये। लाचार होकर मुझे उसके कटघरे के दरवाज़े को चीते के जगले से बद करना पडा। मै समझ गया कि यह अगस्त शातिप्रिय पशु नही, बल्कि निरा जगली जानवर है।

मै, तमारा और मेरा साथी त० चेवेल्ला हर रोज़ उसके कटघरे के आगे खडे होते और उससे परिचय बढाते। पशु अगस्त हमसे बिल्कुल विरक्त रहते। उसे तो हमारी सूरते काटती, हम तीनो को तीन ओर से ताकते हुए देखकर, उसने चौथी दीवार मे अपना सिर दे मारा, लगा दुलत्ती झाडने और भयानक ढग से हिनहिनाने। जैसे-तैसे जगले के नीचे से दाना-पानी पहुचाया गया। अगस्त ने पानी पिया और बाल्टी तोड दी। यह रियाज उन्होने कई बार माजा। यही हाल तसले का भी हुआ। जई और गाजर खाकर, तसला दातो से उठाता, और दीवार पर दे मारता। आगे से हम यह करते कि जैसे ही वह अपना दाना-पानी खत्म करता, हम तुरत ही तसला और पानी का बरतन अदर से निकलवा लिया करते।

उसके दिल को जीतन मे हमें एक मास लग गया, तो अभी भी उसमे जगलीपन मौजूद था। अब हमने एक बात नोट की कि यदि हम लास्का या शुतुर्मुर्गो के साथ रिहर्सल करते और निश्चित समय पर उसके कटघरे के

पास न पहुचते, तो वह कुत्ते की तरह आवाज़ करता, और दरवाज़े की ओर टकटकी बाधकर देखता रहता, मानो उसे हमारे विना सूना सूना सा लग रहा हो। इसके अलावा यदि हम लास्का या शुतुर्मुर्ग के कटघरे तक जाते और उसकी ओर ध्यान न देते तो वह जगले पर सिर रखकर बुरी तरह ताकता रहता।

दो मास व्यतीत हो जाने पर अगस्त महाराज हमारी गाजर की भेंट स्वीकार करने लगे। उसे, लास्का की भाति गाजर के टुकडे भर से सतोष न होता, वह तो हमारा हाथ तक खाने पर उतारू हो जाता। इस लिए हम उसे लबी लबी और साबित गाजर देते। अब हम उसकी पीठ या गर्दन थपथपाने लगे। लेकिन यदि किसी ने कही उसका सिर छू दिया तो वह झट चीख़ पडता, दात निकाल देता और उछलकर दूर हट जाता। मैं तो इससे यही अदाजा लगा सका कि हो न हो, कभी न कभी अगस्त के सिर को चोट पहुची है। बाद में, जब उसका बिदकना पहले से कम हो गया, तो मैंने उसकी बाईं आख में पतला-सा रोहा देखा। हो सकता है यह चोट लगने का परिणाम हो।

आख़िरकार, वह दिन भी आ गया जब अगस्त के मुह में लगाम कस दी गयी, और वह मैदान मे ले आया गया। हम चार आदमी उसे बाहर लाये। तमारा लास्का को ला रही थी।

जब अगस्त को पहली बार सरकस मे लाया गया, तो मैं रस्से को पकडे अखाडे के बीच में खडा हुआ था। मेरा असिस्टेंट रस्सी का दूसरा छोर साधे घेरे के उस पार। ज़िद्दी अगस्त ने लास्का को देखा। वह शात घेरे के पास पास चल रही थी। यह जानकर कि अब वह बधन में था, उसने उछलना-कूदना, और दुलत्ती चलाना शुरू कर दिया। हिनहिनाते हुए वह अखाडे म लोट लगाने लगा। उसकी टागें हवा मे बातें करने लगी। यह देखकर हमने लास्का को फौरन वहा से हटा दिया। हमे डर था कि गुस्से में अगस्त महाराज बेचारी लास्का की हत्या ही न कर बैठें।

हमने रस्सिया ढीली कर दी, और अगस्त को अपना गुस्सा निकालने की पूरी छूट दे दी। इस बीच मीठे शब्दो से हम उसे पटाने की कोशिश करते रहे। यह समझकर कि अब वह पूरी तरह आज़ाद है, अगस्त ठडा हो गया, उठा और वह कभी मुझे देखता, और कभी लगाम से बधी, लबी रस्सी को देखता। पर, अचानक ही उसने मेरी तरफ पीठ की, और दुलत्तिया झाडनी शुरू कर दी। मै इधर-उधर दौडने लगा, और वह मेरा पीछा करने लगा। हारकर मुझे हटर सभालना पडा।

उसका यह व्यवहार बहुत दिनो तक चला। पर, अत मे हम उसे भी लास्का की तरह भद्र बनाने मे सफल हो गये।

अब वह हमें दुलारने, थपथपाने देता, सफाई-मालिश वगैरह भी करा लेता, पर अब भी अपने खुरो को ठीक कराने में उसपर गाज गिरती थी। यह काम अब अधिक देर तक न स्थगित किया जा सकता था, क्योकि उसके खुर बहुत बढ गये थे, सडने भी लगे थे। अगर वह जगल में ही आज़ाद रहता, तो उसे यह सब झमेले न करने पडते, क्योकि वहा वह इतना दौडता फिरता कि खुर घिस-घिसाकर अपने-आप ही कायदे में रहते। पर ज़ेबरे पकड लिये जाते है, तो उन्हें दौडने का मौका कहा मिलता है, और अगर मिलता भी है तो सिर्फ मुलायम धरती पर ही।

मैंने तीन लुहार बुलाये, अगस्त को उन्हें दिखलाया। और उसकी बदमिज़ाजी से उन्हें आगाह कर दिया। लेकिन वे यह सुनकर ज़रा भी घबराये नही और उन्होने उसके खुर ठीक करने का पूरा आश्वासन दिया। पहले हमने उसे दीवाल से बाध दिया। अगस्त बहुत चीखा-चिल्लाया, पर, इन तीन बहादुर जवानो ने चतुराई से अपना 'आपरेशन' चालू कर ही दिया। खुर ठीक करने के बाद एक कारीगर ने यह सोचकर कि अब वह शात है, एक ओर से रस्सी खोल दी। अगर्चे अभी भी वह एक ओर से बधा हुआ था, उसने इस आधी आजादी से भी पूरा लाभ उठाया। उसने उछलकर उस भले लोहार पर हमला कर दिया। उसे दे मारा और उसकी

छाती पर चढ वैठा। भाग्य से क्रुद्ध अगस्त उसे काटने न पाया, क्योंकि उसका सिर तो अभी भी रस्सी से वधा हुआ था। यह सब माजरा मेरे अनजाने में हुआ। जैसे ही मुझे पता लगा, हम सबने दौडकर उसे अगस्त के नीचे से घसीट लिया। अगस्त अभी भी जोश में था। हैरानी की वात यह हुई कि लोहार के खरोच भी न आयी। उसके साथी और अचरज में पड गये, और कहने लगे – इतना 'छोटा-सा घोडा', और ऐसा आफत का परकाला! अगस्त की ऊचाई ४ फुट ४ इच थी।

वाद में मुझे और ज़ेबरे न मिल सके, इसलिए मुझे अगस्त, लास्का और शुतुर्मुर्गों से ही काम चलाना पडा। यह खेल तमारा के ज़िम्मे था।

एक शुतुर्मुर्ग रथ मे जोता जाता, और यह रथ मेरी ६ साल की वेटी वाल्या हाकती। तव मलीश नामक टट्टू अखाडे मे लाया जाता। जैसे ही वाल्या अपनी सवारी समाप्त करती, तैसे ही वह उसे उपहार स्वरूप पेश किया जाता। और जैसे ही वह इस खिलौने नुमा टट्टू की लगाम सभालती कि वह जाग पडता। फिर वाल्या उसे छकडे पर चढा लेती, और यह 'खिलौना' वापिस चला जाता। यह काफी मनोरजक प्रदर्शन रहा।

शुतुर्मुर्गों से भी हम कई मज़ाकिया खेल करवाया करते, लेकिन पहले मै इनके वारो से वचाव की चर्चा करना चाहूगा।

यह वडा वलिष्ट पक्षी होता है। विशेषकर, इसके पैर वडे ताकतवर होते है, यह दुश्मन पर प्राय पैरो से ही वार करता है। पर, पहले अपने दुश्मन का ध्यान वटाने के लिए यह अपनी लवी गर्दन निकाल, चोच खोलता है और वत्तख की तरह आवाज़ निकालता है। स्वभावतया विपक्षी इसकी चोच से अपनी जान वचाने की कोशिश करता है। वस, तभी यह पछी टगडी मार कर उसे गिरा देता हे। शुतुर्मुर्ग के पैर मे तीन उगलिया होती है और उनमें वडे वडे नाखून होते है, जिनमे काफी चोट पहुच सकती है।

यह सारा ज्ञान मुझे काफी महगे दामो मिला। उसकी चोच के प्रहारो से मुझे यह विश्वास हो गया कि चोच की वजाय इसके पजो से रक्षा करने का प्रश्न मेरे आगे था। एक वार एक शुतुर्मुर्ग ने मुझपर हमला किया कि मैंने उसकी गर्दन पकड ली। गर्दन पकडते ही वह ढीला पड गया—अपने नाखूनो से हमला करने के वजाय वह भाग खडा हुआ और मैदान में चारो ओर चक्कर काटने लगा। पर, थोडी देर वाद उसने मुझपर फिर वार कर दिया, पर अव की मैंने अपना हाथ फिर वढाया, और वह फिर भाग खडा हुआ। इससे शुतुर्मुर्गों ने हमपर वार करना तो न छोडा, पर हमारा वचाव का तरीका ज़रूर कामयाब रहा।

एक दिन जब मै तीनो शुतुर्मुर्गों के साथ रिहर्सल कर रहा था, तो इनमें से एक जरा शरारत करने लगा। वस, मैंने अपना हाथ आगे वढाया। मै जानता था, यह वडा अनुभव सिद्ध उपाय है। वास्तव में वह फौरन हट गया, पर अव की वार दूसरो ने हमला कर दिया। मै उन दोनो को खदेड ही रहा था कि मेरे कानो मे तमारा की आवाज आयी "लूस्या पीछे!" मुडकर क्या देखता हू कि पहलेवाला शुतुर्मुर्ग अव मुझपर पीछे से वार करने की सोच रहा है। मैंने आगे के दोनो शुतुर्मुर्गों की गर्दने पकड ली, और पीछे के शुतुर्मुर्ग को कसकर एक लात जमायी। यह सारी वाते सधाने-वाले को आत्म-रक्षा के प्रयासो से आती है।

इसपर भी लूस्या ने उछलकर अपने पजे से मेरा कोट ऊपर से नीचे तक फाड डाला, जिससे मेरी पीठ पर खरोच आ गयी। मेरी लात से यह अखाडे मे पडी एक टव से टकरा कर गिर पडा। टुकडे टुकडे उड गये और आवाज़ हुई ऊपर से वेचारे टव की शामत आ गयी। अव तीनो हमलावर डर गये, और अपनी लवी गर्दने निकाले हुए जान छोडकर वेतहाशा भागे। भागते भागते उन्होने कई और टव भी गिरा दिये, जिससे और शोर-गुल मच गया। ये और भी भयभीत हो गये। तमारा और हम सव खूब हसे।

मै अखाडे मे खडा इतजार करता रहा कि कब वे शात होते है। जब वे शात हो गये, तो मैने कपड बदले और रिहर्सल फिर शुरू कर दिया।

जब मुझे अपने चीते दूसरो को देने पडे तो शुतुर्मुर्ग और ज़ेबरे भी मैने दे दिये। क्योकि अब मै उन्हे ट्रेन न कर सकता था। मुझे तो एक और बडा काम हाथ में लेना था—यानी, जगली भूरे रीछो के एक दस्ते को ट्रेनिग देना। मलीश टट्टू मैने न० मकेविच नाम की एक घोडा-ट्रेनर को दे दिया। अगस्त को रीगा के चिडियाघर में भेज दिया, और जेबरा लास्का और रथ खीचनेवाला शुतुर्मुर्ग पेत्का को प्रसिद्ध पशु-मास्टर व्लादिमीर दुरोव के हवाले कर दिया। बाकी शुतुर्मुर्गो को अलग अलग चिडियाघरो में भेज दिया।

हाथी

हाथियो से मेरी पहली पहिचान सन् १६२६ में हुई। उन दिनो हम लोग दोनवास प्रदेश में स्थित शाख्ती शहर में सरकस कर रहे थे। मेरे साथी अनतोली दुरोव ने मुझे लेनिनग्राद जाने और विदेश से आये जानवरो के एक दल को लाने की बात कही।

इस दल मे चीते, वदर आदि तो थे ही, पर उसमें सबसे दिलचस्प जानवर था—हाथी मैक्स। आज भी यह हाथी व्लादिमीर दुरोव के दल का सदस्य है। व्लादिमीर दुरोव अनतोली दुरोव के भतीजे है। मैक्स महोदय एक बहुत बडे कटघरे में तशरीफ लाये। विदेश से आये गये फीलवान की मदद से हमने हाथी को मालगाडी में लादा।

सरकस का साथी, मिल्वा, और मै रास्ते भर इन जानवरो की खातिर तवाज़ा करते रहे।

पहले ही दिन मैक्स के लिए हमें चार बडी बडी बाल्टिया जल की लानी पडी। उसकी ख़ातिरदारी करने, और दौड-धूप के कारण हम थककर चूर हो गये। और वही उसी गाडी में घास-फूस पर हमारी आख लग

गयी। पर थोडी ही देर में कर्णभेदी चिघाड और जल की फुहार से हमारी नीद खुल गयी। हम आश्चर्य में पड गये, और गाडी के बाहर आ गये।

वात यह हुई कि मैक्स महाशय ने गर्मी से घबराकर एक बाल्टी पानी अपनी सूड से सोख लिया, और फिर अपना शरीर शीतल करने के लिए अपने ऊपर बरसाया कि तेज़ फुहार से गाडी की छत तक गीली हो गयी। स्पष्ट था, यह महाशय 'फुहारा-स्नान' करना चाहते थे।

यह यात्रा बडी मज़ेदार रही। एक दिन सुबह उठते ही हमने देखा कि मेरा एक जूता और मिल्वा की जाकेट दोनो गायब है। हुआ यह कि हाथी राम को भोर होते ही भूख लग गयी और उन्होने जूते और जाकेट का कलेवा कर डाला!

हाथी के डिब्बे में हमें बारह दिन गुजारने पडे। इस लिए हमें हाथी को समझने-बूझने का अच्छा अवसर मिल गया।

मुझे यह वात बडी अजब लगी कि हाथी को अपने भारीपन का सदा आभास रहता है। मैक्स साहब ने जहाज़ के गलियारे से निकलते समय हर एक तख्ते को बडे गौर से अपने अगले पैरो और सूड से टटोल कर देखा। उसे विश्वास हो गया कि तख्ते टूटेंगे नही, तो भी बडी सावधानी से धीरे धीरे वह जहाज़ से उतरा। अगर उसे सदेह हो जाता कि तख्ते कमजोर है तो वह टस से मस न होता।

एक बार हाथियो का एक दल जहाज-यात्रा के लिए गोर्की के बदरगाह पर लाया गया। हाथियो को शक हो गया कि जहाज़ का गलियारा कमजोर है। बस, हाथियो ने जहाज पर कदम रखने से इन्कार कर दिया। आखिरकार, सरकस के अधिकारियो को उन्हे रेल से भेजना पडा।

रिहर्सल के समय भी हाथी इसी तरह की सावधानी बरतते। टब पर चढने से पहले हर हाथी उसकी कमजोरी-मज़बूती समझ लेता। नीचे जमीन पर लोटे हुए आदमी के ऊपर हाथी बहुत ही सावधानी से कदम रखता है।

हाथी बडा स्नेही जीव है, और मुझे उसकी सच्ची दोस्ती सदा भाती

है। हाथी अभिन्न मित्र होता है। यदि बाकी हाथी मैदान में ले जाये जाते, और एक हाथी रिहर्सल के समय अस्तबल मे छोड दिया जाता, तो वह चिघाड चिघाडकर धरती सिर पर उठा लेता। आखिर, उसे अखाडे मे ले जाना ही पडता। और वह अपने साथियो को देखते ही शात हो जाता।

यदि किसी हाथी को मिले-जुले दल मे अन्य पशुओ के साथ खेल करना पड जाता है तो वह अपना एक 'दोस्त' चुन लेता है—चाहे ऊट, चाहे गधा और चाहे टट्टू। मज़ा यह है कि बाद में रिंग-मास्टर को दोनो को एक साथ रखना ही पडता है।

दुरोव के एक हाथी ने इसी तरह की दोस्ती दस साल पाली। दोस्त था एक ऊट। दोनो सदा साथ रहते। अगर कभी हाथीराम अकेले ही खेल करते, तो ऊट को उनके करीब रखना ही पडता। जब कभी यह दोनो साथ साथ सडक पर निकलते, तो हाथीराम ऊट राज के पीछे पीछे रहते और उसकी दुम अपनी सूड से उठाये चलते।

ऊट बीमार पडा और मर गया। अब मुसीबत खडी हो गयी। हाथी ने किसी को अपने मित्र की लाश के पास दो दिन तक फटकने नही दिया।

इतना बलवान होने पर भी हाथी बडा ही भीरु जानवर होता है। ज़रा-सी भी कोई बात अचानक हो जाय, हाथीराम के होश फाख्ता हो जाते है केवल अपने उस्ताद या महावत पर ही भरोसा रखने से वे शान्त होते है।

हाथी की स्मरणशक्ति बडी प्रबल होती है, और यह भली-बुरी बात खूब याद रखता है। मसलन, ब० ब्रूत्सी ने मुझे एक हाथी का किस्सा सुनाया। इस हाथी की यह आदत थी कि जो कोई उसे स्वादिष्ट वस्तु खाने को देता, उसीको वह अपनी सूड की सवारी देता। सवारी के बाद उसे अवश्य कुछ खाने को मिल जाता। एक बार, फेर्नन्देस नामक मसख़रे ने हाथी की दो दफा चड्ढी तो गाठ ली, मगर मेहनताना गोल कर दिया। नाराज़ हाथी ने उठाकर उसे हवा मे नचाया और ज़मीन पर दे पटका। यह था उसका बदला लेने का तरीका।

उदाहरण के लिए बेबी नाम की एक हथिनी की चर्चा कर दू। यह एक ऐसे दल की सदस्या थी जिसका ट्रेनर एक विदेशी था। इस हथिनी का एक रखवाला था। वह अपने दुष्ट स्वभाव और दुर्व्यवहार के लिए बरखास्त कर दिया गया था। बाद मे यह आदमी एक जादूगर का असिस्टेंट बन गया। दो साल बाद उसे मास्को आने का इत्तिफाक हुआ। उन दिनो हाथियो का यह दल मास्को सरकस में काम कर रहा था। जब इसे पता लगा तो इसने अपने पुराने साथियो को देखने का इरादा किया। अस्तबल में जाकर वह वही पुराने रूखे ढग से हाथियो पर रोब जमाने लगा। बेबी उसे फौरन पहचान गयी, और लगी पैर पटकने और अपने पुराने शत्रु को घूरने। जब सायकाल को खेल खत्म हो गया, तो इस व्यक्ति ने रात वही अस्तबल में गुज़ारने की सोची।

रात भर बेबी बेचैन रही, और ज़जीर तोडती रही। अत में उसने खूटो को ही ज़मीन से उखाड लिया। छूटते के साथ ही वह अपने पुराने दुश्मन के पास पहुच गयी, और उसे सूड में लपेट दीवाल में इस ज़ोर से दे मारा कि तुरत ही उसका दम निकल गया। बात यही खत्म न हुई। उसने उसे पैरो से रौंद डाला।

बाकी सब हाथी इस हत्यारिन को सवेदना की दृष्टि से देखते रहे। चौकीदार दौडकर हाथी-मास्टर को बुला लाया। उसके सधानेवाले ने जब मृत व्यक्ति की लाश उठानी चाही, तो बेबी लाश पर लेट गयी, और उसने लाश न उठाने दी।

तब उसके मास्टर ने एक उपाय किया। पाच बोतल वोदका, और पाच बोतल हल्की शराब, बाल्टी में डाली। उसमे कई किलोग्राम चीनी मिलायी, गर्म काढा बनाया, और बाल्टी इस बेबी के आगे कर दी।

वह सब गटागट पी गयी, और तुरन्त सो गयी। और सोयी भी पूरा दिन, पूरी रात। इसी बीच लाश वहा से उठा ली गयी।

सधानवाले ने वताया कि वेवी को शराव पिलाना ज़रूरी था, क्योकि एक तो उसके कब्ज़े से लाश के निकालने का यही तरीका था, दूसरे, इन्सान की जान लेने की बात भूलने के लिए भी उसका सोना जरूरी था।

दूसरी ओर, मैं ऐसी अनेक घटनाए जानता हू जिनसे हाथी की वफादारी का स्पष्ट पता चलता है। हाथी अपने उपकारी को कभी नही भूलता।

स्थायी या सफरी चिडियाघरो में हाथियो के विशेष रखवाले होते है। मुझे याद है, एक सफरी चिडियाघर में, रखवाला अपने हाथी से माता के समान स्नेह रखता था। वह उसे वडे प्रेम से नहलाता-धुलाता, खिलाता और उसकी इतनी चिता करता, कि हाथी भी उसपर जान देता। वह प्राय अपने रखवाले को अपनी सूड मे लपेट लेता, और अपने ढग से दुलराता।

कई बार मैंने रखवाले को हाथी के पास सोते देखा। और किस प्यार से हाथी उसकी हिफाजत करता, यहा तक कि अपने भारी भरकम शरीर को भी वडे आहिस्ता से हिलाता-डुलाता।

द्वितीय विश्व युद्ध के आरभ होने पर, यह रखवाला फौज मे भर्ती हो गया। उस समय जिस दर्द से यह एक दूसरे से विदा हुए, उसे देखकर किसी का भी कलेजा फट जाता।

यह हाथी चिडियाघर में काम करनेवाली एक औरत को सौप दिया गया। वेचारा वहुत समय तक परेशान रहा। यदि वह उसे प्यार से पुकारती, तो हाथी इस तरह से अपने कान सीधे कर लेता, जैसे कि वह अपने पुराने साथी की आवाज़ सुनने की प्रतीक्षा में हो।

दो साल गुज़र गये। पुराना रखवाला फौज से मुक्त हो गया। उसने सबसे पहले अपने पुराने चिडियाघर और प्यारे हाथी का पता लगाने की कोशिश की। वह अपना पुराना धधा फिर शुरु करना चाहता था। अता-पता लगाकर जब आखिरकार, वह वहा पहुचा और उसने हाथी देखा, तो दूर पर रुक गया। वह सोचने लगा कि शायद हाथी उसे इस

वाल्या और तमारा एदर एक प्रोग्राम करते हुए

वाल्या एदर श्रौर टट्टू
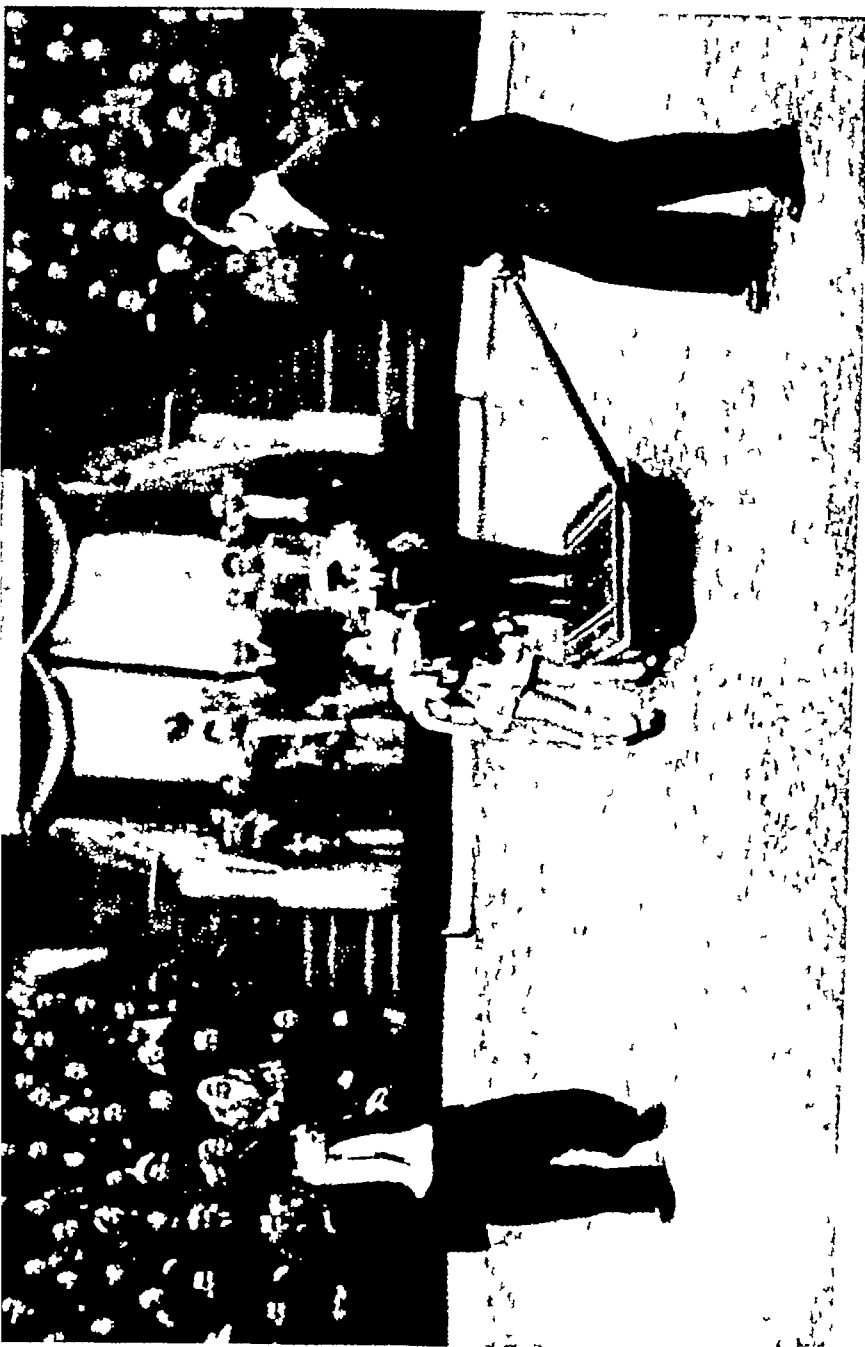
बोरिस एदर, 'चीतों की रानी' फिल्म के लिए पुर्श को ट्रेनिंग दे रहे हैं

यह भी उसी फिल्म की ट्रेनिंग है

अरसे में भूल चुका हो। पर, हाथी उसे दूर से ही ताड गया, और उसने सहसा ही सास खीचकर चिघाड से अपने मित्र का स्वागत किया। उसने अपने पुराने दोस्त को अपनी तरफ खीच लिया, और लगा चिघाडने और अन्य प्रकार से प्रेम प्रदर्शित करने। इस जुदाई से उन दोनो की मैत्री और भी प्रगाढ हो गयी।

मैं हाथियो के भीरु स्वभाव की चर्चा पहले ही कर चुका हू। शायद पाठको को यह जानकर मज़ा आयेगा कि जब हाथियो का झुड आराम करता है, तो एक हाथी पहरा देता रहता है। हाथियो की नीद बड़ी हल्की होती है। पहरेदार भी बदलते रहते है।

चिडियाघरो में जानेवालो ने यह देखा होगा कि लोग अक्सर हाथियो को फल आदि प्रेम से खिलाते है। कई बार लोग उन्हे खाने की बजाय नकद पैसा ही देते है। हाथीराम शान से यह भेंट स्वीकार करते है और अपने महावत की ओर बढा देते है कि ज़रा एक गाजर ला देना। सरकस के कितने ही करतबो का आधार हाथी का यही स्वभाव होता है।

अन्य वन्य पशुओ की भाति हाथियो की भी एक खतरनाक अवस्था आती है, जब उनके स्वभाव मे बुरे परिवर्तन दृष्टिगोचर होने लगते है। ऐसे समय में यह अपने असीम बल का दुरुपयोग करने लगते है। औरो की तो क्या, कभी कभी तो यह अपने महावतो के खिलाफ ही बगावत कर बैठते है।

हाथियो को सधानेवाले, अ० करनीलोव नामक एक व्यक्ति को एक बार ऐसी ही कठिनाई का सामना करना पडा। उसके दल का एक हाथी, जो वैसे बडा विनम्र और आज्ञाकारी था, सहसा ही बिल्कुल हाथ से बेहाथ हो गया। इस बीच दुष्ट पशु ने दो बार अपने मास्टर पर ही हमला कर दिया। सधानेवाले ने यह हाथी अलग कर दिया और इसे रीगा के चिडियाघर मे पक्के लोहे के कटघरे में बद कर दिया गया। तब, इसमे हानि की क्या आशका?

मै अपनी ट्रेनिग-प्रणाली के बारे मे काफी कह चुका हू। मैने कभी अपने पशुओ के साथ बुरा बर्ताव नही किया।

यह सच है कि मुझे भी उन्हें कभी कभी ताडना देनी पडी है। मैने भी उन्हें कोडे या हटर लगाये है—उन्हें कष्ट पहुचाने के लिए नही, बल्कि यह समझाने के लिए कि जो व्यवहार वे कर रहे है, वह ठीक नही है। यदि मै अपने जानवरो को तकलीफ पहुचाना चाहता तो घने रोए वाले सफेद या भूरे रीछ को किसी लोहे की छड या ज़जीर से मारता। बेत या चाबुक का भला उनपर क्या असर होता?

सधानेवाले को कडा अवश्य होना चाहिए, पर बेरहम कभी भी नही। वह मेहरबान हो, पर इतना मेहरबान भी नही कि जानवर उसकी अवज्ञा करने लगें या अपनी मन-मानी करना शुरू कर दें।

खेल के समय मै प्राय उनके कटघरो मे भी निश्चितता से घुस जाता, और अपने कई चेलो की ओर तो बेफिक्री से पीठ भी कर लेता। मै कह सकता हू कि मेरे सामने जानवर भी बडी बेफिक्री से करतब करते, अपनी अपनी जगहो पर शाति से बैठे रहते या हवाई करतबो के दौरान मे बडे मजे में लोगो को देखते रहते, जैसे कि उन्हे किसी प्रकार का भय या सकोच न हो।

जानवरो के साथ काम करनेवाले इस पुस्तक के हर पाठक से मै यह कहूगा कि यदि वह अपने जानवरो के साथ सख्ती बरतने का आदी है, तो अपनी कार्य-प्रणाली पर पुन विचार कर ले। मुझे बडा सतोप होगा यदि यह पढकर लोग अपने पुराने तौर-तरीके बदल लें। मुझे विश्वास है कि अब वह दिन दूर नही, जब सरकसी दुनिया मे कोई ज़ालिम न रहेगा।

खेल के दौरान में मेरी इच्छा-शक्ति और स्नायु-शक्ति की कडी परीक्षा होती थी, तो भी मै प्रकट रूप में सदा शात और सयम रहता। यहा तक कि मैं हसी-मज़ाक भी जारी रखता था। मेरे विचार मे सरकस का यही सबसे अच्छा तरीका है।

अपना ज्ञान दूसरो को प्रदान करने में मुझे सदा प्रसन्नता ही हुई है। मेरी पत्नी, तमारा – मेरी सर्वप्रथम शिष्या थी। सन् १९३७ तक वह हवाई जिमनास्टिक ही किया करती थी। पहले मैंने तमारा को इस नये धधे के बारे में मोटी मोटी बाते बतानी शुरू की। मै उसे बाकायदा समझाया करता कि जानवरो को सधाने के काम में क्या क्या कठिनाइया आती है, कैसे कैसे खतरे उठाने पडते है, और कितना शारीरिक श्रम करना पडता है। जब मुझे विश्वास हो गया कि इस नये धधे के लिए वह मानसिक रूप से तैयार हो गयी है, तब ही मैंने उसे असली सबक देना शुरू किया।

जानवरो के साथ कैसे व्यवहार करना चाहिए, उनके कटघरो मे कैसे जाना चाहिए और सधाने के अपने तरीके – यह सब मैंने तमारा को धीरे धीरे समझा दिये। फिर बाद मे मैंने उसे असली काम करने को दिये।

शेर के बच्चो को सधाने के बाद वह सयाने शेरो को सधाने का काम करने लगी। कई बार जब किसी शैतान शेर से मेरी मुठभेड हो जाती तो मै तमारा को अपनी मदद के लिए सिर्फ इस लिए बुलाता कि देखे, इसमें कितनी इच्छा-शक्ति है।

सोवियत सरकस के इतिहास में तमारा प्रथम स्त्री है जिसने जगली जानवर साधे है। बाद में वह मेरी मुख्य सहायिका बन गयी और मेरे प्रोग्राम मे स्वतत्र रूप से भाग लेने लगी।

तमारा के साथ रिहर्सल करते समय मैंने प्राय एक खास तरीका बरता, जो मैंने अपनी जवानी के दिनो में विमान-चालक की ट्रेनिग लेते समय सीखा था। एक दिन प्रारभिक पाठ के समाप्त होने पर, मेरे शिक्षक ने मुझसे कहा कि देखो, कल तुम्हे हवाई जहाज़ चलाना है।

इस चिन्ता मे मुझे रात भर नींद न आयी। मै बिस्तर पर करवटे बदलता रहा। दूसरे दिन सुबह मै समय से पहले हवाई अड्डे पर पहुच गया, और लगा आदेश की प्रतीक्षा करने। पर व्यर्थ, मेरे उस्ताद ने शायद यह सोचकर कि जोश की हालत में मैं काम बिगाड बैठूगा, मुझे उस दिन कोई

भी हुक्म नही दिया। पर, एक सप्ताह के बाद मेरे शिक्षक ने एक दिन सहसा मुझसे कहा

"जहाज़ में बैठो, और उड जाओ।" मै उनकी उस युक्ति के लिए उनका कृतज्ञ हू कि मुझे व्यग्र होने का भी समय न मिला, और पूरे मनोयोग से मै अपने काम में लग गया।

इसी युक्ति का प्रयोग मैने अपने शिष्यो के मामले में किया है। यकायक, मै उन्हे जानवरो के कटघरो में जाने का आदेश दे देता और उन्हे सोचने का मौका ही न देता।

सरकसी ज़िदगी से रिटायर होने के पहिले मैने कितने ही योग्य पशु-शिक्षक तैयार कर दिये। मेरा प्रमुख शिष्य, सम्मानित कलाकार न० ग्लदीलश्चिकोव है। सम्मानित कलाकार अ० अलेक्सान्द्रोव कई बरसो तक तेंदुओ के दल के साथ काम करने के बाद आज-कल चीतो के साथ खेल करता है। और पुराने रूसी सरकसी परिवार के सदस्य सम्मानित कलाकार व० फिलातोव ने भूरे रीछो का एक खास प्रोग्राम तैयार किया है। सम्मानित कलाकार अ० करनीलोव, शायद हमारा सबसे अच्छा हाथियो को सधाने-वाला है। लेकिन मै समझता हू कि इरीना बुग्रीमोवा और इवान रूबान के दो नाम विशेषतया उल्लेखनीय है। इन्होने पशुओ को सधाने मे विशेष योग्यता प्रदर्शित की है। कह सकते है कि ये पशु-सधाने की सोवियत कार्य-प्रणाली के विशिष्ट प्रतिनिधि है।

इरीना बुग्रीमोवा कोई खादानी सरकस कलाकार नही है। उसका पिता पशु-डॉक्टर था। इरीना को बचपन मे खेल-कूद का शौक था। गर्मियो में वह नेजा, चक्कर या गोला फेकने का अभ्यास करती और सर्दियो मे स्केटिग करती। इस प्रकार, इरीना, खेल-कूद की दुनिया मे सीधी सरकस के ससार में आयी। सरकस में उसके पहले खेल का नाम पडा 'उडने-वाली स्लेज'। यह लडकी सरकस की छत जितने ऊचे एक कृत्रिम पहाड से राकेट की तरह उडकर नीचे आती, अपने स्लेज पर एक घूमते हुए

चक्कर में से गुजरने के बाद एक खास गद्देदार प्लेटफार्म पर टिक जाती। इस रोमाचकारी खेल से उसे भविष्य मे शेरो से खेलने की प्रेरणा मिली।

शायद सरकस के कई शौकीनो को उसके खेल याद होगे। फौजी जाकेट और मृगछाल पहने एक सुदर स्त्री अखाडे में उतरती है। उसमे नारी सुलभ लावण्य और पुरुपोचित साहस और शक्ति का अद्भुत समन्वय है। उसके शेर वास्तव मे वनराज लगते है। इस पर भी इरीना ने जो खतरे मोल लिये है, उनका ढिढोरा कभी नही पीटा है। उसका एक तमाशा है—सरकस की छत के नीचे शेर के साथ झूलना। दूसरा तमाशा शेरो का 'जिदा कालीन' है। उसके शेर पेचीदा पिरामिड बनाते है, वाधाए पार करते है, और अपनी मल्का के हाथ और मुह से गोश्त के टुकडे लेते है। उसका एक शेर घोडे की सवारी करता है। इरीना वुग्रीमोवा अपने काम से कभी सतुष्ट नही होती। वह नये से नये और रोमाचकारी मे रोमाचकारी खेल करना चाहती है।

ईवान रूवान कभी एक खान मजदूर था। लेकिन उसका पशु-प्रेम उसे सरकस की दुनिया मे खीच लाया। एक चौकीदार की हैसियत से तरक्की करते करते वह पशु-ट्रेनर हो गया। उसकी टोली मे शेर, रीछ तथा वडे वडे कुत्ते है। उसका मुख्य कलावाज पताप नाम का रीछ है। रूवान उसके साथ वाल्ज नाचता और उसपर सवारी करता है। बाकी रीछ चक्कर-हिडोले पर सैर करते है। इसे अपने दातो और अगले पजो से पकडे रहते है। रूवान रूसी पोशाक पहनकर तमाशा करता है। रेशमी कमीज, ढीला पाजामा, और घुटनो तक के वूट—ये उसके मजाकिया पार्ट मे खूब सजते है। वैसे भी यह रूसी भाटो की रिवाजी पोशाक है।

मेरा आखिरी काम भूरे रीछो को सधाना था। ज्यू ज्यू मेरी उम्र वढती गयी, मै अखाडे से दूर होता गया। अब मेरे सिर्फ दो काम रह गये नये नये जानवरो की टोलिया बनाना और उनके लिए ट्रेनर तैयार करना।

मैंने कितने ही तजुर्बे किये—पशुओ को सिखाने-सधाने के नये नये तरीको की खोज की और तरह तरह के जानवरो की एक ही मडली बनायी। मेरी एक ही तमन्ना थी कि कैसे उन जानवरो को, जो कभी सरकस के अखाडे में नही आये, सरकस के योग्य बनाया जाय। अपनी सरकसी ज़िदगी पर निगाह डालकर मै सदा यह जानने की कोशिश करता रहा हू कि मेरे पशुओ को सधाने के कौन-से तरीके सही है और कौन-से गलत। मेरी इच्छा थी कि मै एक बार फिर अपने शेर-मित्रो के सम्पर्क में आऊ, और अपने सचित-अनुभवो से फायदा उठाऊ। यदि अब भी मै सरकस में सक्रिय रूप से भाग लेता रहता, और पहले की तरह सरकसो के साथ शहर शहर भटकता रहता, तो यह कार्य मेरे लिए असभव हो जाता। आखिर, मै सारा चिडियाघर तो साथ साथ लिये नही घूम सकता था। ऐसी स्थिति में मै उन जानवरो का उचित ध्यान न रख पाता। यही कारण है कि मैंने सरकस से बिदा ले ली। यह फैसला मेरे लिए आसान न था। अपने जीवन के चालीस साल मैं सरकस में खपा चुका था। मैंने अपनी पत्नी, अपने मित्रो और स्वय अपनी आत्मा से इस विषय में परामर्श लिया। आखिर वह दिन आ ही गया, जिस दिन मैंने सरकस को हाथ जोड लिये। अपने दोस्त—भूरे रीछ मैंने एल्वोर्ती नाम की अभिनेत्री को दे दिये।

लबा अर्सा हुआ कि सफेद रीछो का एक दल मैंने उसके पिता म० एल्वोर्ती को भेंट किया था।

मै मास्को में आकर बस गया और सरकस-बोर्ड में प्रोड्यूसर की हैसियत मे काम करने लगा। मेरी भावी योजनाए क्या है? मै पहले ही कह चुका हू—१० शेरो की एक नयी मडली को ट्रेनिग देने की अब भी मेरी अभिलाषा है। .सके बाद मै बाघो को भी सधाना चाहता हू। बाघ सुदर, आकर्षक और फुर्तीला जानवर होता है। इसे एक किस्म का बडा बिल्ला ही समझिये। आज तक यह कभी सरकस के अखाडे में

उतरा भी नही। यही कारण है कि इस काम की ओर मेरा दिल और भी अधिक खिचता है।

मै वदरो के साथ काम करना चाहता हू—विशेष रूप से वनमानुषो के साथ। मुझे विश्वास है कि इस क्षेत्र में वडी अनजानी सभावनाए हैं। यही नही, जगली और पालतू जानवरो की एक मिलवा-टोली तैयार करने की भी मेरी कामना है।

और फिर, इस खतरनाक काम को करनेवाले सोवियत जवानो की ट्रेनिग की समस्या भी सदा आगे रहती है।

जानवर सधानेवालो में मै कौन-से गुण आवश्यक समझता हू?

सब से पहले, उनमें पशु-प्रेम, और पशुओ को समझने की क्षमता होनी चाहिए। उन्हे अनुभवो के आदान-प्रदान में कभी सकोच नही करना चाहिए, और सदा निष्कर्ष निकालते रहना चाहिए। दूसरा गुण, जो उनमे आवश्यक है, वह है, अदम्य साहस, यानी वह साहस जिसका आधार पशुओ का विस्तृत ज्ञान और प्रेम है। तीसरे, इस काम के करने-वाले को सुशिक्षित होना चाहिए, ताकि वह प्रसिद्ध रूसी शरीर-वैज्ञानिक ईवान पावलोव के सिद्धातो के अनुसार काम कर सके। पशु-ट्रेनर को स्वस्थ और वलवान तो होना ही चाहिए, क्योंकि उसे हर आये दिन शेर, चीते और रीछो से लडना पडेगा। इसके अतिरिक्त उसे शात, गभीर, धीर और सूझ-वूझ का आदमी होना चाहिए।

ट्रेनर मे तमाशानुमाई का माद्दा भी जरूरी है। उसकी कल्पना-शक्ति जागृत होनी चाहिए, नही तो, वह नित नये प्रोग्राम न दिखा सकेगा। सक्षेप मे, उसे कलाकार और विज्ञापक का मिला-जुला रूप होना चाहिए।

यह स्पष्ट है कि इस काम के लिए आगे आनेवालो मे यह सारे गुण कठिनाई से ही मिलेंगे। लेकिन, हमारे सरकसी क्षेत्र में प्रतिभा और योग्यता

की कमी नही है। हमारे तरुणो को अपने काम से प्यार होना चाहिए, और हमारे सरकसी जवान निश्चय ही अपने काम से प्यार करते है।

शेर, चीते, तेंदुए, ज़ेबरे, शुतुर्मुर्ग, भूरे और सफेद रीछ—ये थे मेरे पशु-मित्र! यानी, मेरा परिवार काफी बडा रहा है। मुझे अपने पारिवारिको से अति स्नेह रहा है। ठीक है, उन्होने कभी कभी शरारते भी की है। भला बताइये तो, किस परिवार में शरारती बच्चे नही होते? मुख्य बात तो वह आनद और आत्म-सतोष है जो एक पिता को अपने बच्चो को बढते, फलते-फूलते देख कर होता है। मै कह सकता हू कि यह आनद और यह गौरव मुझे भी प्राप्त हुआ है।

मेरा जीवन घटनाओ और खुशियो से भरपूर रहा है, यद्यपि काटे भी कम नही चुभे है। लेकिन, आप विश्वास कीजिये, यदि आज मुझे अपना जीवन नये सिरे से आरभ करने का मौका मिले, तो मै फिर जगली जानवरो से ही श्रीगणेश करना पसद करूगा।